सेवा का संकल्प

रूही संस्थान

पुस्तक 2

सेवा का संकल्प

रूही संस्थान

श्रृंखला की पुस्तकें :

रूही संस्थान द्वारा विकसित इस श्रंखला की वर्तमान पुस्तकों की सूची नीचे दी गई है। इन पुस्तकों का उददेश्य युवाओं व व्यस्कों द्वारा अपने समुदायों की सेवा करने की क्षमता बढ़ाने के क्रमबद्ध प्रयासों में पाठयक्रम की मुख्य धारा में उपयोग किया जाना है। रूही संस्थान इस श्रंखला की तीसरी पुस्तक जो बहाई बच्चों की कक्षा के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने से संबधिंत है, की शाखा के रूप में एक अन्य पाठयक्रम भी विकसित कर रहा है और इसे इस सूची में इंगित भी किया गया है। यह तथ्य ध्यान में रहे कि सूची में क्षेत्र में हुये विकास के अनुभवों के आधार पर बदलाव भी होगा। इसमें नई पुस्तकों को सम्मिलित किया जायेगा जब पाठयचर्या संबंधी तत्व विकसित होकर ऐसे स्तर पर पहॅुच जायेंगे जब उन्हें वृहद स्तर पर उपलब्ध कराया जा सके।

पुस्तक 1	दिव्य जीवन : एक चिन्तन
पुस्तक 2	सेवा का संकल्प
पुस्तक 3	बच्चों की कक्षायें, ग्रेड 1
	बच्चों की कक्षायें, ग्रेड 2 (शाखा पाठयक्रम)
	बच्चों की कक्षायें, ग्रेड 3 (शाखा पाठयक्रम)
	बच्चों की कक्षायें, ग्रेड 4 (शाखा पाठयक्रम)
पुस्तक 4	युगल अवतार
पुस्तक 5	किशोर ऊर्जा को उजागर करना
	आरंभिक संवेग : पुस्तक 5 का प्रथम शाखा पाठ्यक्रम
	बढ़ता दायरा : पुस्तक 5 का दूसरा शाखा पाठ्यक्रम
पुस्तक 6	प्रभुधर्म का शिक्षण
पुस्तक 7	सेवा के पथ पर साथ–साथ चलना
पुस्तक 8	बहाउल्लाह की संविदा
पुस्तक 9	एक ऐतिहासिक परिदृश्य प्राप्त करना
पुस्तक 10	जीवंत समुदायों का निर्माण
पुस्तक 11	भौतिक साधन
पुस्तक 12	परिवार एवं समुदाय
पुस्तक 13	सामाजिक क्रिया में शामिल होना
पुस्तक 14	जनसंवाद में भागीदरी

कॉपीराईट © 1997, 2021 रूही फाउंडेशन, कोलंबिया
सर्वाधिकार सुरक्षित। संस्करण 1.1.1.PE प्रकाशित जनवरी 1997
संस्करण 2.1.1.PE.PV (अनंतिम अनुवाद) जून 2021
ISBN 978-958-53332-1-5

Levantémonos a servir के रूप में स्पेनिश में मूल प्रकाशन
कॉपीराईट © 1987, 1996, 2020 रूही फाउंडेशन, कोलंबिया
ISBN 978-958-52941-0-3

रूही संस्थान
काली, कोलंबिया
ई–मेल : instituto@ruhi.org
वेबसाईट : www.ruhi.org

विषय सूची

सहशिक्षक के लिए कुछ विचार v

शिक्षण का आनंद 1

उल्लसित वार्तालाप 17

दृढ़ीकरण विषय वस्तु 39

सहशिक्षक के लिए कुछ विचार

रूही संस्थान द्वारा प्रस्तुत किए गए पाठ्यक्रमों के मुख्य अनुक्रम में यह दूसरी पुस्तक, उन सामर्थ्यों से संबंधित है जो हमें सार्थक और उल्लसित वार्तालाप में योगदान करने में सक्षम बनाते है। सेवा के जिस विशिष्ट कार्य पर पुस्तक केंद्रित है, तीसरी इकाई में वर्णित है। एक ऐसी दुनिया जिसमें शक्तिशाली ताकतें सांप्रदायिक बंधनों को तोड़ रही हैं, समाज के जीवन के लिए केंद्रीय विषयों का अन्वेषण करने के लिए मित्रों और पड़ोसियों के यहाँ गृह भ्रमण, अगर संस्कृति की एक प्रमुख विशेषता बन जाता है, तो अलगाव के कारण बढ़ रही कुछ बीमारियों को दूर करा जा सकता है। इकाई सुझाती है कि इस प्रकार बनाए गए मित्रता के संबंध, जीवंत और सामंजस्यपूर्ण समुदायों के निर्माण की प्रक्रिया को मजबूत करते हैं।

एक मोहल्ले या गांव में गृह भ्रमण के एक सतत कार्यक्रम के लिए थोड़ा बहुत व्यवस्थित होने की आवश्यकता है, जिसमें अपेक्षित प्रशासनिक संस्थानों और एजेंसियों द्वारा समर्थित समर्पित मित्रों का नाभिक शामिल हैं। सहशिक्षक को ध्यान में रखना चाहिए कि पुस्तक से एक समूह को गुजारने में, प्रतिभागियों को इस तरह केचल रहे प्रयास में शामिल होने के लिए तैयार किया जा रहा है। अध्ययन के एक हिस्से के रूप में उनके लिए आयोजित किए जा रहे गृहभ्रमणों को सेवा के जीवन के एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में इस प्रयास में साल–दर–साल भाग लेने की उनकी प्रतिबद्धता में बदलना चाहिए।

आध्यात्मिक और सामाजिक महत्व के विषयों के अन्वेषण के स्पष्ट उद्देश्य के लिए गृह भ्रमण करने का अभ्यास निश्चित ही एक समुदाय की संस्कृति को समृद्ध करता है। इस संबंध में अनौपचारिक चर्चाएं जो घर पर और कार्यस्थल पर, स्कूल में और बाजार में होती हैं, उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। समय–समय पर प्रतिदिन के वार्तालापों में आध्यात्मिक सिद्धांतों का परिचय कराना, एक ऐसी योग्यता है जो ध्यान देने योग्य है। इसी का विकास दूसरी इकाई का केंद्र बिंदु है, इस तरह से, यह तीसरी इकाई में किए जाने वाले अध्ययन के लिए एक नींव तैयार करता है।

यदि मित्रों और पड़ोसियों के साथ हमारा वार्तालाप उल्लासित होना है, तो हमें उन के साथ अपनी बातचीत आनंददायक बनाने में सक्षम होना चाहिए। यह पहली इकाई, 'शिक्षण का आनंद' में संबोधित किया गया विषय है। रूही संस्थान द्वारा अनुशंसित सेवा के सभी कार्य, वास्तव में, दिव्य ज्ञान के मोती हैं जिन्हें हम बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के महासागर में खोजते हैं, उन्हें दूसरों के साथ साझा करते हैं। पहली इकाई के अध्ययन का उद्देश्य इस कार्य में निहित आनंद के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। प्रतिभागियों को ईश्वर के शब्दों के बारे में और इसे दूसरों के साथ साझा करना कितना बड़ा आशीर्वाद है के बारे में सोचने के लिए कई भागों के दौरान कहा जाता है। यह इकाई बताना चाहती है कि इस कार्य से आनंद का उदय होता है और जैसे जैसे हम सेवा के पथ पर चलते है, यह हमारे कदमों को तेज करता है। फिर भी, इस गहन आध्यात्मिक सच्चाई के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त होते हुए भी, यदि हम उन गुणों और अभिवृत्तियों के बारे में विचार करने में असफल होते हैं जो सेवा को निश्चित ही विशिष्ट बनाती हैं, तो हम शिक्षण का आनंद खो सकते हैं। ये श्रृंखला की आगे आने वाली कई पुस्तकों में चर्चा के विषय हैं, और भाग 7 में अनासक्ति के साथ प्रारम्भ करके यहां केवल कुछ की ही जांच की जा रही है। बहाई लेखों से कुछ उद्धरण इस गुण पर चिंतन के लिए आधार बनाते है, अगर बाहरी कारकों को सेवा की खुशी को कम नहीं करने देना है तो यह गुण अपरिहार्य है। यह महत्वपूर्ण है कि प्रतिभागियों को उनके अध्ययन से यह गलत धारणा नही बननी चाहिए कि

अनासक्ति का मतलब उदासीनता या ध्यान न देना है। हमें बेहतर और बेहतर परिणाम प्राप्त करने का प्रयास करते समय लगातार अपने परिश्रम को सघन करने और अपनी सेवा की प्रभावकारिता को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए प्रयास के चरित्र की पर्याप्त समझने की आवश्यकता होती है, एक विषय जिस पर भाग 8 में विचार किया गया है। आशावाद और कृतज्ञता, सेवा के पथ के लिए आधारभूत दो अभिवृत्तियां है, जिन पर अगले और अंतिम खंड में संक्षेप में चर्चा की गई है।

पुस्तक की दूसरी इकाई, 'उल्लसित वार्तालाप अवसर होने पर आध्यात्मिक सिद्धांतों का हवाला देकर अनौपचारिक बातचीत के स्तर को ऊंचा करने की क्षमता पर केंद्रित है। इसमें विभिन्न विषयों पर कई छोटे कथन शामिल हैं, जो सटीक उद्धरण तो नहीं पर अब्दुल बहा के वक्तव्यों पर आधारित हैं, और इसमें उनके द्वारा उपयोग किए गए कई शब्द और वाक्यांश शामिल हैं। सार्वभौमिक अपील करते, ये कथन सभी पृष्ठभूमि के लोगों की आकांक्षाओं और चिंताओं के बारे में बात करते हैं। यह आशा की जाती है कि, अब्दुल बहा के कथनों का अध्ययन करने से, प्रतिभागी बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के महासागर में निहित मोतियों की खोज करने, उनके पिता की शिक्षाओं के अर्थ और निहितार्थ को समझने, और उन्हें दूसरों के साथ उदारता पूर्वक साझा करने का प्रयास करते समय, अब्दुल–बहा के आध्यात्मिक सिद्धांतों की व्याख्या करने के तरीके से प्रेरणा प्राप्त करेंगे और उनकी तरफ उन्मुख होने की आदत प्राप्त कर लेंगे।

इस इकाई के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, प्रतिभागियों को प्रत्येक कथन पर कई बार जाने, विचार के अनुक्रम की पहचान करने का अवसर दिया जाना चाहिए और इन्हें कहने का इतना अभ्यास करें कि विचारों को आत्मसात कर लें ताकि वे उन्हें स्वाभाविक रूप से व्यक्त कर सकें। कुछ लोग तो, कथनों को कंठस्थ कर लेंगे और जैसा इकाई में दिया गया है, लगभग वैसा ही दोहराएंगे। यह अपेक्षित भी है। जैसे–जैसे धर्म का उनका ज्ञान गहरा होग और उनका अनुभव बढ़ेगा, उनके पहुंच अधिक व्यापक सामग्री और समृद्ध शब्दावली तक होगी, जो दूसरों के साथ उनकी बातचीत में परिलक्षित होगी। सहशिक्षक को यह पहचानना चाहिए कि, इस स्तर पर, जो मांगा जा रहा है वह दोहरा हैः शिक्षाओं को स्पष्ट करने में सहजता का अंश और अब्दुल बहा के विचार के साथ संरेखण।

समूह के सदस्यों द्वारा प्रत्येक कथन की सामग्री को प्रस्तुत करने के बारे में जानने के बाद, वे एक अन्य गतिविधि पर जाते हैं जिसमें उन्हें अध्ययन किए गए विचारों को अपने परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों को उनके चिंता के मुद्दों के साथ सहसंबंधित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह प्राप्त करने के लिए, उन्हें बातचीत में उठाए गए कुछ विषयों और प्रश्नों के बारे में सोचने और यह तय करने के लिए कहा जाता है कि कौन से विषय हैं जो चर्चा में उन्हें विचारों का परिचय कराने की संभावना प्रदान करेंगे। कुछ कथनों के लिए, एक या दो उदाहरणों का वर्णन किया गया है कि किस प्रकार अब्दुल बहा द्वारा व्यक्त आध्यात्मिक सिद्धान्त हर जगह के लोगों के लिए चिंता के विषयों पर प्रकाश डालते हैं। इस अभ्यास से बेहतर फल मिलेगा, जब पुस्तक अध्ययन के दौरान ही, सहशिक्षक प्रत्येक सदस्य को एक कथन और कुछ व्यक्तियों को चुनने में मदद कर पाता है जिनके साथ कथन के विचार पर चर्चा हो सके। इस तरह, प्रतिभागियों को एक साथ मिलने, जिस बातचीत में वे संलग्न हैं उसकी गतिजता का एक दूसरे से वर्णन करने के लिए एक समय अलग रखा जा सकता है।

इस इकाई के प्रत्येक कथन के लिए, बहाउल्लाह के लेखों से कुछ अंश कंठस्थ करने के लिए शामिल किए गए हैं। रूही संस्थान का कंठस्थता पर जोर, जो पहले से ही श्रृंखला में पहली पुस्तक में स्पष्ट है, पुस्तक 2 में और अधिक स्पष्ट होता है। यह माना जाता है कि, अब तक, प्रतिभागी पवित्र लेखों से अंशों को बार–बार मन में लाने से प्राप्त आध्यात्मिक पोषण के प्रति सजग हो गए हैं। इस पुस्तक में, तब, वे मानव हृदय पर ईश्वर के वचन के प्रभावों पर आगे चिंतन करेंगे, और तीसरी इकाई में, दूसरी इकाई की तरह ही, वे अपने वार्तालाप में पवित्र लेखों में पाए गए सिद्धांतों और विचारों को प्रस्तुत करना सीखेंगे, और, जब उचित हो, अंशों को सीधे भी। शिक्षाओं को सही ढंग से समझाने के

लिए, उन्हें उनके शुद्ध रूप में दूसरों को देना, हमारी उन सामर्थ्यों में से हैं जिन्हें हम सेवा के पथ पर चलते हुए विकसित करना चाहते हैं। शुरू करने के लिए सही जगह है, अब्दुल बहा की व्याख्याओं का अध्ययन करना और उनके द्वारा अपनाए तरीके से व्यक्त करने की कोशिश करना, यही दूसरी इकाई की संरचना का आधार ळें

जैसा कि ऊपर संकेत किया गया है, तीसरी इकाई, जिसका शीर्षक 'दृढ़ीकरण विषय वस्तु' है, इस पुस्तक में संबोधित सेवा कार्य में बदल जाती है – समुदाय के जीवन के लिए महत्वपूर्ण चर्चाओं में संलग्न होने के स्पष्ट उद्देश्य से मित्रों और पड़ोसियों के यहाँ भ्रमण करना। इकाई में तीन प्रकार की बातचीत की कल्पना की जाती है और, प्रत्येक के लिए, विशिष्ट सामग्री का सुझाव दिया जाता है। पहला प्रकार व्यवस्थित भ्रमण कार्यक्रम में एक गांव या पड़ोस के निवासियों के साथ परीक्षण के लिए विषय वस्तुओं की एक श्रृंखला के चारों ओर घूमता है। यद्यपि उल्लिखित सामग्री को रुचि रखने वाले जनों के साथ विभिन्न प्रकार से साझा किया जा सकता है, लेकिन विषय वस्तुओं का मूल उद्देश्य – घर के सदस्यों को अपना धर्म ज्ञान प्रगाढ़ करने के अवसर प्रदान करना – सबसे अधिक प्रासंगिक रहता है। इकाई का अधिकतर हिस्सा, इस प्रकार के वार्तालाप के लिए दिया जाता है।

तथापि, गृह भ्रमण करने का चलन हाल के वर्षों में नए आयामों पर ले गया है, विशेषकर छोटी–छोटी भौगोलिक इकाइयों में, जो गाँव और शहरी पड़ोस के स्तर तक है, उन व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि देखी गई है जो सहशिक्षक, किशोर समूहों के अनुप्रेरकों और बच्चों की कक्षाओं के शिक्षकों के रूप में कार्य कर सकते हैं। विशेष रूप से, यह तरीका न केवल धर्म के ज्ञान के प्रचार के उद्देश्य के लिए आवश्यक सिद्ध हुआ है, किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तीकरण और बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा के कार्यक्रमों के सफल अनावृत होने के लिए भी आवश्यक है। इसमें, स्पष्ट हो गया है कि दोनों कार्यक्रमों में किशोरों और बच्चों के माता–पिता को अनुप्रेरकों और शिक्षकों द्वारा नियमित रूप से भ्रमण करने की आवश्यकता है ताकि उन अवधारणाओं और दृष्टिकोणों पर चर्चा हो सके जो उन्हें आकार देते हैं। इस तरह की चर्चा दूसरे प्रकार की बातचीत का गठन करती है, जिनकी भाग 14 और 15 में जांच की गई है। इन भागों में शामिल सामग्री व्यापक नहीं है, प्रतिभागी भविष्य के पाठ्यक्रमों में दोनों शैक्षिक कार्यक्रमों से अधिक परिचित हो जाएँगे। लेकिन उनके लिए इस प्रकार के वार्तालाप के महत्व के बारे में जानना और माता–पिता के यहाँ भ्रमण पर किशोर समूहों के अनुप्रेरकों और बच्चों के शिक्षकों के साथ साथ चलना इस प्रारंभिक चरण में अत्यधिक उपयोगी साबित हो सकता है।

इस इकाई में परिकल्पित एक तीसरे प्रकार का वार्तालाप एक बहुत ही विशेष उद्देश्य को पूरा करता है। क्योंकि कई युवक और युवतियां ऐसे रास्ते खोज रहे हैं जिनके माध्यम से दुनिया की बेहतरी में योगदान करने की उनकी प्रबल इच्छा अभिव्यक्ति पा सके। वे समाज को बदलने के लिए क्षमता के एक प्रचुर भंडार का प्रतिनिधित्व करते हैं जो उपयोग किए जाने की प्रतीक्षा कर रहा है, बल्कि, लालायित है। साथियों के बीच एक वार्तालाप जिसमें वे युवावस्था की ऊर्जा और असाधारण क्षमता के साथ प्राप्त विशिष्ट अद्वितीय अवसरों और जिम्मेदारियों पर चिंतन करते हैं, जो बहुधा सेवा के इर्दगिर्द चर्चा को प्रारम्भ कर सकता है और दुनिया भर में पड़ोस और गांवों में होने वाले कार्यों में रुचि जगा सकता है। इसके फलस्वरूप, अनेक, बच्चों की कक्षा के शिक्षकों और किशोर समूहों के अनुप्रेरकों के रूप में बढ़ती पीढ़ियों को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने की क्षमता प्राप्त करने के साधन के रूप में संस्थान के पाठ्यक्रमों में शामिल होने के आमंत्रण का स्वागत करेंगे। भाग 9 और 10 कुछ ऐसे ही विचार देते हैं जिनकी इस प्रकार के वार्तालाप में छानबीन की जा सकती हैं।

उन सामर्थ्यों को मजबूत करने के लिए जो व्यक्तियों को सार्थक वार्तालाप शुरू करने और बनाए रखने में सक्षम बनाती हैं, इकाई को निश्चित रूप से, व्यापक विषय–वस्तुओं और संबंधित सामग्री का सुझाव देने से परे जाना चाहिए। स्पष्टता के साथ विचारों को स्पष्ट करने की योग्यता के अलावा,

प्रतिभागियों को अपेक्षित अभिवृत्तियों और आध्यात्मिक गुणों को विकसित करने की आवश्यकता है। ये उन अधिकांश वृताँतों का आधार पर हैं जो इस इकाई में अनावृत होती हैं, विचार की जा रही सामर्थ्यताओं के लिए इनके महत्व को भाग 4 में स्पष्ट किया गया है, जहां प्रतिभागियों सोचते हैं कि एक भ्रमण की तैयारी के लिए किस तरह की भावनाओं और विचारों को हमारे मन और मस्तिष्क में होना चाहिये। भाग 5 में, वे विनम्रता के गुण पर चिंतन करते हैं। सहशिक्षक यह सुनिश्चित करना चाहेगा कि इन भागों पर प्रतिभागियों का पर्याप्त ध्यान मिले, चाहे हम कितना भी ज्ञान प्राप्त कर लें, चाहे हम विचारों को कितना भी स्पष्ट व्यक्त करें, हमारे वार्तालाप की प्रभावशीलता उन गुणों और दृ ष्टिकोणों पर निर्भर करेगी जो हम उसमें जोड़ते हैं।

यह ध्यान रखना चाहिए कि पुस्तकों की इस श्रृंखला में वर्णित सेवा के कार्य, हालांकि एक समुदाय के विकास और वृद्धि के लिए केंद्रीय हैं, एक प्रक्रिया जो अध्ययन और कार्य के माध्यम से व्यक्तिगत क्षमता बढ़ाने का प्रयास करती है, के सभी तत्वों से ऊपर हैं। प्रत्येक सहशिक्षक को यह महसूस करना चाहिए कि ये कार्य एक–दूसरे पर निर्माण करते हैं, जो कि पुस्तक–दर–पुस्तक जटिल हो रहे है। सेवा के प्रत्येक कार्य को प्रभावी ढंग से करना सीखना, आगे आने वाले कार्यों को निष्पादित करने के लिए आवश्यक क्षमता हेतु महत्वपूर्ण साबित होता है। एक घर में कई भ्रमणों के दौरान चल रही बातचीत को बनाए रखने के लिए, जैसा कि इस पुस्तक में प्रस्तावित है, पुस्तक 1 में प्रोत्साहित की गई गतिविधि, एक नियमित भक्तिपरक सभा की मेजबानी करना, चाहे वह स्वयं की हो या कुछ अन्य के साथ मिलकर, की तुलना में स्पष्ट रूप से अधिक मांग करता है। और यह देखना मुश्किल नहीं है कि आगे सेवा के अधिक जटिल कार्यों को प्रारम्भ करने के लिए, यह आवश्यक होगा कि प्रतिभागी यहां बताई गई सामर्थ्यों में आगे बढ़ें।

जैसा कि पुस्तक 1 में परिचयात्मक टिप्पणी में उल्लेख किया गया है, दुनिया भर में संस्थान पाठ्यक्रमों में भाग लेने वाले भिन्न प्रकार की पृष्ठभूमि से आते हैं और शुरू में, बहाई–शिक्षाओं के साथ अलग–अलग स्तर पर परिचित हैं। जब वे इस दूसरी पुस्तक को शुरू करते हैं, तब तक, वे सभी, वास्तव में, पाठ्यक्रमों द्वारा खोले गए सेवा के पथ पर चल पड़ें होंगे। लेकिन कुछ अंतर बने रहते हैं। युवाओं के मामले में, उदाहरण के लिए, जब तक वे बच्चों और किशोरों के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों से नहीं गुजरते, पुस्तक में प्रस्तुत किए गए कई कथन और विषय उनके लिए नए होंगे, और इनका अध्ययन धर्म के उनके ज्ञान को गहरा करने के एक साधन के रूप में काम करेगा। सहशिक्षक को इस संबंध में समूह के प्रत्येक सदस्य में समझ का पोषण करने के लिए आवश्यक लचीलापन और रचनात्मकता प्रदर्शित करने के लिए तैयार रहना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को सार्थक और उल्लसित वार्तालाप में संलग्न करने बनाया जाए। और यह जानिए कि, हजारों स्थानीय समुदायों में जहां पुस्तक का उपयोग हो रहा है, सामुदायिक–निर्माण प्रक्रिया जिसमें तीनों इकाइयां योगदान करना चाहती हैं, वह विकास के एक ही बिंदु पर नहीं है। जो कुछ भी सीखा जा रहा है, उसे अमल में लाना, एक स्थानीय समुदाय से दूसरे तक कुछ अलग आकार ग्रहण कर सकता हैं, और यह भी, देखभाल और पूर्णता का एक संकेत प्रदान करता है जिसके साथ एक सहशिक्षक को इन पृष्ठों से गुजरते समूह के हर सदस्य की जरूरतों का जवाब देना होगा।

शिक्षण का आनंद

उद्देश्य

यह सराहना कि शिक्षण का आनंद दूसरों के साथ ईश्वर के शब्दों को बांटना है।

भाग 1

सेवा का संकल्प रूही संस्थान द्वारा प्रस्तावित पुस्तकों के क्रम में दूसरी है जो अध्ययन और कार्य को जोड़ने का प्रयास करती है। इसका लक्ष्य, आपके दोहरे उद्देश्य – अपने स्वयं के आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास के लिए और समाज के रूपांतरण में योगदान देने, को पूरा करने के प्रयास में आपने जिस सेवा पथ को चुना है, उस पर आगे बढ़ने में आपकी सहायता करना है। पहली पुस्तक में अपनी भागीदारी से, आपको पहले से ही समझ लेना चाहिए कि जिस पथ को हम संदर्भित कर रहे हैं, उसे सेवा के कार्यों की एक श्रृंखला द्वारा परिभाषित किया गया है, वे कार्य, जिन्हें बहाउल्लाह के पवित्र लेखों में परिकल्पित एक नई विश्व व्यवस्था के लक्ष्य पर अपनी नज़र बनाए रखते हुए हमें आगे बढ़ाना हैं। इस प्रकार, जिसे हम 'सेवा पथ पर चलना' कहते हैं, वह अधिकांश स्वयं के जीवन और मानवता के जीवन में उनकी शिक्षाओं को लागू करने के हमारे प्रयास हैं। बहाउल्लाह स्वयं इन संदर्भों में अपने प्रकटीकरण की बात करते है :

> **"हे मेरे सेवकों, मेरे पवित्र, मेरे दिव्य आदेश से प्रेरित मेरे प्रकटीकरण की तुलना महासागर से की जा सकती है, जिसकी अतल गहराइयों में असंख्य अनमोल मोती छिपे हैं, चमत्कृत कर देने वाली कान्ति विद्यमान है। प्रत्येक जिज्ञासु का यह कर्तव्य है कि वह खोज–बीन में लग जाये ओर इस महासागर के किनारों तक पहुंचने की कोशिश करे ताकि अपनी खोज की अपनी उत्सुकता और किये गये प्रयासों के अनुपात में प्रभु की अपरिवर्तनीय और निगूढ़ पातियों में पूर्व आदेशित लाभ प्राप्त कर सके।"**[1]

इस पहली इकाई में, हमारे विचार उस आनंद के बारे में हैं, जो हमारे ह्रदयों में भर जाता है जैसे जैसे हम बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के महासागर में स्थित ज्ञान के मोतियों को खोजते जाते हैं और उन्हें दूसरों के साथ साझा करते जाते हैं। पुस्तक 1 के अध्ययन से आपने पहले से ही देखा है कि उनके पवित्र लेखों में पाए जाने वाले दिव्य मार्गदर्शन के मोती कितने उत्कृष्ट हैं। आइए कुछ अंशों पर विचार करें :

> **"ईश्वर की वाणी एक दीपक है, जिसका प्रकाश है ये शब्द : तुम एक ही वृक्ष के फल और एक ही शाखा की पत्तियाँ हो।"**[2]

> **"मेरी दृष्टि में समस्त वस्तुओं कीं सर्वाधिक प्रिय न्याय है; उससे विमुख न हो, यदि तुझे मेरी अभिलाषा है, इसकी अवहेलना न कर, ताकि मैं तुझमें विश्वास कर सकूँ।"**[3]

> **"अतः जिस युग में तुम रहते हो उस युग की आवश्यकताओं से जुड़े रहो और अपने क्रियाकलाप उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये केन्द्रित करो।"**[4]

> **"समस्त मानवों का सृजन सदा विकसित हो रही सभ्यता को आगे ले जाने के लिये हुआ है।"**[5]

> **"संसार नश्वर है, और जो अनश्वर है, वह है ईश्वर का प्रेम।"**[6]

> **"तू मेरा दीपक है और तुझ में मेरा प्रकाश है। तू उसमें से अपनी कांति प्राप्त कर और मेरे अतिरिक्त किसी अन्य की खोज न कर। क्योंकि मैंने तुझे समृद्ध बनाया और उदारतापूर्वक अपनी कृपा तुझ पर बरसाई है।"**[7]

आप समय के साथ इन छोटे अंशों को याद करना चाह सकते हैं।

भाग 2

इस इकाई की मुख्य विषय वस्तु पर अपने विचार–विमर्श शुरू करने के लिए, पिछले भाग में उद्धृत पहले अंश को फिर से पढ़ें और निम्नलिखित अभ्यास करें :

1. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें :

   क. यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम ____________________ और बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के महासागर के ____________ तक पहुंचने की ____________ करें।

   ख. हमें बहाउल्लाह के दिव्य प्रकटीकरण के महासागर के किनारों तक पहुंचने की कोशिश करनी चाहिए ताकि हम अपनी खोज की ____________ और अपने प्रयासों के ____________ में ईश्वर की अकाट्य एवं रहस्यमयी पातियों में निर्दिष्ट ____________ को प्राप्त कर सकें।

   ग. हमें बहाउल्लाह के दिव्य प्रकटीकरण के महासिंधु से ____________ के अनुपात में ही लाभ प्राप्त करेंगे

2. "उठ खड़े" होने का क्या अर्थ है ? ____________________

   ____

3. किसी चीज को प्राप्त करने के लिए "कोशिश करने" का क्या अर्थ है ? ____________

   ____

4. प्रत्येक जिज्ञासु को क्या प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए ? ____________

   ____

   ____

5. किसी चीज के किसी अन्य वस्तु "के अनुपात" में होने का क्या अर्थ है ? ____________

   ____

6. बहाउल्लाह हमसे कहते हैं कि हम उनके प्रकटीकरण के महासिंधु से अपनी कोशिशों के अनुपात में ही लाभ प्राप्त करेंगे।

   क. इन लाभों को प्राप्त करने के लिए हमारे द्वारा की गई कोशिश के कुछ उदाहरण दें।

   ____

   ____

   ____

   ____

   ____

ख. हमें प्राप्त होने वाले लाभों के कुछ उदाहरण दें। ____________________________

____

____

____

____

भाग 3

यह जानते हुए कि बहाउल्लाह का प्रकटीकरण एक महासागर की भाँति है, जिसकी गहराइयों में अनमोल रत्न हैं, हम में से प्रत्येक इसका लाभ उठाने और दूसरों को भी इस महासागर के किनारे तक पहुँचाने में सहायता करने की पूरी कोशिश करता है। लेकिन इस महासागर के तटों तक पहुँचने की यात्रा कितनी लम्बी है ? बहाउल्लाह कहते हैं :

> **"हे मेरे सेवकों ! एक सत्य ईश्वर मेरा साक्षी है! यह सर्वमहान अतल और उत्तल महासागर तुम्हारे निकट, आश्चर्यजनक रूप से तुम्हारे निकट है। देखो, यह तुम्हारी धमनियों से भी अधिक निकट है। यदि तुम चाहो तो पलक झपकते ही इस तक पहुँच सकते हो और इस अविनाशी अनुकम्पा, इस ईश्वर प्रदत्त अनुग्रह, इस निर्मल उपहार, इस सर्वसामर्थ्यशाली और अकथनीय महिमामय उदारता को प्राप्त कर सकते हो।"[8]**

1. यह वाक्यांश "यह सर्वमहान अतल उत्तल महासागर" किसको इंगित करता है ? ____________

____

2. यह महासागर हमसे कितना निकट है ? ________________________________

____

3. इस महासागर तक हम कितनी जल्दी पहुंच सकते हैं ? ____________________________

____

4. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें :

   क. बहाउल्लाह के प्रकटीकरण का सर्वमहान महासागर हमारे निकट, ________________ निकट है।

   ख. हाउल्लाह के प्रकटीकरण का महासागर हमारी धमनियों से भी अधिक ______________ है।

   ग. दि हम चाहें तो ______________________ इस तक पहुंच सकते हैं और उनके प्रकटीकरण के महासागर से ___________________________________ प्राप्त कर सकते हैं।

घ. दि हम चाहें तो पलक झपकते ही इस ________________________________
________________ को प्राप्त कर सकते हैं।

भाग 4

बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के महासागर के तट पर पहुंचने के बाद, हम इसके खजाने से भाग प्राप्त करते हैं और दिव्य मार्गदर्शन के मोती, जो हम लगातार अपने स्वयं के अध्ययन, प्रार्थना और ध्यान और उनके धर्म और मानवता की सेवा करते हुए हमारे प्रयासों में खोजते हैं, उदारतापूर्वक और अप्रतिबंधित रूप से दूसरों के साथ बांटते हैं। निम्नलिखित अंश जो इस कर्तव्य की पवित्रता का एक निरंतर स्मरण कराता है, को याद करने के लिए कुछ समय ले सकते हैं :

> **"हे ईश्वर की राह के पथिक ! उसकी कृपा के महासागर से तू अपना भाग ग्रहण कर और स्वयं को उन चीजों से वंचित न कर जो उसकी गहराइयों में छिपी हैं। तू उनमें से बन जिन्होंने इसके कोषों से अपना भाग ग्रहण किया है। इस महासागर की एक ओस बूंद भी यदि समस्त आसमानों और धरती पर छिड़क दी जाये तो वह सर्वशक्तिशाली, सर्वज्ञाता, सर्वबुद्धिमान ईश्वर की कृपा से विभूषित होने के लिये पर्याप्त है। अपने श्रद्धालु करों से इसका जीवनदायक अमृतजल ग्रहण कर और सभी सृजित वस्तुओं पर इसे छिड़क दे, ताकि समस्त मानव–निर्मित सीमाओं से वे मुक्त हो सकें और ईश्वर के महिमाशाली सिंहासन तक पहुंच सकें।"**[9]

भाग 5

जैसे जैसे हम संस्थान पाठ्यक्रमों के माध्यम से आगे बढ़ते हैं, उनसे जुड़े आवश्यक अध्ययन और सेवा कार्य करते है, सेवा के लिए हमारी क्षमता बढ़ेगी, और हम सेवा के वे कार्य करने के योग्य होंगे जो हमारे हृदयों में अपार खुशी लाते हैं और हमारे दोहरे उद्देश्य को पूरा करने में हमारी सहायता करते हैं – कार्य, जैसे बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा के लिए कक्षाएं चलाना, किशोरों को उनके आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए एक कार्यक्रम में शामिल करना और मित्रों के एक समूह को मुख्य शृंखला की पुस्तकों का अध्ययन करने में मदद करना। इस पूरी यात्रा में, ईश्वर के शब्द, हम जिन्हें युवा और वृद्ध, सभी के साथ साझा करेंगे, हमारी प्रेरणा के निरंतर स्रोत होंगे। तब यह उचित होगा कि हम बहुधा इसकी शक्ति और मानव हृदय पर इसके प्रभाव पर ध्यान करें। निम्नलिखित उद्धरण में, बहाउल्लाह इस शक्ति की बात करते हैं :

> **"ईश्वर के शब्द उन नन्हे पौधों की भाँति हैं जिनकी जडें मनुष्य के हृदय में रोपी गई हैं। यह तुम्हारे लिये उचित है कि तुम इन्हें विवेक के जीवंत जल, पावन शब्दों से सींचो ताकि इसकी जड़ें मजबतूी से जम सकें और इसकी शाखाएँ आसमानों तथा उसके पार विस्तार पा सकें।"**[10]

1. ईश्वर के शब्द की तुलना किससे की जा सकती है ? ________________________
____

2. ईश्वर के शब्द रूपी पौधों की जड़ें कहाँ रोपी गई हैं ? ____________________

____

3. किस प्रकार हमें इस पौधे की देखभाल करनी चाहिए ? ____________________

____

4. यह पौधा किस ऊंचाई तक बढ़ सकता है ? ____________________

____

5. कुछ वाक्यों में समझायें कि ईश्वर के शब्द को दूसरों के साथ बांटना क्यों सर्वाधिक महत्वपूर्ण है ?

____

____

____

____

____

भाग 6

आइए हम उन विभिन्न गतिविधियों के बारे में सोचें जो दैनिक जीवन में हमें व्यस्त रखती हैं। हम अपने शरीर का भरण पोषण करते हैं। हम नए ज्ञान प्राप्त करने और अपनी मानसिक क्षमता का विस्तार करने के लिए अध्ययन करते हैं। हम काम करते हैं और कुशलताएँ विकसित करते हैं जो हमें समाज के उपयोगी सदस्यों के रूप में जीने में सक्षम बनाते हैं। हम खेल और मनोरंजन में संलग्न होते हैं। इन जैसी कई गतिविधियाँ, जो हमारी बौद्धिक प्रगति और भौतिक कल्याण के लिए महत्वपूर्ण हैं, हमारे समय के एक बड़े भाग को घेरे रहती हैं। लेकिन तब प्रत्येक दिन में वे विशेष क्षण होते हैं, जो आध्यात्मिकता से आवेशित होते हैं, जब हम प्रार्थना में; जब हम अकेले या मित्रों के साथ दिव्य शिक्षाओं के बारे में हमारे ज्ञान को गहरा करने में संलग्न होते हैं; या तब, जब असंख्य तरीकों में से किसी एक से, हम अपने आस–पास के लोगों की मदद बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के महासागर में छिपे हुए मोती खोजने में करते हैं। क्या ये क्षण अत्यधिक अनमोल नहीं हैं ? क्या इन दिव्य आशीषों का भाग पाने से अधिक कोई आनंद है ?

हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि अब्दुल–बहा ने हमें मानवता के उत्थान के लिए खुद को समर्पित करने के लिए कैसे प्रोत्साहित किया :

> **"हम सब एक ही दिव्य उद्देश्य में संगठित हैं, हमारा कोई भौतिक अभिप्राय नहीं, और हमारी मनोकामना विश्व भर में ईश्वर के प्रेम का प्रसार है।"**[11]

मान लीजिए कि आपको एक मित्र के साथ आपके द्वारा कंठस्थ किए गए भाग 1 के उद्धरणों में से एक उद्धरण साझा करने का अवसर मिलता है। आपके हृदय में जो आनंद महसूस होता है वह कहां से आता है ? स्वाभाविक रूप से, आप आशा करते हैं कि आपका मित्र बहाउल्लाह के शब्दों द्वारा

उल्लसित होगा। लेकिन क्या होगा अगर वह उत्साह नहीं दिखाता जिसकी आप आशा कर रहे थे? क्या आपके हृदय से आनंद बस गायब हो जाता है ? क्यों नहीं ?

____

____

____

____

भाग 7

हम जब यह पाते हैं कि जीवन में हम जो भी कार्य करते हैं उनमें जो क्षण हम ईश्वर के शब्द को दूसरों से बांटने में बिताते हैं वे विशेष आशीर्वादों से भरे होते हैं, हम सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि शिक्षण करने से जो आनन्द प्राप्त होता है वह स्वयं शिक्षण क्रिया में अंतर्निहित होता है। निश्चित रूप से, हम आशा करते हैं, कि हम जो सेवा कार्य करते हैं, वह योग्य परिणाम देगा, लेकिन अगर हम परिणामों से बहुत अधिक जुड़े हुए हैं, अगर हम प्रशंसा या आलोचना से अत्यधिक प्रभावित होते हैं, तो हम शिक्षण का आनंद खो देंगे। हमें सेवा करने के लिए प्रेरित करने वाला मात्र ईश्वर का प्रेम होना चाहिए, न कि सफलता की कामना, लाभ प्राप्त करने की इच्छा, दूसरों से सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करने की इच्छा। इन सभी चीजों से अनासक्ति ही आनंददायक सेवा की एक आवश्यकता है। निम्नलिखित उद्धरणों का अध्ययन करने से आपको इस विषय पर चिंतन करने में मदद मिलेगी :

> **"हे द्वैत दृष्टि के मनुष्य ! एक नेत्र को मूंद लो और दूसरे को खोल दो। एक को संसार और उसमें जो कुछ भी है की ओर से मूंद लो और दूसरे को परमप्रिय के विश्वमोहन स्वरूप के दर्शन के निमित्त खोल दो।"[12]**

> **"हे मित्रों! अनन्त सौंदर्य का एक नाशवान सौन्दर्य के लिये परित्याग न करो और मिट्टी के इस नाशवान संसार में मन न लगाओ।"[13]**

> **"हे दिव्यवाणी के पुत्र ! अपना मुखड़ा मेरी ओर कर और मेरे अतिरिक्त अन्य सभी कुछ त्याग दे, क्योंकि मुझ महान की सत्त शाश्वत है, उसका अन्त नहीं। यदि मेरे अतिरिक्त तुम्हें किसी अन्य की लालसा है, तो समझ लो कि भले ही कल्पान्त तक तुम सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को भी खोजोगे तो भी निराशा को ही प्राप्त होगे।"[14]**

> **"हे मित्रवत् अपरिचित ! तुम्हारे हृदय के दीप को मेरी शक्ति के हस्त ने प्रदीप्त किया है, स्वार्थ एवं वासना के विरोधी झोकों से उसे न बुझा। तेरी समग्र व्याधियों का निराकरण एकमात्र मेरा सुमिरन है, इसे न भूल। मेरे प्रेम को अपनी पूंजी बना और उसे स्वयं अपनी दृष्टि और अपने जीवन के समान संजो कर रख।"[15]**

> **"अनासक्ति सूर्य की भाँति है जिस भी हृदय से यह प्रकाशमान होती है, यह लोभ और अहंकार की अग्नि को बुझा देती है। वह, जिसकी दृष्टि विवेक के प्रकाश से प्रकाशित है, निश्चय ही संसार और इसकी व्यर्थ इच्छाओं से स्वयं को अनासक्त कर लेगा ... संसार और इसकी निकृष्टता तुम्हें दुखी न करे। वह सुखी है जिसे समृद्धि व्यर्थ अभिमान से नहीं भर देती और न ही निर्धनता दु:ख से।"[16]**

1. क्या इस संसार में अनासक्ति का अर्थ सन्यासी की भाँति जीना है ? ________________

2. क्या एक ही समय में संसार से अनासक्ति और सांसारिक वस्तुओं का स्वामित्व करना सम्भव है ?

____

3. क्या वह आदमी, जो व्यावहारिक रूप से अपने जीवन का हर पल अपने कार्य को करने में बिताता है, संसार से अनासक्त है ? ________________________

4. क्या वह व्यक्ति, जो मात्र अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए काम करता है और बाकी समय बिना कुछ किए बिताता है, इस संसार से अनासक्त है ? ______

5. कोई व्यक्ति सेवा के क्षेत्र में भौतिक असुविधाओं को सहन करने में असमर्थ है, क्या संसार से अनासक्त है ? ________________________________

6. भौतिक वस्तुओं के अलावा भी ऐसी अनेक चीजें हैं जिनसे हमारी आसक्ति हो सकती है। आप किन चीजों से आसक्त होते अगर आप एक ऐसे व्यक्ति होते जो :

   – जब कोई भी उसके द्वारा किए जा रहे सेवा के कार्य की सराहना नहीं करता है, तो इसे छोड़ देना चाहता है ? ________________________

   – जब उसके द्वारा साझा किए गए विचारों को कोई स्वीकार नहीं करता तो वह निरुत्साहित महसूस करता है ? ________________________

   – दूसरों द्वारा अस्वीकार कर दिये जाने के डर से अपनी मान्यताओं को छुपाता है ? ________________________________

7. अनासक्ति का मतलब आलस्य या की कमी नहीं है। निम्नलिखित में से कौन से व्यक्ति के अनासक्त ना होने का संकेत हो सकते हैं ?

   ______ दूसरों की प्रगति देखने से खुशी प्राप्त करना

   ______ कुछ बच्चों के दुर्व्यवहार करने पर एक कक्षा को पढ़ाने से रुकना

   ______ अपनी उपलब्धियों के बारे में डींग मारना

   ______ बहुत अध्ययन करना और अपनी प्रगति में संतुष्ट महसूस करना

   ______ सर्वहित सेवा करने की अपनी क्षमता को विकसित करने के लिए कड़ी मेहनत करना

   ______ अपने व्यवसाय में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना

   ______ साफ सफाई का ध्यान रखना और एक स्वच्छ और सुसज्जित घर रखना

_______ अपने सामान की देखभाल करना

_______ दूसरों की भलाई का ध्यान रखना

_______ अपने प्रयासों की प्रशंसा ना होने पर निराश होना

8. हम में से हर एक के लिए अनासक्ति इतनी महत्वपूर्ण है कि यह सुझाव दिया जाता है कि आप इस भाग के सभी उद्धरण कंठस्थ करें।

भाग 8

मानवता के लिए सेवा के आनंदमय जीवन के उपहारों को प्राप्त करने हेतु, हमें प्रयास करने के लिए तैयार रहना चाहिए, और हमारे प्रयासों को कुछ हद तक त्याग की आवश्यकता हो सकती है। हम अपने दैनिक जीवन में "त्याग" शब्द का बार–बार उपयोग करते हैं। यदि कोई प्रिय मित्र भोर में किसी यात्रा से वापस आ रहा है, तो हम उसे लेने के लिए जल्दी उठ सकते हैं। हम कह सकते हैं कि हमने कुछ घंटों की नींद त्याग दी है। हमारा कोई प्रिय बीमार हो जाता है; हम उसकी देखभाल के लिए अपने पसंदीदा मनोरंजन के कुछ घंटों को उसके साथ व्यतीत करते हैं। जीवन में ऐसे मौके आते हैं जब हमें बहुत मेहनत करनी होती है और हम सोच सकते हैं कि हम एक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आराम का त्याग कर रहे हैं।

हम सभी के पास प्रभुधर्म की सेवा करने की अत्यधिक इच्छा है, उदारतापूर्वक हम अपना समय और ऊर्जा देते हैं और, जहां तक संभव होता है, हमारे भौतिक संसाधनों का एक हिस्सा भी देते है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमें यह याद रखना चाहिए कि सेवा के पथ पर, हम इस दुनिया की चीजों को छोड़ सकते हैं, लेकिन जो हमें प्राप्त होता है वह सच्चा आनंद है क्योंकि हम आध्यात्मिक रूप से विकसित होते हैं। हमारे पास भविष्य के पाठ्यक्रमों में त्याग की प्रकृति पर अधिक समीक्षा करने का अवसर होगा। प्रारम्भ में ही यह समझ लेना महत्वपूर्ण है कि इसमें उच्चतर के लिए निम्नतर का त्याग सम्मिलित है, जैसे वृक्ष को जन्म देने के लिए बीज का स्वयं को त्याग देना। त्याग आनंद का वाहक है, और यह आनंद तब तक हमारा नहीं होगा जब तक हम सतत प्रयास करने के लिए तैयार न हों।

बहाउल्लाह कहते हैं :

"यदि हम उसे प्राप्त करना चाहते हैं; तो श्रम आवश्यक है, यदि हम उससे मिलन के मधु का रसपान करना चाहते हैं; तो हमें आध्यात्मिक उत्कंठा से भर उठना होगा; और यदि हम इस प्याले को चख लें तो हम इस संसार का मोह त्याग देंगे।"[17]

और अब्दुल बहा हमें सलाह देते हैं :

"... तुम आराम मत करो, तुम विश्रान्ति की कामना न करो, इस नाशवान संसार के ऐश्वर्यों से स्वयं को मत जोड़ो, स्वयं को हर आसक्ति से मुक्त कर लो और अपने हृदय व आत्मा से ईश्वर के साम्राज्य में पूरी तरह स्थापित करने की मन–प्राण से चेष्टा करो। तुम स्वर्गिक खजाना प्राप्त करो। दिन–ब–दिन तुम अधिक प्रकाशमान बनो। तुम एकता की दहलीज की ओर निकट आते जाओ।"[18]

हम सभी मानते हैं कि, अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमें प्रयास करने चाहिए। लेकिन इस सरल विश्वास के अभ्यास में कुछ निहितार्थ हैं जिन्हें हमें नहीं भूलना चाहिए। पहले तो, यह याद रखना आवश्यक है कि अपेक्षित ऊर्जा की मात्रा और हमारे आगे जो लक्ष्य या कार्य है उसकी कठिनाई के स्तर के बीच एक तदनुरूपता है। अगर हमें लगता है कि इसे कम प्रयास से पूरा किया जा सकता है तो हम खुद को धोखा दे रहे हैं। लेकिन परिश्रम की मात्रा ही ध्यान में रखा जाने वाला एकमात्र कारक नहीं है। इसमें निरंतरता और धैर्यता की आवश्यकता भी है। ध्यान केंद्रित होना आवश्यक है। कार्यों को पूरा करने की आदत, एक कार्य से दूसरे में कूदना और काम को अधूरा नहीं छोड़ना, आवश्यक है। आधे–अधूरे प्रयासों का फल नहीं मिलता है। बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा के लिए एक साप्ताहिक कक्षा की कल्पना करें। शिक्षक को प्रत्येक कक्षा की तैयारी के लिए कुछ घंटे निश्चित रूप से समर्पित करने चाहिए, पूरी कक्षा अवधि में ध्यान केंद्रित रख पाठ की सामग्री को अच्छी तरह समझने में छात्रों की मदद करनी चाहिए, बच्चों के माता–पिता का नियमित गृह भ्रमण करना चाहिए, और सप्ताह दर सप्ताह उनकी व्यक्तिगत प्रगति पर ध्यान देना चाहिए। उस कक्षा का भाग्य क्या होगा जिसका शिक्षक कभी–कभार ही तैयारी करता है, थकने पर सत्र को जल्दी और अचानक समाप्त कर देता है और प्रत्येक बच्चे के बारे में सोचने और माता–पिता के साथ उसकी प्रगति पर चर्चा करने के लिए आवश्यक समय समर्पित करने में विफल रहता है। और क्या होगा यदि शिक्षक किसी अन्य दायित्व को पूरा करने के लिए जैसे बाहर शहर से आ रहे मित्र के साथ रहने के लिए, कक्षा रद्द करता रहता है ?

ये कुछ टिप्पणियां हमें यह समझाने के लिए हैं कि हमें कार्यों को पूरा करने के लिए उठाए गए प्रत्येक कदम की मात्रा और प्रयास दोनों की गुणवत्ता पर ध्यान देना चाहिए। यह न केवल उस सेवा के कार्यों के लिए सही है जिसमें हम संलग्न हैं; बल्कि यह हमारे अपने विकास पर भी समान रूप से लागू होता है। इस श्रृंखला की पहली पुस्तक में भी हमने जिन आध्यात्मिक आदतों पर विचार किया है – नियमित रूप से प्रार्थना करना, प्रतिदिन पवित्र लेखों को पढ़ना, विचार करना कि कैसे अपने जीवन को शिक्षाओं के अनुसार जिएँ, भक्तिपरक सभाओं में पूरे मन से भाग लेना भी निरंतर परिश्रम पर निर्भर हैं। नीचे प्रयास से संबंधित कई कथन दिए गए हैं। यह तय करना कि कौन सा सत्य है, आपको इस मामले पर आगे चिंतन करने में मदद करेगा :

_______ यदि आप स्मार्ट हैं, तो आपको कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता नहीं है।

_______ क्यों लंबा रास्ता तय करना; हमेशा शॉर्टकट की तलाश करें।

_______ बिना कष्ट पाये फल नहीं मिलता।

_______ बड़ा सपना देखो; आपकी इच्छाएँ पूरी होंगी।

_______ बड़ा पुरस्कार, अधिक प्रयास।

_______ जितना अधिक प्रयास, उतना ही मीठा फल।

_______ यदि आप पहली बार में सफल नहीं होते हैं, तो बार बार प्रयास करें।

_______ क्यों काम करना जब आप दूसरों से अपने लिए काम करवा सकते हैं ?

_______ यदि बहुत अधिक प्रयास करना पड़े, तो इसका मतलब यह आपके लिए नहीं है।

_______ छोटे – लगातार और बार बार कदमों से–एक लंबा रास्ता तय कर सकते हैं।

_______ जो महत्वपूर्ण होता है वह पाना कभी आसान नही होता है।

_______ उत्कृष्टता पूरे ह्रदय से समर्पण की मांग करती है।

_______ एक हजार मील की यात्रा एक कदम के साथ शुरू होती है।

_______ सिर्फ़ गुज़ारा करना पर्याप्त नही है।

_______ हमें चीजों के होने का इंतजार नहीं करना चाहिए; हमें इनके लिए प्रयास करना चाहिए।

_______ सफलता भाग्य की बात है।

_______ हम जादू द्वारा अपना दोहरा उद्देश्य प्राप्त नहीं कर पाएंगे।

_______ हमें प्रत्येक दिन अपना लेखा जोखा करना होगा।

हम सेवा के पथ पर चलते हैं, अपने स्वयं के आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास को प्राप्त करने और समाज के रूपान्तरण में योगदान करने का प्रयास करते हैं। यह स्पष्ट है कि इस दोहरे उद्देश्य को प्राप्त करना हमसे बहुत अधिक प्रयास की अपेक्षा करता है। बहाउल्लाह हमें बताते है :

> **"अतुलनीय सृष्टिकर्ता ने समस्त मानवों को एक ही तत्व से सृजित किया है और उन्हें अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया है। सफलता–असफलता, लाभ–हानि अवश्य ही मनुष्य के अपने प्रयासों पर निर्भर करती है। जितना अधिक वह प्रयास करता है उतना अधिक उसका विकास होता है।"**[19]

यदि आपने पहले ऐसा नहीं किया है तो आप उपरोक्त अंश को याद करना चाह सकते हैं।

भाग 9

सेवा से आनंद को प्राप्त करने योग्य होने के लिए, हमें स्वयं में कुछ अभिवृत्तियों का पोषण करना चाहिए। उदाहरण के लिए, ईश्वर ने हमें जो सेवा की वदान्यता प्रदान की है, उसके लिए हमें आभारी होना चाहिए; यह कल्पना करना अकल्पनीय है कि हम ईश्वर पर उपकार कर रहे हैं जब हम उसके धर्म की सेवा करते हैं। हमें निराशावाद से बचने और विश्व के प्रति आशावादी दृष्टिकोण के साथ जीवन को देखना भी सीखना चाहिए। सेवा के पथ पर आने वाली बाधाओं को आगे बढ़ने के लिए सीढ़ियों में बदला जा सकता है। कठिनाईयों के समय भी, हम भविष्य को आस्था से भरी आँखों से देखते हैं। अब्दुल बहा के निम्नलिखित शब्द उस उम्मीद और आशावाद की ओर इशारा करते हैं जो हमारे प्रयासों की विशेषता होनी चाहिए :

”प्रारम्भ में, बीज कितना छोटा होता है, यद्यपि अंत में यह एक विशाल वृक्ष बन जाता है, तुम बीज को नहीं देखो, अपितु तुम वृक्ष को देखो, तुम इसके फूलों, और पत्तों और इसके फलों को देखो।“[20]

”तब इस नन्हे बीज के वृहद महत्व को जानो, जिसे सच्चे माली द्वारा अपने दया के हाथों से, स्वामी द्वारा जोते गए खेतों में बोया गया, और जिसे उपहारों तथा वदान्यताओं की वर्षा के जल से सिंचित किया गया और अब सत्य के दिवानक्षत्र के प्रकाश द्वारा उदारता तथा उष्मा से पोषित किया जा रहा है।“[21]

”जब तुम किसी वृक्ष को बढ़ते और विकसित होते हुए देखते हैं, तो उसके परिणाम के प्रति आशान्वित रहो। यह अंततः पुष्पित हो जाएगा और फल देगा। यदि तुम सूखी लकड़ी या पुराने पेड देखते हो, तो उनसे किसी भी प्रकार फल की उम्मीद न करो।“[22]

”ईश्वर के प्रियजनों को, अवश्य ही, परिश्रम के जल के साथ, श्रमपूर्वक, आशा के इस वृक्ष को लगाना और पोषित करना चाहिए।“[23]

”यदि हृदय ईश्वर प्रदत्त आशीर्वादों से विमुख हो जाए, तो यह आनन्द की आशा कैसे कर सकता है ? यदि वह ईश्वर की दया में आशा और भरोसा नहीं रखता, तो वह विश्रांति कहाँ पा सकेगा।“[24]

उपरोक्त अंशों को चिंतन करने के लिए, निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें :

1. प्रारम्भ में बीज कितना छोटा होता है, किन्तु अंत में ________________________________ ______________________।

2. हमें नन्हे बीज को नहीं, अपितु ____ देखना चाहिए।

3. तब इस नन्हे बीज के वृहद महत्व को जानो, जिसे ईश्वर द्वारा अपनी दया के हाथों से, ____ ____ ____ _________________________________।

4. जब हम किसी वृक्ष को बढ़ते और विकसित होते हुए देखते हैं, तो हमें क्या करना चाहिए _____________________________________।

5. जब हम किसी वृक्ष को बढ़ते और विकसित होते हुए देखें, तो हम आशान्वित रहना चाहिए कि ____।

6. अपने परिश्रम के जल के साथ, हमें ____ ____।

7. यदि हृदय ईश्वर प्रदत्त आशीर्वादों से विमुख हो जाए, ________________________________ ________________________ ?

8. यदि हृदय ईश्वर की दया में आशा और भरोसा नहीं रखता, ________________________________ ________________________ ?

अब, एक क्षण के लिए चिंतन करेंः क्या आप सहमत हैं कि विनम्र कृतज्ञता की अवस्था के साथ संयुक्त हमारी आनन्दमय और आशावादी चेतना दूसरों के लिए प्रसन्नता का एक स्रोत है ? और, हमें हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि, प्रभुधर्म की सेवा करने के लिए उठ खड़े होकर, हम एक नए दिवस की भोर की खुशखबर, मानवजाति को एकत्र करने के दिवस का आनंद लेते हैं। हमारे हृदयों में बहाउल्लाह के शब्द गूंज उठें :

"प्रसन्न है वे जो उद्यम करते हैं बढ़भागी है प्रसन्न है वे जो समझते हैं, प्रसन्न है वह मनुष्य जो धरती और आकाश में सभी कुछ से अनासक्त रह सत्य से लिपटा हुआ है।"[25]

REFERENCES

1. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1983, 2017 printing), CLIII, par. 5, p. 369.

2. Ibid., CXXXII, par. 3, p. 326.

3. Bahá'u'lláh, *The Hidden Words* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 2003, 2012 printing), Arabic no. 2, p. 3.

4. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh*, CVI, par. 1, p. 241.

5. Ibid., CIX, par. 2, p. 243.

6. Bahá'u'lláh, in *Women: Extracts from the Writings of Bahá'u'lláh, 'Abdu'l-Bahá, Shoghi Effendi and the Universal House of Justice*, compiled by the Research Department of the Universal House of Justice (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1986, 1997 printing), no. 53, p. 26.

7. *The Hidden Words*, Arabic no. 11, p. 6.

8. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh*, CLIII, par. 5, p. 370.

9. Ibid., CXXIX, par. 1, p. 316.

10. Ibid., XLIII, par. 9, p. 109.

11. From a talk given on 19 November 1911, published in *Paris Talks*: *Addresses Given by 'Abdu'l-Bahá in 1911* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2006, 2016 printing), no. 32.2, p. 121.

12. *The Hidden Words*, Persian no. 12, p. 26.

13. Ibid., Persian no. 14, p. 26.

14. Ibid., Arabic no. 15, p. 7.

15. Ibid., Persian no. 32, p. 33.

16. Bahá'u'lláh, in *The Bahá'í World: Volume One, 1925–1926* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1926, 1980 printing), p. 42.

17. *The Call of the Divine Beloved: Selected Mystical Works of Bahá'u'lláh* (Haifa: Bahá'í World Centre, 2018), no. 2.12, p. 17.

18. *Tablets of the Divine Plan: Revealed by 'Abdu'l-Bahá to the North American Bahá'ís* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1993, 2006 printing), no. 13.6, pp. 95–96.

19. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh*, XXXIV, par. 8, p. 91.

20. *Selections from the Writings of 'Abdu'l-Bahá* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2010, 2015 printing), no. 40.3, pp. 118–19.

21. Ibid., no. 40.3, p. 119.

22. From a talk given on 11 May 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace: Talks Delivered by 'Abdu'l-Bahá during His Visit to the United States and Canada in 1912* (Wilmette: Bahá'í Publishing, 2012), par. 2, p. 153.

23. *Selections from the Writings of 'Abdu'l-Bahá*, no. 206.13, pp. 356–57.

24. From a talk given by 'Abdu'l-Bahá on 21 November 1911, published in *Paris Talks*, no. 34.8, p. 133.

25. Bahá'u'lláh, *Epistle to the Son of the Wolf* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1988, 2016 printing), p. 139.

उल्लसित वार्तालाप

उद्देश्य

आध्यात्मिक सिद्धांतों को वार्तालाप में परिचित
कराने की योग्यता का विकास करना

भाग 1

इस पुस्तक की पहली इकाई में, हमने उस असीम आनंद के बारे में बात की, जो हमें दूसरों के साथ ईश्वर के शब्दों को साझा करने के कार्य से प्राप्त होता है। जब हम सेवा के पथ पर चलते है, हमें बहाउल्लाह के प्रकटीकरण से प्राप्त अंतर्दृष्टियों को मित्रों और परिचितों के साथ चर्चा करने के कई अवसर मिलते हैं। अतः, हम सभी को जिन अत्यावश्यक सामर्थ्यों को विकसित करने की आवश्यकता है, उनमें से कुछ हमें सार्थक और उल्लसित वार्तालाप में योगदान करने के योग्य बनाती हैं। इस और अगली इकाई का उद्देश्य इस संबंध में आपकी सहायता करना है। यहाँ आप ध्यान देंगे कि, जब अवसर यह माँग करता है, तब आध्यात्मिक सिद्धांतों को संदर्भित करते हुए कैसे वार्तालाप के स्तर को ऊपर उठाया जाए। अगली इकाई में, आप सोचेंगे कि अपने गाँव या मोहल्ले में एक जीवंत समुदाय के निर्माण के लिए एक सुव्यवस्थित प्रयास के भाग के रूप में कुछ विषयों पर वार्तालापों की श्रृंखला को कैसे शुरू किया जाए और उसे कैसे बनाए रखा जाए।

आने वाले भागों में हम विभिन्न विषयों पर दिए गए कथनों को देखेंगे जो, हालांकि सटीक उद्धरण नहीं हैं, पर सभी अब्दुल–बहा की वार्ताओं और पातियों पर आधारित हैं और उनके द्वारा प्रयोग किए गए कई वाक्यांशों को सम्मिलित करते हैं। आपको प्रत्येक कथन को कई बार पढ़ना चाहिए, विचारों के क्रम को पहचानना चाहिए, और अपने समूह के अन्य सदस्यों के साथ बारी–बारी से उन्हें तब तक बोलकर कहना चाहिए जब तक आप उन्हें स्वाभाविक रूप से व्यक्त न कर पाएं। यह अभ्यास आपको सहजता से बात करने के लिए तैयार होने में सहयोग करेगा जब आप एक चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए प्रभुधर्म की शिक्षाओं से मदद लेना उचित समझते हैं।

निश्चित ही, आप इस इकाई में, पवित्र लेखों से अंशों को कंठस्थ करना जारी रखेंगे, क्योंकि उनमें एक विशेष शक्ति है जो मानव हृदय और इच्छाशक्ति को भेदती है, जब आप इसे अपनी वाणी में पिरोते हैं, तब श्रोता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। फिर भी वार्तालाप में पवित्र लेखों को उद्धरित करने के लिए विवेक की आवश्यकता होती है। जो आवश्यक है वह है संयम, अर्थात प्रभुधर्म की शिक्षाओ को समझाने के लिए पवित्र लेखों से सीधे उद्धरित करने और अपने स्वयं के शब्दों के उपयोग करने के बीच संतुलन। इस संतुलन को प्राप्त करने के लिए, आपको पवित्र लेखों के अध्ययन के लिए बहुत समय और ऊर्जा समर्पित करने की और उनके द्वारा अपने विचारों और भावनाओं को आकार देना संभव बनाने की आवश्यकता है।

भाग 2

पहला कथन जिसका अध्ययन करने के लिये आपको कहा जा रहा है वह मानवजाति के लिए एक शिक्षक की आवश्यकता के संबंध में है।

> जब हम अस्तित्व पर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि खनिज, वनस्पति, पशु और मानव जगत, प्रत्येक को एक शिक्षक की आवश्यकता है। एक बगीचे को माली की जरूरत होती है। भरपूर फसल देने के लिए जमीन को किसान की जरूरत होती है। मनुष्य को यदि जंगल में छोड़ दिया जाये तो वह पशुओं का रास्ता अपना लेगा। यदि उसे शिक्षित किया जाये तो वह उपलब्धियों की महानतम ऊंचाईयों को प्राप्त कर सकता है। यदि शिक्षक नहीं होते तो सभ्यता नहीं होती।

शिक्षा तीन प्रकार की होती हैः भौतिक, मानवीय और आध्यात्मिक। भौतिक शिक्षा शरीर के विकास से संबन्धित होती है। मानवीय शिक्षा सभ्यता और प्रगति से सम्बन्धित होती है। यह प्रशासन, सामाजिक व्यवस्था, जन परोपकार, उद्योग एवं व्यापार, कला और विज्ञान, महत्वपूर्ण आविष्कारों और महान खोजों से सम्बन्धित होती है। आध्यात्मिक शिक्षा का सम्बन्ध दिव्य पूर्णतायें प्राप्त करने से होता है। यही सच्ची शिक्षा है, क्योंकि इसकी सहायता से मनुष्य की आध्यात्मिक प्रकृति, उच्च प्रकृति का विकास होता है।

प्रगति करने के लिए, मानवता को एक ऐसे शिक्षक की आवश्यकता है जिसको भौतिक, मानवीय और आध्यात्मिक शिक्षक के रूप में स्पष्ट प्राधिकार प्राप्त हो। यदि कोई कहता है कि "मुझे अत्यधिक बुद्धिमत्ता प्राप्त है, और ऐसे शिक्षक की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है," तो वह स्पष्ट तथ्य को अस्वीकार कर रहा होगा। यह ऐसा ही होगा जैसे कोई बच्चा कहे "मुझे किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं; मैं अपनी समझ और बुद्धिमत्ता के अनुसार कार्य करूंगा और मैं स्वयं ही उत्कृष्टता को प्राप्त करूंगा।"

मानवता को हमेशा एक ऐसे परिपूर्ण शिक्षक की आवश्यकता रही है जो शरीर के पोषण और स्वास्थ्य से सम्बन्धित विषयों को संयोजित करने में सहायता करे, उसे ज्ञान, आविष्कार और खोज, और, उससे भी महत्वपूर्ण, उसमें चेतना के वास्तविक जीवन की श्वांस फूंक सके। कोई भी साधारण व्यक्ति इन विकट कार्यों को पूरा नहीं कर सकता। सिर्फ ईश्वर के प्रकटरूप के पास ही इन्हें पूरा करने की शक्ति है। ये चुनी हुई आत्मायें होती हैं जो समय–समय पर मानवता का सार्वभौमिक शिक्षक बनने के लिए ईश्वर द्वारा भेजी जाती हैं।

1. अपने समूह में कई बार इस कथन को पढ़ें और इसकी विषय वस्तु को अच्छी तरह से सीखने में एक दूसरे की मदद करें। प्रस्तुत विचारों से संबंधित एक दूसरे से आपको प्रश्न पूछने चाहिए और उन्हें स्वाभाविक रूप से और आसानी से व्यक्त करने का अभ्यास करना चाहिए।

2. इसके बाद, अपने समूह में चर्चा करें कि जिन विचारों को आपने यहाँ व्यक्त करना सीखा है, उन्हें बातचीत में कैसे प्रस्तुत किया जा सकता है। जाहिर है आप अपने मित्रों से अचानक यह नहीं कहेंगे कि शिक्षा तीन प्रकार की होती है। आप के लिए तब उन प्रकार की बातचीत के बारे में सोचना उचित होगा जिनमें उपरोक्त विचार प्रासंगिक साबित होंगे। शायद चर्चा का मुद्दा समाज की नैतिक गिरावट या दुनिया की भलाई के लिए कैसे काम करना है। उन विविध वार्तालापों पर चिंतन करें जिनमें आप मित्रों, परिवार के सदस्यों और परिचितों के साथ जुड़ते हैं। उन मुद्दों में से जिनके बारे में वे सोचते रहते हैं, क्या कोई ऐसा है जो इस कथन में दिए गए विचारों के आसपास चर्चा के लिए अनुकूल है ?

3. जिन विषयों पर आपने अभी अध्ययन किया है, उन विषयों पर बातचीत में अक्सर सवाल उठते हैं। यदि आप से कोई पूछे कि "आप जिनकी बात कर रहे हैं उनमें से कुछ शिक्षक कौन हैं" तो आप क्या जवाब देंगे ?

4. नीचे मानवजाति के लिए एक शिक्षक की आवश्यकता से सम्बन्धित बहाउल्लाह के लेखों से कुछ उद्धरण हैं। उन पर चिंतन करें और कम से कम एक कंठस्थ करें। इस प्रकार आप पवित्र लेखों के अंशों को जब उपयुक्त हो तब अपने वाणी में मिलाकर अपने सुनने वालों के हृदयों को प्रभावित करने योग्य हो जायेंगे।

"सभी मनुष्यों का जन्म सदा विकसित हो रही सभ्यता को आगे ले जाने के लिए हुआ है।"[1]

"गुणगान हो उस एकमेव सत्य ईश्वर का जिसका मनुष्यों के बीच अवतरित होने का उद्देश्य उन रत्नों को उजागर करना है, जो उनके सच्चे अन्तःकरण में छिपे पड़े हैं ..."[2]

"अपने अवतारों को पृथ्वी पर भेजने का ईश्वर का उद्देश्य दोहरा होता है। पहला, अज्ञान के अन्धकार से मनुष्यों की सन्तानों को मुक्त कराना और सही समझ के प्रकाश की ओर उनका मार्गदर्शन करना। दूसरा, मानवता के बीच शांति और सुव्यवस्था सुनिश्चित करना तथा वे सभी साधन देना, जिनसे ये स्थापित हो सकें।"[3]

"हर समय और हर परिस्थिति में मनुष्य को एक ऐसे की आवश्यकता होती है जो उन्हें प्रेरित करे, दिशानिर्देश, आदेश और शिक्षा दे।"[4]

भाग 3

निम्नलिखित अनुच्छेद यह बताते हैं कि किस प्रकार ईश्वर सिर्फ उसके प्रकटरूपों के माध्यम से ही जाना जा सकता है और मित्रों से बात करने के दौरान आपके लिए सहायक होंगे :

असीम ब्रह्माण्ड के विषय में सोचें। क्या यह संभव है कि एक सृजनकर्ता के बिना इसका निर्माण हुआ होगा ? अथवा, क्या सृजनकर्ता की वास्तविकता को उसके द्वारा रचित रचना समझ सकती है? यदि हम सम्पूर्ण सृष्टि को देखें तो पायेंगे कि जो भी निम्न स्तर का है वह उच्च स्तर की शक्ति को समझने में असमर्थ होता है। तो पत्थर और पेड़, जितना भी विकसित हो जाएँ, कभी भी देखने और सुनने की शक्तियों की कल्पना नहीं कर सकते। पशु कभी भी मनुष्य की वास्तविकता को समझ नहीं सकता और मानव आत्मा की शक्तियों से अवगत नहीं हो सकता। अतः इसी प्रकार हम, जो सृजित हैं, सृजनकर्ता की वास्तविकता को कैसे समझ सकते हैं ?

यद्यपि हमारी समझ कभी ईश्वर तक नहीं पहुंच सकती, हम ईश्वर को जानने से वंचित नहीं हैं। समय–समय पर एक विशिष्ट जन धरती पर प्रकट होता है जो ईश्वर का प्रकटरूप है। सभी पूर्णता, वदान्यता और भव्यता जो भी ईश्वर में हैं वह पवित्र प्रकटरूप में देखे जा सकते हैं, साफ दर्पण में चमकते सूर्य की भांति। ऐसा कहना कि ये दर्पण सत्य के सूर्य को प्रकट करता है, का अर्थ यह नहीं है कि सूर्य अपनी महिमा की ऊंचाइयों से नीचे उतर कर दर्पण में समा गया है। इसी प्रकार, ईश्वर पवित्रता के स्वर्ग से अस्तित्व के इस जगत पर नहीं

उतरता। इसका अर्थ यह है: मानवता ईश्वर के नामों, गुणों और पूर्णताओं के विषय में जो भी जानती है और खोज पाती है वह उसके पवित्र प्रकटरूपों को इंगित करता है।

1. इस कथन को अपने समूह में कई बार पढ़ने और इसकी विषय वस्तु के बारे में एक दूसरे के प्रश्नों के उत्तर देने के बाद, आपको इन विचारों को सहजता के साथ कहने का अभ्यास करना चाहिए।

2. अब अपने समूह में चर्चा करें कि आपने जो विचार यहाँ सीखे हैं उसे कैसे स्वाभाविक रूप से एक वार्तालाप में शामिल कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यह आसानी से ईश्वर के अस्तित्व अथवा जीवन के उद्देश्य के बारे में चर्चा में किया जा सकता है। आपके परिवार और मित्रों के बीच बातचीत के दौरान उठे अन्य विषय और प्रश्न कौन से हैं जो आपको इन विचारों को साझा करने की संभावना प्रदान करेंगे ?

____

____

____

____

____

3. मान लीजिए कि, अपने दोस्तों के साथ एक वार्तालाप में, आपके पास उन विचारों को पेश करने का अवसर मिलता है जिन्हें आपने अभी अध्ययन किया है। यदि उनमें से कोई आपसे यह प्रश्न पूछे तो आप कैसे उत्तर देंगे: ”उनमें से कुछ चीजें क्या हैं जो हम ईश्वर के बारे में उसके प्रकटरूपों के माध्यम से जानते हैं ?”

____

____

____

4. आप बहाउल्लाह के लेखों के निम्नलिखित अंशों में से एक या एक से अधिक कंठस्थ करना चाह सकते हैं, ताकि इस विषय पर जब आप मित्रों के साथ बात करें तब उन्हें उद्धृत कर सकें :

”वह जो सभी वस्तुओं का आदिबिन्दु है, को जानना और उसकी निकटता प्राप्त करना असम्भव है, सिवाय इसके कि उन्हें जाना जाए और उनके निकट पंहुचा जाए जो ’सत्य के सूर्य’ से प्रकटित ’प्रकाश–पुंज’ हैं।“[5]

”प्रकटरूप हमेशा ईश्वर का प्रतिनिधि और प्रवक्ता रहा है। वह, सत्य ही, ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ उपाधियों का दिवाबसंत और उसके उदात्त गुणों का उदयस्थल है।“[6]

”तुम आश्वस्त रहो, प्रभु के प्रत्येक प्रकटरूप के कार्य और क्रियाकलाप तथा जो कुछ भी उनसे सम्बन्धित है और भविष्य में वे जो भी प्रकट करेंगे, वे सब ईश्वर द्वारा आदेशित हैं तथा उसकी ही इच्छा और उद्देश्य के प्रतिबिम्ब हैं।“[7]

भाग 4

धर्म की एकात्मकता कई लोगों के लिए रुचि का विषय है, और निम्नलिखित विचार आपको कई अवसरों पर सहायता करेंगे :

> हमें अवश्य ही प्रकाश का प्रेमी होना चाहिये, चाहे वह किसी भी दीप से क्यों न आये। हमें अवश्य ही गुलाब का प्रेमी होना चाहिये, चाहे वह किसी भी बगीचे में खिले। हमें अवश्य ही सत्य का अन्वेषक होना चाहिए, चाहे वह किसी भी स्रोत से प्रकट हो। अगर हम किसी एक दीप से आसक्त हो जायेंगे तो दूसरे दीप से आते प्रकाश की प्रशंसा नहीं कर पायेंगे। सत्य को खोजने के लिये स्वयं को अपने समस्त विचारों और पूर्वकल्पित धारणाओं से अवश्य ही मुक्त कर लेना चाहिए। हमें अपने पूर्वाग्रहों और तुच्छ इच्छाओं को त्याग देना चाहिए। यदि हमारा प्याला स्व से भरा हुआ है तो उसमें जीवन जल के लिए कोई स्थान नहीं है।
>
> धर्म दुनिया का प्रकाश है। यह हमारे कदमों का मार्गदर्शन करता है और हमारे लिए अनन्त खुशियों के द्वार खोलता है। जब हम हठधर्मी मान्यताओं और अंधानुकरण की बंदिशों से मुक्त होकर सभी महान धर्मों की शिक्षाओं की जाँच–पड़ताल करते हैं, तो हमें पता चलता है कि उन सभी का आधार एक ही है। वे सभी ईश्वर के ज्ञान को प्रकट करते हैं। वे मानव जगत की उन्नति चाहते हैं।
>
> निश्चित रूप से, समय और स्थान की आवश्यकताओं के अनुसार प्रत्येक धर्म द्वारा प्रचारित सामाजिक कानूनों और नियमों के बीच विभिन्नताएँ हैं। लेकिन अपने सार में सभी धर्म एक हैं। वे आस्था, ज्ञान, निश्चितता, न्याय, धर्मनिष्ठा, उच्च विचारधारा, विश्वसनीयता, ईश्वर का प्रेम और परोपकारिता विकसित करते हैं। वे पवित्रता, अनासक्ति, विनम्रता, सहनशीलता, धैर्य और दृढ़ता सिखाते हैं। इन मानवीय गुणों को प्रत्येक धर्मयुग में नवीनीकृत किया जाता है।
>
> यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि, पूर्वाग्रहों और अंधानुकरण के कारण, कई लोग धर्म की अंतर्निहित एकात्मकता को नहीं देख पा रहे हैं। मानवजाति के लिए ईश्वर का मार्गदर्शन सत्य है, और सत्य का कोई विभाजन नहीं है; यह एक है। यदि हम पूर्वकल्पित धारणाओं को किनारे रख कर, स्वतंत्र रूप से सत्य की जांच करते हैं, तो हमारी खोज एकता की ओर ले जाएगी। धर्म को हमारे बीच एकता लानी चाहिए; इसे लोगों के बीच प्रेम के बंधन स्थापित करने चाहिए। यदि यह शत्रुता और कलह का कारण बन जाता है, तो इसका ना होना बेहतर है।

1. पिछले भाग की भांति ही, आपको अपने समूह में कई बार इस कथन को पढ़ना चाहिए, एक दूसरे से इन विचारों से संबंधित प्रश्न पूछने चाहिए, और उन्हें अच्छी तरह से व्यक्त करने का अभ्यास करना चाहिए।

2. अपने समूह में विचार करें कि आप अध्ययन किए विचारों को एक वार्तालाप में कैसे शामिल कर सकते हैं, जैसे, धार्मिक संघर्ष के बारे में, जो कि अक्सर लोगों के मन में होता है। लेकिन आप खुद को कई मित्रों के बीच भी पा सकते हैं जो अधिप्रचार से अप्रभावित रह सत्य की जांच करने के महत्व पर चर्चा कर रहे हैं। मित्रों और पड़ोसियों, सहकर्मियों और परिचितों के साथ अपने हाल की वार्तालापों पर फिर से विचार करें। उनके मन में कुछ मुद्दे क्या हैं जो इन विचारों के आसपास एक चर्चा से लाभान्वित होंगे ?

3. आप कैसे जवाब देंगे यदि वार्तालाप में ऊपर दिए गए विचारों को साझा करने के बाद, किसी ने आपसे पूछा, "सभी धर्मों में एक जैसे कुछ सत्य क्या हैं ?"

4. यह सुझाव दिया जाता है कि आप बहाउल्लाह के लेखों से निम्नलिखित में से एक या दो अंशों को कंठस्थ कर लें :

"इसमें कोई संदेह नहीं कि विश्व के लोग, चाहे किसी भी नस्ल अथवा धर्म के क्यों न हों, अपनी प्रेरणा एक ही दिव्य स्रोत से प्राप्त करते हैं और एक ही प्रभु के आधीन हैं।"[8]

"सभी धर्मों के अनुयायियों के साथ मित्रतापूर्ण और बन्धुत्व की भावना से मेल–जोल रखो।"[9]

"ईश्वर की आस्था तथा उसके धर्म का मूलभूत उद्देश्य जो उसे अनुप्राणित करता है वह है मानवजाति के हितों की रक्षा तथा एकता को बढ़ाना ...।"[10]

"ईश्वर का धर्म प्रेम और एकता के लिए है; इसे शत्रुता और मतभेद का कारण मत बनाओ।"[11]

भाग 5

अगला विषय जिसका अध्ययन करने के लिए कहा जा रहा है वह है विज्ञान और धर्म के बीच संबंध।

धर्म और विज्ञान के बीच सहमति होनी चाहिए। ईश्वर ने हमें तर्क शक्ति प्रदान किया है ताकि हम समझ सकें कि सत्य क्या है। विज्ञान और धर्म दोनों से ही तर्क के मानकों को पूरा करने की अपेक्षा की जाती हैं। इसलिए, उन्हें एक–दूसरे के साथ सहमत होना चाहिए। वे दो पंख हैं जिन पर मानव बुद्धिमत्ता महान ऊंचाइयों तक पहुँच सकती है, दो पंख जिनके साथ मानवजाति उड़ान भर सकती है। एक पंख पर्याप्त नहीं है।

विज्ञान ईश्वर का एक उपहार है। यह भौतिक जगत के नियमों को खोजता है और हमें उन सीमाओं को पार करने में सक्षम बनाता है जो प्रकृति ने हमारे ऊपर लगाई हैं। वैज्ञानिक उपकरणों की सहायता से, आंखों से न दिखने वाली चीजों को हम देख पाते हैं और एक ही क्षण में बहुत दूरी पर बात कर सकते हैं। विज्ञान वर्तमान और अतीत को एक कर देता है

और भविष्य के रहस्यों में प्रवेश करता है। एक जनसमुदाय की प्रगति वैज्ञानिक उपलब्धियों पर निर्भर करती है।

ईश्वर का धर्म सत्य का प्रवर्तक, ज्ञान का समर्थक और मानवजाति का सभ्यकर्ता है। धर्म के बिना, विज्ञान भौतिकवाद को आगे बढ़ाने का मात्र एक उपकरण बन जाता है, जो अंततः निराशा की ओर ले जाता है। जब धर्म विज्ञान का विरोध करता है, तो यह केवल अंधविश्वास बन जाता है। यदि धर्म और विज्ञान सदभाव में एक साथ चलें तो मानवजाति को दुःख देनेवाली अधिकांश घृणा और कड़वाहट ख़त्म हो जाएगी।

1. हमेशा की तरह, अपने समूह में, इस कथन को, एक–एक अनुच्छेद कर, कई बार पढ़ें, और एक दूसरे से तब तक सवाल पूछें जब तक आप स्वाभाविक रूप से विषय वस्तु को सहजता से व्यक्त करना नहीं सीख जाते।

2. आप कैसे किसी को उत्तर देंगे जो कहता है : "धर्म अतीत की बात है; विज्ञान मानवता की सभी समस्याओं को हल करेगा।" क्या आपके लिए यह स्पष्ट करना उपयोगी होगा कि धर्म और अंधविश्वास एक ही नहीं है, लेकिन यह विज्ञान के बिना ऐसा हो जाता है, और धर्म के बिना वही विज्ञान भौतिकवाद से पैदा हुई निराशा की ओर जाता है ? क्या आप इसका उदाहरण दे पाएंगे कि यह कैसे होता है ?

____

____

____

____

____

3. यह सुझाव दिया जाता है कि आप बहाउल्लाह के लेखों से निम्नलिखित में से एक या अधिक अंशों को कंठस्थ करें :

इन कृपाओं में सर्वप्रथम सर्वदयालु द्वारा प्रदत्त कृपा है समझ का उपहारै। ... यह उपहार मनुष्य को समस्त वस्तुओं में सत्य को खोजने की शक्ति देता है, उसे सत्य की राह पर ले जाता है तथा सृष्टि के रहस्यों को खोजने में सहायता देता है।"[12]

"संसार को देखो और इस पर थोड़ी देर के लिये विचार करो। यह तुम्हारी आँखों के समक्ष अपनी पुस्तक खोलता है और वह प्रकट करता है जो तुम्हारे स्वामी, सर्वश्रेष्ठ रचनाकार, सर्वसूचित की लेखनी ने इसमें अंकित किया है।"[13]

"मनुष्य के जीवन के लिए ज्ञान पंख समान है, और ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ी है। इसका अर्जन सभी के लिए परमावश्यक है।"[14]

भाग 6

मानवजाति की एकात्मकता ऐसा विषय है जो आज हर जगह के लोगों के हृदय में गूँज रहा है और कई लोग आपसे नीचे दिये गए विचारों पर चर्चा करना पसंद करेंगे :

एक बगीचा जिसमें विभिन्न रंगों और सुगंधों के फूल साथ–साथ उगते हैं, आँखों को अच्छे लगते है। भिन्न होने के बावजूद प्रत्येक फूल को एक ही वर्षा से ताजगी और एक ही सूर्य से गर्मी प्राप्त होती है। मानवता के विषय में भी यही सत्य है। यह विभिन्न जातियों और रंगों से बनी है। लेकिन सभी एक ही ईश्वर से आते हैं और सभी का उद्‌गम एक है। यह विभिन्नता मानव परिवार में प्रेम और सदभाव का कारण होना चाहिए, जैसे संगीत में विभिन्न सुर मिलकर एक पूर्ण राग बनाते हैं।

अस्तित्व के लिए एकता आवश्यक है। प्रेम जीवन का मूल कारण है। भौतिक संसार में सभी चीजों के तत्व आकर्षण के नियम के कारण एक साथ बंधे होते हैं। आकर्षण के नियम के कारण कुछ तत्व मिलकर एक सुन्दर फूल बनाते हैं। मगर जब यह आकर्षण हटा दिया जाये तो वह फूल सड़ जायेगा व अस्तित्व में नहीं रहेगा। ऐसा ही मानवता के साथ है। आकर्षण, सदभाव और एकता वह शक्तियां हैं जो मानव को एक साथ बांधे रखती हैं।

बहाउल्लाह ने विश्व के सभी लोगों को एक करने के लिए एक रूपरेखा तैयार की है। हमें लोगों को एकता के इस दायरे में लाने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिए। जब हम विभिन्न जातियों, राष्ट्रों, धर्मों और मतों के लोगों से मिलते हैं तो हमें इन विभिन्नताओं को आपस में बाधा नहीं बनने देना चाहिए। हमें उन्हें मानवता के खूबसूरत बगीचे में खिलने वाले विभिन्न रंगों के गुलाबों की भाँति सोचना चाहिए और उनके बीच रहने में प्रसन्न होना चाहिए।

1. जैसा कि आपने पिछले के साथ भी किया था उपरोक्त कथन का अध्ययन करने के बाद, अपने आस–पास होने वाले कई वार्तालापों के बारे में सोचें। लोगों के मन में कुछ ऐसे मुद्दे कौन से हैं जो आपके लिए इन विचारों को उनके साथ साझा करने की संभावना को खोलेंगे ?

____

____

____

____

2. मानवजाति की एकात्मकता पर एक वार्तालाप हमारे अपने समुदाय में एकता के महत्व के बारे में चर्चा शुरू कर सकता है। क्या आप इस बारे में कुछ शब्द कह सकते हैं कि हममें से प्रत्येक इसमें कैसे योगदान दे सकता है ?

____

____

____

3. आप निम्नलिखित में से एक या अधिक अंश याद करना चाह सकते हैं ताकि आप अपने मित्रों के साथ इस विषय पर बोलते समय इनका उल्लेख कर सकें :

"एकता का मण्डप–वितान फैला दिया गया है, तुम एक दूसरे को अपरिचितों की भाँति न समझो। तुम एक ही वृक्ष के फल और एक ही शाखा की पत्तियाँ हो।"[15]

"एकता का प्रकाश इतना शक्तिशाली है कि यह सम्पूर्ण धरा को आलोकित कर सकता है।"[16]

"एकता की ओर अपनी दृष्टि करो और इसके प्रकाश की चमक अपने ऊपर चमकने दो। तुम एक साथ मिलो और ईश्वर के लिये उन सबको जड़ से उखाड़ फेंकने का संकल्प लो जो तुम्हारे बीच विवाद का कारण बनता हो।"[17]

"मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि वह उससे दृढ़ता से जुड़ा रहे, जो सदभाव, दयालुता और एकता को प्रोत्साहन दे।"[18]

भाग 7

निम्नलिखित कथन आपको न्याय के विषय पर चर्चा में योगदान करने में मदद करेगा, जो अधिकांश लोगों के लिए बहुत चिंता का विषय है :

लोगों की क्षमता में भिन्नता मानव अस्तित्व के मूल में है। यह सम्भव नहीं कि सभी लोग हर प्रकार एक समान हों। तथापि मानव क्रियाकलाप पूरी तरह न्याय के सिद्धान्त द्वारा प्रशासित होने चाहिए। न्याय अवश्य ही पवित्र होना चाहिए और सभी लोगों के अधिकारों की रक्षा अवश्य होनी चाहिए।

न्याय सीमित नहीं है, यह एक सार्वभौमिक गुण है। मानव जीवन के हर भाग में यह लागू होना चाहिए। समाज के प्रत्येक सदस्य को सभ्यता के लाभ का आनन्द मिलना चाहिए क्योंकि हम सभी मानवता रूपी शरीर के सदस्य हैं। यदि इस शरीर का एक अंग विक्षोभ या कष्ट में हो तो सभी को अवश्य ही कष्ट होता है। जब एक कष्ट में हो तो दूसरे कैसे आराम से रहेंगे ? आज के समाज में आवश्यक पारस्परिक आदान प्रदान एवं सामन्जस्यता का अभाव है। यह समुचित व्यवस्थित नहीं है। ऐसे विधानों और सिद्धांतों की आवश्यकता है जो समस्त मानव परिवार के कल्याण और प्रसन्नता को सुनिश्चित करेंगे।

न्याय पुरस्कार और दण्ड के स्तम्भों पर आधारित होता है। दैवीय दंड से भय रहित, आस्था विहीन जनों द्वारा चलाई जा रही सरकारें अन्यायपूर्ण कानूनों को लागू करेंगी। यदि उत्पीड़न को रोकना है तो पुरस्कार की आशा और दण्ड का भय दोनों की आवश्यकता है। विधान बनाने और उसे कार्यरूप देने वालों को अपने निर्णय के आध्यात्मिक परिणामों के प्रति अवश्य सचेत होना चाहिए। शासक जो मानते हैं कि उनके कार्यों के परिणाम उनका पीछा इस सांसारिक जीवन से परे भी करेंगे और जो जानते हैं कि उनके न्याय को ईश्वरीय न्याय की तुला में तौला जाएगा, निश्चित रूप से अत्याचार और उत्पीड़न से बचेंगे।

1. एक बार जब आपने उपरोक्त विचारों को स्वाभाविक रूप से व्यक्त करना सीख लिया है, तो इस बात पर विचार करें कि वार्तालाप के कौन से विषय वक्तव्य की अंतर्दृष्टियों से लाभान्वित होंगे।

2. आप किसी ऐसे व्यक्ति को कैसे जवाब देंगे जो मानता है कि अन्याय कभी खत्म नहीं होगा।

3. नीचे बहाउल्लाह के पवित्र लेखों से न्याय से संबंधित कुछ उद्धरण दिए गए हैं जिन्हें कंठस्थ करने के लिए आपको प्रोत्साहित किया जाता है।

"मनुष्यों का प्रकाश न्याय है। उत्पीड़न और निरंकुशता की विरोधी हवा से इसे मत बुझाओ। न्याय का उद्देश्य मनुष्यों के मध्य एकता का प्रकटीकरण है।"[19]

"किसी भी दीप्ति की तुलना न्याय से नहीं की जा सकती। विश्व की व्यवस्था और मानवजाति की शान्ति इसी पर निर्भर करती है।"[20]

"विश्व को जो प्रशिक्षित करता है वह न्याय है क्योंकि यह पुरस्कार और दण्ड के दो स्तंभों पर टिका है। ये दो स्तम्भ विश्व के लिए जीवन के स्रोत हैं।"[21]

भाग 8

अमीर और गरीब के बीच की खाई हर बीतते दिन के साथ विस्तृत हो रही है, और नीचे दिए गया कथन आपको इस पर और संबंधित विषयों पर मित्रों के साथ बातचीत करने में मदद करेगा।

> आज पारस्परिक आदान प्रदान एवं सामन्जस्यता के सम्बन्धों के अभाव के कारण, समाज के कुछ सदस्य सन्तुष्ट हैं, ऐशो–आराम में रह रहे हैं जबकि दूसरे भोजन और आवास से अभावग्रस्त हैं। कुछ अत्यधिक समृद्ध है और अन्य अत्यंत ग़रीबी में गुज़ारा कर रहे है।
>
> समाज के विधान इस प्रकार निर्मित और लागू किए जाने चाहिए कि यह सम्भव ही न हो कि कुछ अत्यधिक धन संग्रहीत कर सकें और अन्य दरिद्र हों। इसका मतलब यह नहीं है कि सभी अवश्य ही समान हों, क्योंकि अंश और क्षमता में अंतर सृष्टि में अंतर्निहित है। लेकिन धन की शोचनीय विपुलता के साथ हतोत्साहित विपन्नता को खत्म किया जा सकता है। यदि किसी पूंजीपति द्वारा संपत्ति रखना सही हो, तो यह भी उतना ही न्यायपूर्ण है कि श्रमिक के पास जीवन यापन के पर्याप्त साधन हों। जब हम अत्यधिक विपन्नता देखते हैं, तो कहीं न कहीं हम अत्याचार भी पाएंगे।
>
> मामले का सार यह है कि दैविक न्याय मानव परिस्थितियों में अवश्य ही प्रकट होना चाहिए। संपूर्ण आर्थिक स्थिति के मूल तत्व प्रकृति में दैविक हैं और हृदय एवं आत्मा के जगत से जुड़े

हैं। अमीरों को अपनी विपुलता में से बांटना चाहिए; उन्हें अपने ह्रदय को नरम करना चाहिए और एक दयालु बुद्धिमत्ता विकसित करनी चाहिए। ह्रदय अवश्य ही एक साथ ऐसे जुड़ें, प्रेम इतना प्रबल हो जाए कि अमीर पूर्ण स्वेच्छा से पूर्णकालिक आर्थिक समायोजन स्थापित करने के लिए कदम उठाने लगें। वे खुद महसूस करें कि यह ना तो न्यायपूर्ण है और न ही वैध कि उनके पास अत्यधिक सम्पदा हो, जबकि समुदाय में घोर गरीबी है। इस तरह, वे स्वेच्छा से अपने धन को देने के इच्छुक होंगे, अपने लिए इतना रखते हुए कि वे स्वयं आराम से जीवनयापन कर सकें।

1. कथन को पढ़ें और हर बार की तरह ही अपने समूह में इसका अध्ययन करें। लोगों के मन में कई मुद्दे हैं जो संपत्ति और गरीबी से संबंधित हैं – रोजगार, वेतन, आवास, इनमें से कुछ हैं। क्या आप कुछ अन्य विषयों के बारे में सोच सकते है जिन पर चर्चा इस कथन के विचारों से लाभान्वित होगी ?

____

____

____

____

2. आप क्या उत्तर देंगे यदि कोई व्यक्ति जिसने आपको ऊपर दिए गए विचारों को देते समय सुना है, वह आपसे निम्नलिखित प्रश्न पूछता है : 'क्या आप कह रहे हैं कि अमीर सख्त कर नियमों को समझेंगे और समर्थन करेंगे, और वे स्वेच्छा से भुगतान करेंगे जो उन्हें वास्तव में करना चाहिए ? आपको कैसे लगता है कि यह संभव है ?'

____

____

____

3. यह सुझाव दिया जाता है कि आप बहाउल्लाह के पवित्र लेखों के इन उद्धरणों में से एक या दो को याद करें :

"... तुम अवश्य ही उत्तम और अदभुत फल उत्पन्न करो, ताकि उनसे तुम स्वयं तथा अन्य लाभ पा सकें। इसलिए प्रत्येक के लिए यह आवश्यक है कि शिल्प तथा व्यवसायों में उद्यमशील रहे, क्योंकि इसी में धन–धान्यता का रहस्य है। हे समझ योग्य मनुष्य !"[22]

"तुम्हारे नेत्र यदि दया की ओर उन्मुख हों तो तुम उन वस्तुओं को त्याग दो जो तुम्हें लाभ पहुंचाती हैं और उसमें लग जाओ जिससे मानवमात्र लाभान्वित हो।"[23]

"धन्य है वह जो स्वयं से पहले अपने भाई को प्राथमिकता देता है।"[24]

"कोई भी अच्छा कार्य, कभी खत्म नहीं होगा, परोपकारिता के खजाने ऐसे कार्य करने वालों के लाभ के लिए ईश्वर के पास संरक्षित हैं।"[25]

"संयम की सीमाओं को न लांघो अपनी गणना पथभ्रष्टों में न कराओ।"[26]

भाग 9

नीचे कुछ विचार दिए गए हैं जो पूर्वाग्रह के विषय पर चर्चा में भाग लेने में आपकी सहायता करेंगे।

पूर्वाग्रह अपने सभी रूपों में – धार्मिक, नस्लीय, लिंग, जातीय, आर्थिक – मानवता के भवन को नष्ट कर देता है और ईश्वर की आज्ञाओं के विरुद्ध है। हजारों वर्षों से मानवता इन पूर्वाग्रहों में से किसी न किसी के कारण युद्ध और रक्तपात से पीड़ित रही है। जब तक वे बने रहेंगे, मानवता को शांति नहीं मिलेगी।

ईश्वर ने अपने अवतारों को प्रेम और एकता की स्थापना के एकमात्र उद्देश्य के लिए भेजा है। सभी दैवीय पुस्तकें प्रेम के लिखित शब्द है। यदि वे मनमुटाव का कारण साबित होते हैं, तो वे फलहीन हो गए हैं। इसलिए, विशेष रूप से धार्मिक पूर्वाग्रह ईश्वर की इच्छा और आज्ञा के विपरीत है।

राष्ट्रीय पूर्वाग्रह किसी तरह से उचित नहीं ठहराया जा सकता। पृथ्वी एक धरा है, एक देश है। राष्ट्रों को अलग करने वाली रेखाएँ और सीमाएँ काल्पनिक हैं; वे ईश्वर द्वारा नहीं बनाए गए थे। लोग एक नदी को दो देशों के बीच एक सीमा रेखा घोषित करते हैं, प्रत्येक किनारे को एक नाम देते हैं, जबकि नदी दोनों के लिए बनाई गई थी और सभी के लिए एक प्राकृ तिक धमनी है। क्या यह कल्पना और अज्ञानता नहीं है जो जीवन की वदान्यताओं को युद्ध और विनाश का कारण बनाने के लिए लोगों को उत्तेजित करती है ?

नस्लीय पूर्वाग्रह कुछ और नहीं बल्कि अंधविश्वास है। किसी व्यक्ति की त्वचा का रंग जलवायु और पर्यावरण के अनुसार समय के साथ उसके पूर्वजों के अनुकूलन का परिणाम है। चरित्र ही मानवता की सच्ची कसौटी है। उत्कृष्टता नस्ल और रंग पर निर्भर नहीं करती। आस्था, हृदय की पवित्रता, अच्छे कर्म और प्रशंसनीय भाषा ही वह हैं जो ईश्वर की दहलीज पर स्वीकार्य हैं।

सबसे लंबे समय तक, महिलाओं को पुरुषों के अधीन रखा गया और उन पर अत्याचार किए गए हैं। पुरुष और महिला के बीच अंतर भौतिक दुनिया की एक आवश्यकता है; आत्मा की दुनिया में वे समान हैं। ईश्वर के आकलन में, पुरुष और महिला में कोई भेद नहीं है। सभी मानव जाति को उसने बुद्धि और समझ के साथ संपन्न किया गया है। सभी में सद्‌गुणों को प्राप्त करने की क्षमता है। आज ऐसी कोई परिस्थिति नहीं है जिसमें किसी व्यक्ति का लिंग भेदभाव करने के लिए आधार प्रदान करता है।

पुराने विधान(ओल्ड टेस्टामेंट) के शब्दों के अनुसार, ईश्वर ने कहा है, "हम मनुष्य को अपनी छवि और अपने प्रकार बनाएँगे।" यह स्पष्ट रूप से महिलाओं पर भी लागू होता है। मनुष्य की रचना ईश्वर की छवि में की गई है; कहने का तात्पर्य यह है कि दैवीय गुण मानवीय वास्तविकता में परिलक्षित और प्रकट होते हैं। यह समस्त मानवता के लिए सत्य है। यह दावा करना कितना अनुपयुक्त है कि केवल एक ही रंग, जातीयता या राष्ट्रीयता की रचना ईश्वर की छवि में की गई है। यह मानना कि केवल अमीर में ईश्वर की छवि है या यह सोचना कि ईश्वर से समीपता के लिए समाज में उच्च सीान एक कसौटी है, कितना बेतुका है। मानवता पूर्वाग्रहों के त्याग और आभा साम्राज्य की नैतिकता के अर्जन के बिना प्रदीप्ति प्राप्त नहीं कर सकती।

1. इस कथन का अध्ययन पिछले कथनों की भांति ही करें और फिर अपने मित्रों और पड़ोसियों द्वारा वार्तालाप के दौरान बताई गई कुछ चुनौतियों के बारे में सोचें जो पूर्वाग्रह उन्मूलन की मांग करती हैं।

____

____

____

____

2. उपरोक्त विचारों को आपके द्वारा साझा करते हुए कोई श्रोता आपसे पूछता है कि 'क्या हमारे पास पूर्वाग्रह हैं और इनके बारे में हमें पता भी न हो ?' तो आप क्या जवाब देंगे :

____

____

____

3. आपको इन विचारों पर अपनी चर्चाओं में बहाउल्लाह के पवित्र लेखों से निम्नलिखित उद्धरणों में से कोई ना कोई शामिल करने का अवसर मिल सकता है।

"पृथ्वी एक देश है, और मानवजाति इसके नागरिक"[27]

"दुनिया के सभी पौधे एक ही वृक्ष से उत्पन्न हुए हैं, और सभी बूंदें एक ही महासागर से, और सभी प्राणियों को अस्तित्व एक ही से प्राप्त हैं।"[28]

"सच्चे अर्थों में वही मानव है जो सम्पूर्ण मानवजाति की सेवा के लिये आज स्वयं को समर्पित करता है।"[29]

"एक अच्छे चरित्र का प्रकाश सूर्य के प्रकाश और उसकी चमक को भी पार करता है।"[30]

"मनुष्य की विशिष्टता आभूषण या समृद्धि में नहीं, अपितु गुणी व्यवहार एवं सच्ची समझ में है।"[31]

"ईश्वर करे सभी परिस्थितियों में आपको अंधविश्वास की मूर्तियों का खण्डन और मानवों की व्यर्थ कल्पनाओं के पर्दे जलाने की कृपा और सहायता मिले।"[32]

"सभी मनुष्यों में सर्वाधिक लापरवाह व्यक्ति वह है जो बैठा–बैठा विवाद करता है और अपने भाई से स्वयं को आगे बढ़ाना चाहता है।"[33]

भाग 10

स्त्री और पुरुष की समानता पर मित्रों से बातचीत के दौरान आप अनेक बार निम्नलिखित कथन के विचारों से लाभ उठा पाएंगें :

भौतिक सूर्य अपने प्रकाश और ताप के द्वारा पृथ्वी की सभी चीजों की वास्तविकता को प्रकट करता है। वृक्ष में छिपे फल सूर्य की शक्ति के प्रत्युत्तर में शाखाओं पर प्रकट हो जाते हैं। इसी प्रकार आध्यात्मिक आकाश में अपनी पूरी भव्यता से दीप्तिमान सत्य के सूर्य ने ऐसी वास्तविकताओं को प्रकट किया है जो अतीत में स्पष्ट नहीं थीं। इसीलिए इस युग में स्त्री एवं पुरुष की समानता का नियम पूर्णतया मान लिया गया है और अब एक स्थापित तथ्य है।

बहाउल्लाह ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि ईश्वर की दृष्टि में पुरुष और स्त्री में कोई भेद नहीं है। असमानता की स्थिति जो युगों से चली आ रही थी वह पुरुष की उच्चता के कारण नहीं बल्कि मात्र इसलिए थी कि महिलाओं को अपनी क्षमता के विकास के समान अवसर नहीं मिले थे। इतिहास में अनगिनत महिलाओं के जीवन दर्ज हैं जिन्होंने उनके प्रति पूर्वाग्रहों के बावजूद महानतम उपलब्धियाँ अर्जित की हैं।

ऐसी एक महिला फारस की कवियत्री ताहिरा थी। उनका जन्म 1800 के दशक के शुरुआती दौर में एक ऐसे देश में हुआ था जहाँ महिलाएँ पूरी तरह से पुरुषों के अधीन थीं। वह ईश्वर के नए प्रकटीकरण के सत्य को स्वीकार करने वाली पहली महिला थीं। जब उन्होंने नये दिवस के उदय को देखा, वह आश्वस्त हो गईं कि स्त्री और पुरुष की समानता की वास्तविकता को स्वीकार करने का समय आ गया था। उन्होंने अपनी ऊर्जा को इस सत्य की घोषणा के लिए समर्पित कर दिया। उनके ज्ञान और उनकी वाक्पटुता ने उनके समय के ज्ञानी पुरुषों को भी हैरान कर दिया। यद्यपि एक निरंकुश, राजा एवं एक अज्ञानी एवं अहंकारी धर्माधिकारी की सारी शक्ति उनके विरूद्ध थी फिर भी क्षणमात्र को भी वह सत्य बोलने से नहीं झिझकी और अन्ततः उन्होंने अपना जीवन उस नये धर्म के लिए बलिदान कर दिया जिसे उन्होंने इतनी दृढ़ता से अपनाया था।

जो ईश्वर की मंशा नहीं है उसमें विश्वास करना अज्ञानता और अंधविश्वास है। आज स्त्रियों को शिक्षित होने और मानव कार्यों के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ समानता का दर्जा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होना चाहिए। जब तक आध्यात्मिक लोक की भाँति इस संसार में भी स्त्री और पुरुष की समानता एक वास्तविकता नहीं बन जाती, मानवजाति का वास्तविक विकास सम्भव नहीं है।

1. आपको हमेशा की तरह अपने समूह में इस कथन का अध्ययन और विचारों को कहने का अभ्यास करना चाहिए। क्या आपसे हाल ही में अपने मित्रों के साथ कोई बातचीत हुई है जो इसमें दी अंतर्दृष्टि से लाभान्वित हुई ? चर्चा के तहत क्या मुद्दे थे ?

____

____

____

____

2. अगर महिलाओं को प्रयासों के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ एक समान स्थान प्राप्त करना है तो आज के समाज में प्रचलित कुछ मान्यताएँ और रवैये क्या हैं जिन्हें बदलना होगा ?

3. आपके लिए इस विषय से सम्बन्धित बहाउल्लाह के लेखों से निम्नलिखित उद्धरणों को कंठस्थ करना उपयोगी होगा :

"स्त्री और पुरुष हमेशा से ईश्वर की दृष्टि में समान रहे हैं और हमेशा समान रहेंगे।"[34]

"क्या तुम नहीं जानते कि हमने तुम सबको एक ही मिट्टी से क्यों उत्पन्न किया है ? ताकि कोई भी अपने को दूसरे से श्रेष्ठ न समझे।"[35]

"इस दिवस में दिव्य कृपा के हाथों ने समस्त विभेदों को हटा दिया है। ईश्वर के सेवक और उसकी सेविकाएँ एक ही तल पर माने जाते हैं।"[36]

भाग 11

अन्तिम कथन में आपसे सार्वभौमिक शिक्षा के विषय में अध्ययन करने के लिए कहा जा रहा है :

शिक्षा को बढ़ावा देना हमारे समय की सबसे त्वरित आवश्यकता है। कोई भीं राष्ट्र तब तक समृद्धि प्राप्त नहीं कर सकता जब तक शिक्षा को वह अपने केन्द्रीय लक्ष्यों में से एक नहीं बना लेता। किसी की अवनति का प्राथमिक कारण है ज्ञान तक पंहुँच न होना।

शिक्षा का प्रारम्भ शैशव काल में ही होना चाहिए। माता–पिता का यह कर्तव्य है कि वह अपने बच्चों को हर प्रकार से शिक्षित करने, उनके चरित्र को आध्यात्मिक व नैतिक विधानों के अनुसार परिष्कृत करने तथा कला और विज्ञान में उनका प्रशिक्षण सुनिश्चित करने का भरसक प्रयत्न करें। मातायें मानवजाति की प्रथम शिक्षिका होती हैं; वे ज्ञान के स्तन से उनका पालन–पोषण करती हैं। हर बच्चे को अवश्य ही शिक्षित करना चाहिए; यह ऐसा विषय नहीं है जिसकी उपेक्षा की की जा सकती है। यदि माता–पिता शिक्षा का खर्च उठा सकें तो उन्हें ऐसा अवश्य ही करना चाहिए। अन्यथा समुदाय को बच्चे की शिक्षा के साधन अवश्य ही उपलब्ध कराने चाहिए।

शिक्षा को हर मनुष्य में उत्कृष्टता प्राप्त करने की इच्छा विकसित करनी चाहिए। हमें मानवीय पूर्णता के प्रति अनुरक्त होना चाहिए और उसमें पूरी लगन से लगे रहना चाहिए। हमें आध्यात्मिक विशिष्टता की अभिलाषा होनी चाहिए, मानवीय संसार के गुणों–निष्ठा, वफादारी, मानवता की सेवा, प्रेम और न्याय के लिए पहचाना जाना चाहिए। सीखने को बढ़ावा देने, शांति और एकता प्रोत्साहित करने के हमारे प्रयासों के कारण विशिष्ट होने की कामना हमें करनी चाहिए। ऐसे रास्ते पर चलने के लिए लोगों को मार्गदर्शन देना ही शिक्षा का वास्तविक कार्य है।

1. अपने समूह में इस कथन का अध्ययन करने के बाद, अपने मित्रों की शिक्षा के बारे में कुछ चिंताओं को पहचानने का प्रयास करें। उपरोक्त विचार उनकी चिंताओं को कैसे संबोधित करते हैं ?

2. यह सुझाव दिया जाता है कि आप बहाउल्लाह के निम्नलिखित लेखों से एक या अधिक उद्धरणों को कंठस्थ करें :

"यह इच्छित नहीं है कि कोई व्यक्ति बिना ज्ञान और कुशलता के छोड़ दिया जाये, क्योंकि तब वह ठूंठ वृक्ष की भाँति होगा।"[37]

"अपने मनो–मस्तिष्क और इच्छा को इस धरती के लोगों की शिक्षा की ओर लगाओ ..."[38]

"कला, हस्तकला और विज्ञान मानव के संसार को उन्नत करते हैं और इसके उन्नयन हेतु सहायक हैं।"[39]

"सत्य में, ज्ञान मनुष्य के लिए वास्तविक कोष है और उसके लिए सम्मान, भव्यता, कृपा, आनन्द, प्रफुल्लता और प्रशंसा का स्रोत है।"[40]

भाग 12

शांति एक मुद्दा है जो हर किसी के दिमाग में है। इसकी अविलंब स्थापना सबसे जरूरी और महत्वपूर्ण है। अब जब आपने पूर्ववर्ती कथनों में उल्लिखित सिद्धांतों पर कुछ विचार किया है, तो आप सार्वभौमिक शांति के सवाल पर चिंतन करना लाभप्रद पा सकते है।

निश्चित ही, सरकारों के युद्ध को खत्म करने के लिए व्यावहारिक कदम उठाने पर बहुत कुछ निर्भर करता है। शांति को बढ़ाने के लिए राष्ट्रों के बीच अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के असंख्य रूपों की भांति ही विवादों को राजनीतिक समझौते से निपटाना और हथियारों को कम करना आवश्यक है। तथापि यह उपाय कितने भी महत्वपूर्ण हों, यदि पहले चर्चा किए गए सिद्धांत दुनिया भर में स्थापित नहीं होते तो यह स्थायी शांति स्थापित नहीं कर पाएंगे। जब तक लोग वास्तविकता की जांच करना नहीं सीखते और यह नहीं मानते कि सत्य एक है, हमें खुद से पूछना होगा कि क्या यह युगों पुरानी शत्रुताएँ बनी नहीं रहेंगीं ? हम सभी का मूल एक ही है। ईश्वर हम सब पर नजर रखता है और हम सभी को अपने प्रकटरूपों के माध्यम से प्रशिक्षित करता है। उनकी शिक्षाएँ प्रेम और भाईचारे की समान बुनियाद पर टिकी हुई हैं। केवल धर्म की एकता को स्वीकार करने पर ही, धार्मिक संघर्ष खत्म होंगे और धर्म की रोशनी शांति के मार्ग को प्रकाशित करेगी। हमें आगे भी पूछना चाहिए कि अज्ञानता के बादलों को दूर करने और हर प्रकार के पूर्वाग्रह की असत्यता का प्रदर्शन करने के लिए क्या विज्ञान और धर्म को सामंजस्य में रहना आवश्यक नहीं है, इनमें से प्रत्येक् शांति में शक्तिशाली बाधा है ? अभी पूछने के लिए एक और सवाल है कि दुनिया के हर कोने में अमीरों और गरीबों के बीच मौजूद असमानता को संबोधित किए बिना, क्या एक शांतिपूर्ण दुनिया का निर्माण किया जा सकता है ? जब तक महिलाओं को मानवीय प्रयासों के समस्त क्षेत्रों में पुरुषों के समान प्रवेश करने की अनुमति नहीं मिलती, अधिकाँश इतिहास को चित्रित करती हिंसा का स्थान शांति और वास्तविक सम्पन्नता नहीं ले पाएगी। आने वाली पीढ़ियों को ऐसे सिद्धांतों के अनुसार सार्वभौमिक रूप से शिक्षित किया जाना

चाहिए, अन्यथा शांति के लिए हर उम्मीद बिखर जाएगी। आप बहाउल्लाह के निम्नलिखित शब्दों को याद करना चाह सकते हैं ताकि आप उन्हें मानवता के भविष्य के लिए चिंतित जनों के साथ साझा कर सकें :

> **"मानवजाति का कल्याण, इसकी शांति और सुरक्षा तब तक प्राप्त नहीं हो सकती जब तक इसकी एकता दृढ़ता से स्थापित न हो जाये।"[41]**

REFERENCES

1. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1983, 2017 printing), CIX, par. 2, p. 243.

2. Ibid., CXXXII, par. 1, p. 325.

3. Ibid., XXXIV, par. 5, p. 89.

4. *Tablets of Bahá'u'lláh Revealed after the Kitáb-i-Aqdas* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1988, 2005 printing), no. 11.1, p. 161.

5. Bahá'u'lláh, *The Kitáb-i-Íqán: The Book of Certitude* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 2003, 2018 printing), par. 151, p. 131.

6. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh*, XXVIII, par. 2, p. 77.

7. Ibid., XXIV, par. 1, p. 66.

8. Ibid., CXI, par. 1, p. 246.

9. Ibid., XLIII, par. 6, p. 106.

10. Ibid., CX, par. 1, p. 244.

11. *Tablets of Bahá'u'lláh Revealed after the Kitáb-i-Aqdas*, no. 15.4, p. 220.

12. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh*, XCV, par. 1, pp. 219–20.

13. *Tablets of Bahá'u'lláh Revealed after the Kitáb-i-Aqdas*, no. 9.13, p. 141.

14. Ibid., no. 5.13, p. 51.

15. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh*, CXII, par. 1, pp. 247–48.

16. Ibid., CXXXII, par. 3, p. 326.

17. Ibid., CXI, par. 1, p. 246.

18. *Tablets of Bahá'u'lláh Revealed after the Kitáb-i-Aqdas*, no. 7.20, p. 90.

19. Ibid., no. 6.25, pp. 66–67.

20. Bahá'u'lláh, cited by Shoghi Effendi, *The Advent of Divine Justice* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 2006, 2018 printing), par. 42, p. 41.

21. *Tablets of Bahá'u'lláh Revealed after the Kitáb-i-Aqdas*, no. 3.23, p. 27.

22. Bahá'u'lláh, *The Hidden Words* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 2003, 2012 printing), Persian no. 80, p. 51.

23. *Tablets of Bahá'u'lláh Revealed after the Kitáb-i-Aqdas*, no. 6.19, p. 64.

24. Ibid., no. 6.37, p. 71.

25. Bahá'u'lláh, in *Ḥuqúqu'lláh—The Right of God: A Compilation of Extracts from the Writings of Bahá'u'lláh and 'Abdu'l-Bahá and from Letters Written by and on Behalf of Shoghi Effendi and the Universal House of Justice*, compiled by the Research Department of the Universal House of Justice (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 2007), no. 16, p. 16.

26. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh*, CXVIII, par. 2, p. 283.

27. Ibid., CXVII, par. 1, p. 282.

28. Bahá'u'lláh, cited by Shoghi Effendi, *The Promised Day Is Come* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1996, 2018 printing), par. 279, p. 187.

29. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh*, CXVII, par. 1, p. 282.

30. *Tablets of Bahá'u'lláh Revealed after the Kitáb-i-Aqdas*, no. 4.11, p. 36.

31. Ibid., no. 6.3, p. 57.

32. Ibid., no. 6.3, p. 58.

33. *The Hidden Words*, Persian no. 5, pp. 23–24.

34. Bahá'u'lláh, in *Women: Extracts from the Writings of Bahá'u'lláh, 'Abdu'l-Bahá, Shoghi Effendi and the Universal House of Justice*, compiled by the Research Department of the Universal House of Justice (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1986, 1997 printing), no. 54, p. 26.

35. *The Hidden Words*, Arabic no. 68, p. 20.

36. Bahá'u'lláh, in the compilation *Women*, no. 3, p. 3.

37. Bahá'u'lláh, in *Excellence in All Things: A Compilation of Extracts from the Bahá'í Writings*, compiled by the Research Department of the Universal House of Justice (London: Bahá'í Publishing Trust, 1981, 1989 printing), no. 5, p. 2.

38. *Gleanings from the Writings of Bahá'u'lláh*, CLVI, par. 1, p. 378.

39. Bahá'u'lláh, *Epistle to the Son of the Wolf* (Wilmette: Bahá'í Publishing Trust, 1988, 2016 printing), p. 26.

40. *Tablets of Bahá'u'lláh Revealed after the Kitáb-i-Aqdas*, no. 5.13, p. 52.

41. Gleanings *from the Writings of Bahá'u'lláh*, CXXXI, par. 2, p. 324.

दृढ़ीकरण विषय वस्तु

उद्देश्य

आध्यात्मिक महत्व की विषय वस्तुओं पर चर्चा हेतु मित्रों व पड़ोसियों का भ्रमण करने की आदत विकसित करना

भाग 1

यह तीसरी इकाई, पिछली इकाई की तरह ही, उन सामर्थ्यों से संबंधित हैं जो हमें अर्थपूर्ण और उल्लसित करने वाली वार्तालाप शुरू करने में सक्षम बनाती हैं। दूसरी इकाई में हमने उन कई अवसरों पर ध्यान दिया था जो आध्यात्मिक सिद्धांतों का संदर्भ देकर वार्तालाप के स्तर को ऊपर उठाने के लिए खुद को प्रस्तुत करते हैं। यहां हम मित्रों और पड़ोसियों के घरों पर समुदाय के जीवन के लिए महत्वपूर्ण विषयों के बारे में मिलकर अन्वेषण करने के लिए हमारे द्वारा किए जाने वाले भ्रमणों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

दुनिया भर के गांवों और मोहल्लों में, मित्रों के समूह परस्पर संबंधित गतिविधियों के समुच्चयों में सघन रूप से संलग्न हैं, जिनमें नियमित भक्तिपरक सभाएं, बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा के लिए कक्षाएं, किशोरों की बैठकें, अध्ययनवृत्त कक्षाएँ, और युवा शिविर और विभिन्न प्रकार के अभियान शामिल हैं। जैसे–जैसे गतिविधि का यह पैटर्न एक स्थानीय समुदाय में जड़ें जमाता है और जैसे–जैसे बढ़ती संख्या में लोग खुद को सेवा के कार्यों में समर्पित करते हैं, मित्रों के नाभिक की संख्या और शक्ति बढ़ती जाती है। गाँव या मोहल्ले के अधिक से अधिक घरों में भ्रमण करने का एक प्रणालीबद्ध कार्यक्रम अब गति पकड़ रही समुदाय निर्माण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है। इस तरह के भ्रमणों के दौरान विविध विषयों को संबोधित किया जाता है। उदाहरण के लिए, बच्चों की बहाई कक्षा के एक शिक्षक को शिक्षा से संबंधित विषयों पर चर्चा करने के लिए बच्चों के माता–पिता को कई बार मिलना चाहिए। इसी तरह अनुप्रेरकों और सहशिक्षकों के रूप में सेवा दे रहे लोगों को एक मनुष्य के जीवन में संभावनाओं से भरे इन वर्षों के साथ जुड़ी चुनौतियों और अवसरों से संबंधित विषयों पर चर्चा करने के लिए किशोरों और युवाओं के घरों में भ्रमण करने की आवश्यकता है। प्रभुधर्म के बारे में उनके ज्ञान को गहरा बनाने वाले विषयों पर एक परिवार के सदस्यों के साथ वार्तालाप भी उतना ही आवश्यक सिद्ध होता है। कुल मिलाकर, समुदाय में उभरती हुई साहचर्य की संस्कृति पर इस तरह के भ्रमणों के प्रभाव को कम करके आंका नहीं जा सकता है।

भाग 2

इस इकाई के लिए, हम एक काल्पनिक मोहल्ले को देखेंगे जिसमें ऊपर वर्णित प्रक्रिया आगे बढ़ रही है, और हम इसका उपयोग उस प्रकार के वार्तालापों की जांच करने के लिए संदर्भ के रूप में करेंगे जो एक घर में भ्रमण के दौरान हो सकती है।

एलेहांड्रा एक युवा महिला है जो विश्वविद्यालय के तीसरे वर्ष में है। वह और उसका एक भाई, जो एक छात्र है, अपने माता–पिता के साथ उसी मोहल्ले में, जिस घर में वे पैदा हुए थे और बड़े हुए थे, में रहते हैं, जिसकी हम कल्पना कर रहे हैं,। वे चार लोग और एक युवा दंपति जो हाल ही में मोहल्ले में रहने आए हैं प्रति सप्ताह प्रार्थना करने और उनके आस–पास की लगभग 8,000 की आबादी के साथ स्थापित हो रही गतिविधियों की प्रगति पर परामर्श करने के लिए मिलते हैं। इन साप्ताहिक बैठकों में समय–समय पर तीन अन्य लोग भाग ले रहे हैं और प्रणालीबद्ध तरीके से न केवल अपने सेवा कार्यों की बल्कि संपूर्ण समुदाय–निर्माण प्रक्रिया के बारे में भी सोचना शुरू करते हैं: छह महीने पहले शुरू हुई बच्चों की कक्षा का एक शिक्षक और सत्रह साल के दो युवा जो एक किशोर समूह के प्रयासों का मार्गदर्शन एलेहांड्रा के एक बड़े भाई की सहायता से कर रहे हैं, जो उनके खुद के समूह का अनुप्रेरक था जब वे कम उम्र के थे और नियमित रूप से अपने माता–पिता से मिलने आता है।

वार्तालापों का पहला समुच्चय जिसकी हम जांच करेंगे वह एलेहांड्रा और, मोहल्ले में जाने माने और सम्मानित, सांचेज परिवार के बीच होता है। पति और पत्नी साठ साल के आसपास के हैं और, अपने बेटे और बेटियों को पाल–पोसने के बाद, वे एलेहांड्रा के घर से कुछ ही घर दूर अकेले रहते हैं। श्री और श्रीमती सांचेज को पढ़ना लिखना आता हैं, लेकिन उन्होने बहुत अधिक औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की है। उन्हे सभी लोगों का जो सम्मान मिलता है वह उनके विवेक के कारण है जो उन्होंने उदारता और शुद्ध कर्मों से भरे जीवन में अनुभव के माध्यम से प्राप्त किया है। वे कुछ समय से बहाई शिक्षाओं से अवगत हैं, लेकिन सिर्फ हाल ही में उन्होंने गंभीरता से उनके बारे में खोज करने का निर्णय लिया। एक सप्ताह पहले, उन्होंने एलेहांड्रा के माता–पिता से बहाई समुदाय में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की। उनका स्वागत करने के लिए एक बैठक की योजना पहले ही बनाई जा चुकी है और, इसके अलावा, इस बात पर भी सहमति बनी है कि एलेहांड्रा कई सप्ताह के लिए नियमित रूप से उनके साथ विषय वस्तुओं की एक श्रृंखला साझा करेगी जो उन्हें प्रभुधर्म के बारे में उनके ज्ञान को और गहरा करने में मदद करेंगी। इन भ्रमणों के वृत्तांतों को पढ़ कर, आप इन विषय वस्तुओं का अन्वेषण करने में और साथ ही वैसे अवसरों पर वार्तालाप की गत्यामकता पर चिंतन करने में भी सक्षम होंगे।

भाग 3

श्री और श्रीमती सांचेज के साथ अपने पहले वार्तालाप को एलेहांड्रा ने नीचे दिए गए संक्षिप्त विवरण पर आधारित ईश्वर की शाश्वत संविदा के विषय पर करने की योजना बनाई है।

> समस्त चीजों का सृजनकर्ता ईश्वर है, एकमेव, अतुलनीय, स्वयंजीवी। बहाउल्लाह हमें सिखाते हैं कि ईश्वर का सार मानव मन के लिए अबोध्य है, क्योंकि सीमित असीमित को नहीं समझ सकता। लोग उसका जो चित्रण करते हैं वे उनकी खुद की कल्पनाओं का परिणाम है। ईश्वर मनुष्य नहीं है, और न ही वह महज एक शक्ति है जो पूरे ब्रह्माण्ड में फैली है। हमारे अस्तित्व के दिव्य स्रोत को संबोधित करने के लिए दिव्य पिता, दिव्य शक्ति, महान चेतना जैसे जिन शब्दो का हमें प्रयोग करना पड़ता है, वह मानवीय भाषा में उसके नामों या गुणों को व्यक्त करते हैं और वे पूरी तरह उसका वर्णन करने के लिए अपर्याप्त है।
>
> निगूढ़ वचन में हम पढ़ते हैं :
>
> **"हे मनुष्य के पुत्र ! तेरा सृजन मुझे प्रिय था इसलिए मैंने तेरी रचना की। अतः तू मुझसे प्रेम कर ताकि मैं तेरे नाम की चर्चा करूँ और तेरी आत्मा को जीवन की चेतना से भर सकूँ।"**[1]
>
> इस अंश में, बहाउल्लाह हमें कहते हैं कि ईश्वर का प्रेम ही हमारे अस्तित्व का कारण है। हमें हमेशा इस प्रेम के प्रति सचेत रहना चाहिए, जो हमारी रक्षा करता है, हमें पोषित करता है, और हमें जीवन की चेतना से भर देता है। कठिनाइयों के क्षण हों या आराम के, उदासी के हों या आनन्द के, हमें याद रखना चाहिए कि उसका प्रेम सदैव हमारा आलिंगन करता है।
>
> बहाई शिक्षाओं से, हम सीखते हैं कि, अपने प्रेम के कारण हमारी रचना करने के बाद, ईश्वर ने हमारे साथ एक संविदा स्थापित की है। "संविदा" शब्द का अर्थ है दो या दो से अधिक लोगों के बीच समझौता या वादा। शाश्वत संविदा के अनुसार, सर्वकृपालु रचयिता हमें कभी अकेला नहीं छोड़ता, और समय–समय पर, अपने एक प्रकटरूप के माध्यम से अपनी इच्छा और अपना उद्देश्य हमें अवगत कराता है।

"प्रकट करना" एक क्रिया शब्द है जिसका अर्थ है प्रत्यक्ष करना, कुछ ऐसा दिखाना जो पहले ज्ञात नहीं था। ईश्वर के प्रकटरूप वे विशिष्ट जन हैं जो हमारे समक्ष ईश्वर के शब्द प्रकट करते हैं। वे सार्वभौमिक शिक्षक हैं जो हमें सिखाते हैं कि ईश्वर की इच्छा के अनुसार कैसे जीवन यापन करना चाहिए तथा कैसे सच्ची खुशी प्राप्त की जाए। इन प्रकटरूपों में से कुछ हैं कृष्ण, अब्राहम, मूसा, जरथुस्त्र, बुद्ध, ईसा, मोहम्मद, और, निसंदेह, मानव इतिहास के इस युग के लिए ईश्वर के युगल प्रकटरूप बाब एवं बहाउल्लाह।

अतः ईश्वर की शाश्वत संविदा में, उसका भाग हमेशा पूरा होता रहा है। एक बुनियादी प्रश्न जो हम सभी को खुद से पूछना चाहिए, वह है "मैं इस संविदा का अपना भाग कैसे पूरा करूं ?" इसका उत्तर जो सभी धार्मिक शास्त्रों में हमें मिलता है, वह हैः ईश्वर के प्रकटरूप को पहचान कर और उनकी शिक्षाओं का पालन कर। यह प्रत्युत्तर हमारे जीवन के ही उद्देश्य की ओर इशारा करता है, जो है ईश्वर को जानना और उसकी आराधना करना। लघु अनिवार्य प्रार्थना में, हम घोषणा करते हैं :

"मैं साक्षी देता हूँ, हे मेरे ईश्वर, कि तुझे जानने और तेरी आराधना करने हेतु तुने मुझे उत्पन्न किया है। मैं इस क्षण अपनी शक्तिहीनता एवं तेरी शक्तिमानता, अपनी दरिद्रता तथा तेरी सम्पन्नता का साक्षी हूँ।

"तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, तू ही है संकटों में सहायक, स्वयंजीवी।"[2]

चूँकि हमारे लिए ईश्वर को उसके प्रकटरूपों के माध्यम के बिना जान पाना असंभव हैं, एक मात्र तरीका जिसके द्वारा हम अपने जीवन के उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं वह है उन्हें पहचानना और उनकी शिक्षाओं का पालन करना। आज, हमारे हृदय एक ऐसे समय में जीने की वदान्यता के लिए कृतज्ञता से भावभिवोर हैं जब सभी पवित्र पुस्तकों में किया गया वादा, कि पृथ्वी पर शांति और न्याय स्थापित होगा, पूरा हो रहा है। बहाउल्लाह कहते हैं :

"यह वह दिवस हैं, जब ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ अनुकम्पाओं की वर्षा मानवजाति पर की गई है, वह दिवस जब समस्त सृजित वस्तुओं में उसकी अनन्त कृपा भर दी गई है। दुनिया के समस्त जनों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने मतभेदों को भुला दें और पूर्ण एकता और शांति के साथ ईश्वर के संरक्षण तथा प्रेमपूर्णदया के वृक्ष तले शरण लें।"[3]

इससे पहले कि हम अपनी कहानी को जारी रखें, आपको उपरोक्त स्पष्टीकरण पढ़ना चाहिए और अपने समूह के अन्य प्रतिभागियों के साथ हर एक अनुच्छेद पर चिंतन करना चाहिए। आप एक दूसरे से प्रश्न पूछ सकते हैं और उनका एक साथ जवाब दे सकते हैं, जब तक कि आप में से प्रत्येक स्वाभाविक रूप से और आसानी से विचारों को व्यक्त करने में सक्षम न हो जाये। उद्धरणों को अच्छी तरह कण्ठस्थ करना विशेषकर महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इस तरह की चर्चाओं में पवित्र लेखों से लिए गए अंशों को साझा करना अपरिहार्य है। निम्नलिखित अभ्यास आपको इस भाग में प्रस्तुत विचारों के बारे में और उद्धृत अंशों के अर्थ पर सोचने में मदद करेंगे :

1. आप किसी को कैसे समझाएंगे कि ईश्वर एक अज्ञात सार है ? ऊपर दिया गया पहला अनुच्छेद इस संबंध में आपके लिए मददगार होना चाहिए।

____

____

2. ईश्वर ने हमारी रचना क्यों की है ? ______________________________

3. "संविदा" शब्द का क्या अर्थ है ? ______________________________

4. ईश्वर ने मनुष्य के साथ शाश्वत संविदा में क्या वादा किया है ? ______________________________

5. हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है ? ______________________________

6. यदि हम कभी ईश्वर के सार को नहीं जान सकते, तो इसका क्या अर्थ है कि हमारे जीवन का उद्देश्य ईश्वर को जानना है ? ______________________________

7. "प्रकट" शब्द का क्या अर्थ है ? ______________________________

8. ईश्वर के कुछ प्रकटरूपों के नाम बतायें। ______________________________

9. यदि हम संविदा का अपना भाग पूरा करना चाहते हैं तो हमारे लिए क्या आवश्यक है ? ___

10. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें :

क. इस दिवस में ईश्वर की ______________________________ मानवजाति पर की गई है।

ख. इस दिवस में ____________________ ईश्वर की ____________________ भर दी गई है।

ग. इस दिवस में, हमें ______________ भुला देना चाहिए, और, पूर्ण एकता और शांति के साथ ______________________________।

11. बहाउल्लाह दुनिया के लोगों से क्या करने के लिए कहते है ? ______________________

____

____

भाग 4

एलेहांड्रा मात्र उस विषय की सामग्री के बारे में ही नहीं सोच रही है जो वह श्री और श्रीमती सांचेज के साथ साझा करने की योजना बना रही है। वह इस जोड़ी के साथ मित्रता का एक मजबूत बंधन बनाने की उम्मीद करती है। अपने खुद के अनुभव से, वह दोनों पूर्वाग्रह और एक दंभपूर्ण अभिवृत्ति के द्वेषपूर्ण प्रभावों को जानती है। इनसे वह स्वाभाविक रूप से बचेगी; उसकी उच्च शिक्षा ने उसकी विनम्रता को कम नहीं किया है। उसके हृदय में सांचेज दंपत्ति के लिए सच्चे प्रेम और सम्मान के अलावा और कुछ भी नहीं है। जैसे–जैसे वह विचार करती है कि वह पहले विषय की व्याख्या कैसे करेगी, वह खुद को याद दिलाती है कि यह एक लगातार होने वाली वार्तालापों की शुरुआत है जो कई हफ्तों में अनावृत होगी। वह मानती है कि, हालांकि विचारों के अनुक्रम को स्पष्टता के साथ प्रस्तुत करना महत्वपूर्ण है, उसे इस दंपत्ति की प्रतिक्रिया सुनने के लिए कुछ बिंदुओं पर रुकना चाहिए। "मुझे घबराने से बचने की कोशिश करनी चाहिए," वह खुद से कहती है, "क्योंकि उस समय मैं ही बोलती रहती हूं, और इससे वार्तालाप को आगे बढ़ने का मौका नहीं मिलेगा।" एलेहांड्रा इन विचारों के साथ कुछ समय के लिए अपने भ्रमण के बारे में सोचना जारी रखती है। यदि आप उसकी जगह पर होते, तो निम्नलिखित में किन विचारों का आप अपने मन में आना उचित समझेंगे ?

_______ यह मेरा काम है कि धर्म के बारे में सांचेज़ो को निर्देश दूं और यह सुनिश्चित करूं कि मैं जो कुछ भी उन्हें सिखाती हूँ वे उसे सीखें।

_______ इस अद्‌भुत दंपत्ति के साथ कुछ समय बिताने का मौका मिलना और उनके साथ पवित्र लेखों के अंशों को साझा करना मेरा कितना सौभाग्य है।

_______ मुझे पता है कि यह भ्रमण महत्वपूर्ण है। फिर भी, आशा करती हूँ कि इसमें अधिक समय न लगे क्योंकि मेरे पास करने के लिए अन्य काम भी हैं।

_______ उनके लिए यह उद्धरण बहुत कठिन होंगे। मुझे केवल कुछ सरल विचार उन्हें बताने चाहिए। जरूरी यह है कि उनके प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार दिखाया जाए।

_______ उनकी इस उम्र में, सांचेज दंपत्ति बहुत कुछ नहीं सीख सकते।

_______ मुझे इस भ्रमण का और उनकी अंतर्दृष्टियों को सुनने का इंतजार है जैसे–जैसे हम इस विषय वस्तु पर चर्चा करेंगे और इन उद्धरणों पर चिंतन करेंगे।

_______ वे पढ़ सकते हैं। मैं केवल विषय वस्तु का परिचय दूँगी और उनके पास खुद से अध्ययन करने के लिए इन उद्धरणो को छोड़ दूँगी।

_______ विचारों को प्रस्तुत करते समय, मुझे अक्सर रुकना होगा ताकि हम एक साथ उद्धरणों का अध्ययन कर सकें और इसके बारे में परामर्श कर सकें।

_______ मुझे आशा हैं कि मैं बिना किसी रुकावट के पूरे विषय वस्तु को प्रस्तुत कर पाऊँगी और अंत में उनसे पूछ सकूंगी कि क्या उनके पास कोई प्रश्न है।

क्या आप अन्य मनोभावों के बारे में सोच सकते हैं जो इस तरह की भ्रमण की तैयारी में होने या नहीं होने चाहिए ?

भाग 5

एलेहांड्रा का सांचेज परिवार के यहां पहला भ्रमण अच्छा रहा। दंपति उसकी घबराहट को देख लेते हैं और अपनी गर्मजोशी और दयालुता से उसे निश्चिन्त महसूस कराते हैं। वे ध्यान से सुनते हैं और, उद्धरणों पर विशेष ध्यान देते हुए, चर्चा में पूरी तरह से भाग लेते हैं। कठिनाई का एकमात्र क्षण तब आता है जब अंत में श्रीमती सांचेज अचानक एलेहांड्रा से एक प्रश्न पूछती हैं: "क्या मैं बहाई समुदाय में शामिल होकर ईसा मसीह को भूल रही हूं ?" एलेहांड्रा इसका जवाब जानती है, लेकिन इसे तैयार करने में उसे समय लगता है। श्री सांचेज मुस्कुराते हैं और उसकी सहायता के लिए आगे आ़ते हैं : "मुझे लगता है कि जबसे हमने बहाई शिक्षाओं के बारे में सीखा है ईसा मसीह के लिए मेरा प्रेम वास्तव में बढ़ गया है।" "और दुनिया भर में कई लोगों के साथ भी ऐसा ही हुआ है," एलेहांड्रा कहती है, जिसने अपने विचारों को व्यवस्थित कर लिया है। "ईश्वर की एकता, धर्म की एकता और मानवजाति की एकता के बारे में बहाउल्लाह जो सिखाते है, इसके कारण मूसा, ईसा, कृष्ण, बुद्ध, ज़रथुस्त्र, और मोहम्मद के लिए उनका प्रेम भी मजबूत हुआ है।"

आपके लिए यह उपयोगी होगा कि आप अपने समूह में कुछ ऐसे गुणों और अभिवृत्तियों पर चर्चा करें जो एलेहांड्रा के भ्रमण के दौरान मौजूद रहे ही होंगे जिसके कारण यह इतना फलदायी हो सका। उनमे से सबसे मुख्य जिसके बारे में आपको विचार करना चाहिए, वह है विनम्रता। सभी प्रकार की विनम्रताओं की नींव ईश्वर के समक्ष विनम्रता है। इसी से उसके प्राणियों के समक्ष विनम्रता उत्पन्न होती है। विनम्रता सबसे ज्यादा तब महत्वपूर्ण होती है जब हम ईश्वर के और उसके प्रकटरूपों के विषय में बात कर रहे होते हैं। आपको बहाउल्लाह के निम्नलिखित शब्दों पर चिन्तन करना चाहिए और उसे कंठस्थ करने की भरसक प्रयास करनी चाहिये :

> **"वे जो ईश्वर के प्रिय पात्र हैं, जहाँ कहीं भी एकत्रित हों और जिससे भी मिलें, प्रभु के प्रति अपनी दृष्टि, उपासना और प्रार्थना में इस प्रकार की विनम्रता और सहृदयता का परिचय दें कि उनके पाँव तले की धूल का एक–एक कण उनकी भक्ति की गहनता का प्रमाण दे। इन पावन आत्माओं द्वारा किये गये वार्तालापों का प्रभाव ऐसा हो कि उनके पाँव तले की धूल के कण भी अभिभूत हो जायें। वे इस प्रकार अपना व्यवहार रखें कि जिस धरा पर वे कार्य–व्यापार करते हों, उसे भी यह कहने का अवसर न मिल पाये : कि 'मुझे तुमसे ऊपर स्थान मिलना चाहिए क्योंकि देखो, किस धैर्य और विनम्रतापूर्वक मैं तुम्हारे भार को वहन कर रही हूँ। मैं ही वह माध्यम हूँ जिसके द्वारा सर्वकरूणा का आधार ईश्वर अपने वरदान समस्त प्राणियों तक भेजता है। फिर भी मुझे जो सम्मान दिया गया है और सम्पूर्ण सृष्टि की आवश्यकताएँ पूर्ण करने वाली जो सम्पन्नता मुझे मिली है वह मेरी विनम्रता का परिचय देती है, देखो, किस प्रकार पूर्ण समर्पण के साथ मैं मनुष्यों के पैरों तले रौंदी जाती हूँ ...।'"**[4]

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, सहजनों के समक्ष विनम्रता ईश्वर के समक्ष विनम्रता से उत्पन्न होती है। हम इसी विनम्रता के साथ एक प्रार्थनामय अभिवृत्ति धारण करते हैं जब हम एक मित्र या पड़ोसी के घर पर एक साथ कुछ विषयों के बारे में अपनी समझ को गहन करने के लिए जाते हैं।

वार्तालाप के दौरान, हम अपने विचारों को बार–बार ईश्वर की ओर मोड़ते हैं, और उससे याचना करते हैं कि वह हमारे और सभी उपस्थित लोगों के मनमस्तिस्क को प्रकाशित कर दे। प्रार्थनाओं में ऐसे कई वाक्यांश और वाक्य हैं जिन्हें हम इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर कंठस्थ कर सकते हैं। यहां केवल कुछ ही दिए गए हैं :

"हमारे ह्रदयों को प्रकाशित कर दे, हमें देखने के लिये सक्षम आँखें और सतर्क कान दे।"[5]

"हे नाथ ! अपना असीम अनुग्रह प्रदान कर और अपने मार्गदर्शन का प्रकाश चमकने दे।"[6]

"सच्ची समझ के द्वार खोल दे और आस्था के प्रकाश को दमकने दे।"[7]

"हे स्वामी ! हमारे नेत्रों को प्रकाशमान बना जिससे कि हम तेरे प्रकाश को धारण कर सकें।"[8]

"पूरे ह्रदय, मन और वचन से मैं उन्मुख हो विनयपूर्वक तुझसे याचना करता हूँ कि इस दिव्य एकता के चक्र में जो कुछ भी तेरी इच्छा के विपरीत है, उससे मेरी रक्षा कर ..."[9]

भाग 6

सांचेज परिवार के यहां गृह भ्रमण के और शाश्वत संविदा के विषय पर उनसे वार्तालाप के बाद एलेहांड्रा का ह्रदय खुशी से भर गया है। "अगला गृह भ्रमण," वह सोचती है, "उनके लिए बहाउल्लाह के जीवन के बारे में अपना ज्ञान को गहरा करने का एक अच्छा अवसर होगा।" निम्नलिखित वह प्रस्तुति है जिसकी वह मदद लेगी :

बहाउल्लाह का जन्म 12 नवम्बर सन् 1817 को फारस की राजधानी तेहरान में हुआ था। बचपन से ही उन्होंने असाधारण गुण प्रदर्शित किये, और उनके माता–पिता को पूरा विश्वास हो गया कि उनकी नियति महान थी। राजा के दरबार में एक मंत्री के विशिष्ट पद पर कार्यरत बहाउल्लाह के पिता को अपने इस पुत्र के प्रति अथाह प्रेम था। एक रात उन्होंने एक स्वप्न देखा कि बहाउल्लाह एक असीम महासागर में तैर रहे हैं। उनका शरीर चमक रहा था और विशाल सागर को प्रकाशित कर रहा था। उनके सिर के चारों ओर उनके लम्बे काले बाल चमक रहे थे और सभी दिशाओं में तैर रहे थे। असंख्य मछलियाँ उनके चारों ओर एकत्रित थीं, और प्रत्सेक ने उनके बालों के छोरों को पकड़ा हुआ था। हालांकि मछलियों की संख्या असंख्य थी, बहाउल्लाह के सिर से एक भी बाल अलग नहीं हुआ। वे स्वतंत्र और निर्बाध आगे बढ़ रहे थे, और वे सब उनके पीछे चल रही थीं। बहाउल्लाह के पिता ने सपनों का अर्थ बताने में प्रख्यात एक आदमी से इस स्वप्न का अर्थ बताने को कहा। उन्हें बताया गया कि असीम महासागर प्राणी–जगत था। बहाउल्लाह, अकेले और बिना किसी की मदद के, इन सब पर आधिपत्य प्राप्त करेंगे। अनगिनत मछलियाँ उस उथल–पुथल का प्रतीक थीं जो वे दुनिया के लोगों के बीच पैदा करेंगे। उन्हे ईश्वर की अचूक सुरक्षा प्राप्त होगी; यह कोलाहल उनको कोई हानि नहीं पहुंचाएगा।

जब तक बहाउल्लाह तेरह या चौदह वर्ष के हुए, वे शाह के दरबार में अपने विवेक और ज्ञान के लिए प्रसिद्ध हो चुके थे। वे बाइस वर्ष के थे जब उनके पिता का स्वर्गवास हो गया, और सरकार ने उनके पद के लिए बहाउल्लाह को प्रस्तावित किया लेकिन सांसारिक क्रियाकलापों के प्रबंधन में अपना समय बिताने की उनकी नीयत ही नहीं थी। सर्वशक्तिमान द्वारा निर्धारित

पथ पर चलने के लिए उन्होंने दरबार और उनके मंत्रियों को त्याग दिया। उन्होने अपना समय दलितों, बीमारों और निर्धनों की सेवा करने में बिताया, और शीघ्र ही वे न्याय के उत्साही पक्षसमर्थक के रूप में पहचाने जाने लगे।

सत्ताइस वर्ष की उम्र में, बहाउल्लाह ने, एक विशेष संदेशवाहक के माध्यम से, बाब की कुछ लेखनियां प्राप्त कीं, जो एक नए दिवस की उद्भव की घोषणा कर रहे थे, एक ऐसे दिवस की जब ईश्वर का एक नया प्रकटरूप विश्व में शान्ति, एकता, और न्याय लायेगा जिसकी प्रतीक्षा लम्बी समय से मानवजाति कर रही है। बहाउल्लाह ने तत्काल बाब के संदेश को स्वीकार कर लिया और उनके सबसे अधिक उत्साही अनुयायियों में से एक बन गये। लेकिन शोक इस बात का कि फारस के लोगों पर शासन करने वालों ने, अपने स्वार्थ में अन्धे होकर, अत्यधिक क्रूरतापूर्वक बाब के अनुयायियों को यातना देना प्रारम्भ कर दिया। अपनी कुलीनता के लिए माने जाने के बावजूद, बहाउल्लाह को बख्शा नहीं गया। बाब की घोषणा के कुछ आठ वर्षों के बाद, और खुद बाब की शहादत के दो वर्ष पश्चात ही, उन्हें सियाहचाल नामक एक अंधेरी कालकोठरी में कैदी बना दिया गया। उनकी गर्दन के चारों ओर डाली गई लोहे की जंजीरें इतनी भारी थीं कि वे अपना सिर तक नहीं उठा सकते थे। यहां बहाउल्लाह ने घोर कष्टों से भरे चार महीने गुजारे। लेकिन यही वह कालकोठरी थी जहां उनकी आत्मा ईश्वर की चेतना से भर गई और उन्हें यह प्रकट किया गया कि वही युगों के प्रतिज्ञापित प्रकटरूप हैं। इस अंधेरे कारागार से, समस्त सृष्टि को प्रकाशित करता हुआ बहाउल्लाह का सूर्य उदित हुआ।

अंधेरी कालकोठरी में चार महीने बीतने के बाद, बहाउल्लाह की सारी सम्पत्ति छीन ली गई, और उन्हें और उनके परिवार को देश से निकाल दिया गया। जाड़े की कड़कती ठंड में, उन्होने फारस के पश्चिमी पहाड़ों से होकर बगदाद की ओर यात्रा की, जो उस समय ओटोमन साम्राज्य का एक शहर था और जो आज ईराक की राजधानी है। शब्द उनके कष्टों का वर्णन नहीं कर सकते जैसे जैसे वे उस भाग्य–निर्धारित शहर की ओर हिम और बर्फ से ढकी जमीन पर सैकड़ों मील चलते हुए आगे बढे।

शीघ्र ही बहाउल्लाह की ख्याति पूरे बगदाद एवं उस क्षेत्र के अन्य शहरों में फैल गई, और उनके आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए अधिकाधिक लोग इस निर्वासित कैदी के द्वार पर आ गए। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी थे जो उनकी ख्याति से ईर्ष्या करने लगे। उनमें उनका अपना सौतेला भाई याह्या भी शामिल था, जो उनकी प्रेममय शरण में रह रहा था। मिर्जा याह्या के षडयंत्र के कारण बाब के अनुयायियों के बीच अनेकता आ गई और बहाउल्लाह इससे अत्यन्त दुःखी हुए। एक रात, बिना किसी को बताये, बहाउल्लाह ने अपना घर–बार छोड़ दिया और कुर्दिस्तान के पहाड़ों पर चले गये। वहां प्रार्थना तथा ध्यान में संलग्न होकर उन्होने एकांतवास जीवन व्यतीत किया। वे एक छोटी–सी गुफा में रहते थे और एकदम सादा भोजन करते थे। उस क्षेत्र में कोई भी नहीं जानता था कि वे कहां से आए हैं, और कोई भी उनका नाम नहीं जानता था। लेकिन, धीरे–धीरे उस क्षेत्र के लोग उस "गुमनाम व्यक्ति" की बातें करने लगे, एक महान संत जिसके पास ईश्वर प्रदत्त ज्ञान था। जब इस धर्मात्मा व्यक्ति के समाचार बहाउल्लाह के ज्येष्ठ पुत्र अब्दुल–बहा तक पहुँचे, तो उन्होंने अपने प्रिय पिता के चिन्हों को अविलंब पहचान लिया। कई पत्र एक विशेष दूत के हाथ भेजे गये जिसमे बहाउल्लाह से विनती की गई कि वे लौट आयें। उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया, और दुःखदायी विछोह का समय का अन्त हो गया जो दो साल चला था।

बहाउल्लाह की अनुपस्थिति में, बाबी समुदाय की हालत तेजी से गिर गई थी। पहाडों से वापसी के बाद के सात सालों में जब तक वे बगदाद में रहे, बहाउल्लाह ने पीड़ित एवं भ्रमित

बाब के अनुयायियों में एक नयी चेतना डाल दी। यद्यपि उन्होने अपने खुद के महान पद की घोषणा नहीं की थी, लेकिन उनके शब्दों की शक्ति और विवेक के कारण वे अधिकांश बाबियों की वफादारी को जीतने में और हर वर्ग के लोगों की प्रशंसा पाने में सफल हो गए थे। लेकिन हठधर्मी मुल्लाजन बड़ी संख्या में लोगों पर बहाउल्लाह के अद्‌भुत प्रभाव को सहन नहीं कर सके। वे तब तक अधिकारियों से शिकायतें करते रहे जब तक कि बहाउल्लाह को उनकी मातृभूमि से और भी दूर, इस बार कांस्टेंटिनोपल शहर में भेजने के लिए, फारस की सरकार ने आटोमन साम्राज्य के कुछ अधिकारियों के साथ हाथ न मिला लिया।

अप्रैल 1863 का महीना बगदाद वासियों के लिए बड़ा दुःखदायी था। जिनसे वे अधिक प्रेम करने लगे थे वह अब उनके शहर को छोड़कर एक अनजाने गन्तव्य की ओर जा रहा था। अपने प्रस्थान से कुछ समय पहले, बहाउल्लाह उस शहर की सीमा पर स्थित एक बाग में रहने लगे, वहाँ अपना तम्बू तान दिया और बारह दिनों के लिए आगंतुकों से मिले जो बिदा करने इकट्ठा हुए थे। बाब के अनुयायी इस बाग में भारी मन से आये; कुछ बहाउल्लाह के साथ निर्वासन के अगले चरण में जा रहे थे, हालांकि कईयों को पीछे रूकना पड़ा और उनके निकट संपर्क से वंचित होना पड़ा। मगर ईश्वर नहीं चाहता था कि यह अवसर उदासी से भरा रहे। उनकी अपार कृपा का द्वार खुल गया, और बहाउल्लाह ने वहाँ उपस्थित जनों के समक्ष उद्‌घोषणा की कि वे वही हैं जिसकी भविष्यवाणी बाब ने की थी – "वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा"। उदासी अपार खुशी में बदल गयी; हृदय उल्लास से भर गये और आत्माएँ उनके प्रेम की अग्नि से प्रज्ज्वलित हो गयीं। अप्रैल की यह बारह दिन की अवधि रिजवान के त्योहार के रूप में हर जगह मनाई जाती है, बहाउल्लाह के विश्व आलिंगनकारी मिशन की उद्‌घोषणा की वर्षगाँठ के रूप में।

कांस्टेंटिनोपल आटोमन साम्राज्य का केंद्र था। यहां भी, सिर्फ चार महीने में ही, बहाउल्लाह के महान विवेक तथा आकर्षण ने बढ़ती संख्या में लोगों को आकर्षित कर दिया। "उन्हें कांस्टेंटिनोपल में और अधिक नहीं रहने दिया जाना चाहिए", हठधर्मी मुल्लाओं ने कहा, जिन्होंने अधिकारियों को बहाउल्लाह को एड्रियानोपल के नगर में निर्वासित कराने के लिए सहमत करा लिया। एड्रियानोपल में, जहां वे साड़े चार वर्ष के लिए रूके थे, बहाउल्लाह ने विश्व के राजाओं और शासकों को यह कहते हुए पत्र लिखा कि वे अपनी क्रूरता का रास्ता छोड़ दें और अपने आपको अपने लोगों के कल्याण के लिए समर्पित कर दें। तब उनके शत्रुओं ने एक और सर्वाधिक निर्मम सजा के बारे में सोचा। उन्हें और उनके परिवार को वहा निर्वासित कर दिया जाना था, जो उस समय पूरे साम्राज्य में दुष्टतम कारा–नगरी थी। "निश्चित ही उस कारा–नगरी की भयावह परिस्थितियों में बहाउल्लाह मिट जायेंगे", तुच्छ दिमाग वालों ने सोचा जो कल्पना कर रहे थे कि वे उस योजना को रोक लेंगे जिसे ईश्वर ने स्वयं गति प्रदान की थी।

बहाउल्लाह ने अक्का में जो यातनाएँ सहीं वे इतनी असंख्य हैं कि उसका विवरण नहीं दिया जा सकता। उन्हें आराम के हर एक साधन का अभाव था और वह दिन–रात शत्रुओं से घिरे थे। मगर कैद की परिस्थिति धीरे–धीरे बदल गयी। अक्का के निवासी और उसकी सरकार निश्चिंत हो गए कि उनके शहर में निर्वासित छोटे से बहाई समूह निर्दोष थे। एक बार फिर, लोग इस अद्‌भुत व्यक्ति के विवेक एवं स्नेह के प्रति आकर्षित हो गये, हालांकि बहुतायत लोग उनके महान पद को पहचान न सके। कुछ नौं वर्षों के बाद, उस कारा–नगरी का द्वार बहाउल्लाह और उनके अनुयायियों के लिये खोल दिया गया। उनके प्रिय बेटे अब्दुल–बहा उस शहर के दीवारों के बाहर अपने पिता के रहने के लिए एक गरिमापूर्ण जगह प्राप्त कर पाए, और आखिरकार उस ग्रामीण क्षेत्र में अब्दुल–बहा के लिए एक घर किराये पर लेना

संभ्सव हो गया जहां बहाउल्लाह अपने जीवन के बाकी के तेरह वर्ष शांति और अक्षेभ में बीता सके। आज हम इस घर को बाहजी की हवेली के रूप में जानते हैं, और वहीं पर जब वे अपनी भव्यता तथा महिमा की पराकाष्ठा में थे 1892 में मई के महीने में वे दिव्यलोक सिधार गये।

बहाउल्लाह ने सर्वाभौमिक शांति तथा भाई–चारे की पताका फहराई और ईश्वरीय शब्दों को प्रकट किया। हालांकि उनके शत्रुओं ने अपनी शक्तियाँ उनके विरूद्ध संगठित कर दीं, फिर भी उन सभी के ऊपर विजयी हुए जैसा कि तेहरान के कारागार में जंजीरों के तले ईश्वर ने उनसे वादा किया था। अपने खुद के जीवन काल में, उनके सन्देश ने हजारों लोगों के हृदयों को पुनर्जीवित कर दिया। और आज, उनकी शिक्षायें पूरी दुनिया में फैल रही हैं। कुछ भी उन्हें उनके अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने से नहीं रोक सकता, जो है पूरी मानवता को एक सार्वभौमिक धर्म, एक समान आस्था में एकत्रित करना।

बहाउल्लाह के जीवन का उपरोक्त विवरण अपेक्षाकृत थोड़ा लम्बा गद्यांश है। इसलिये नीचे दिये गये अभ्यास को करने से पहले आपको इसे अपने समूह में कई बार इसके हर पैराग्राफ को पढ़ना चाहिए और एक–दूसरे से प्रश्न तब तक पूछें जब तक इसकी विषय वस्तु को भलीभाँति न समझ जायें तथा अपने शब्दों में व्यक्त न करने लगें। निम्नलिखित मानचित्र आपको बहाउल्लाह के निर्वासन के मार्ग को याद करने और रास्ते में होने वाली घटनाओं को याद करने में मदद करेगा।

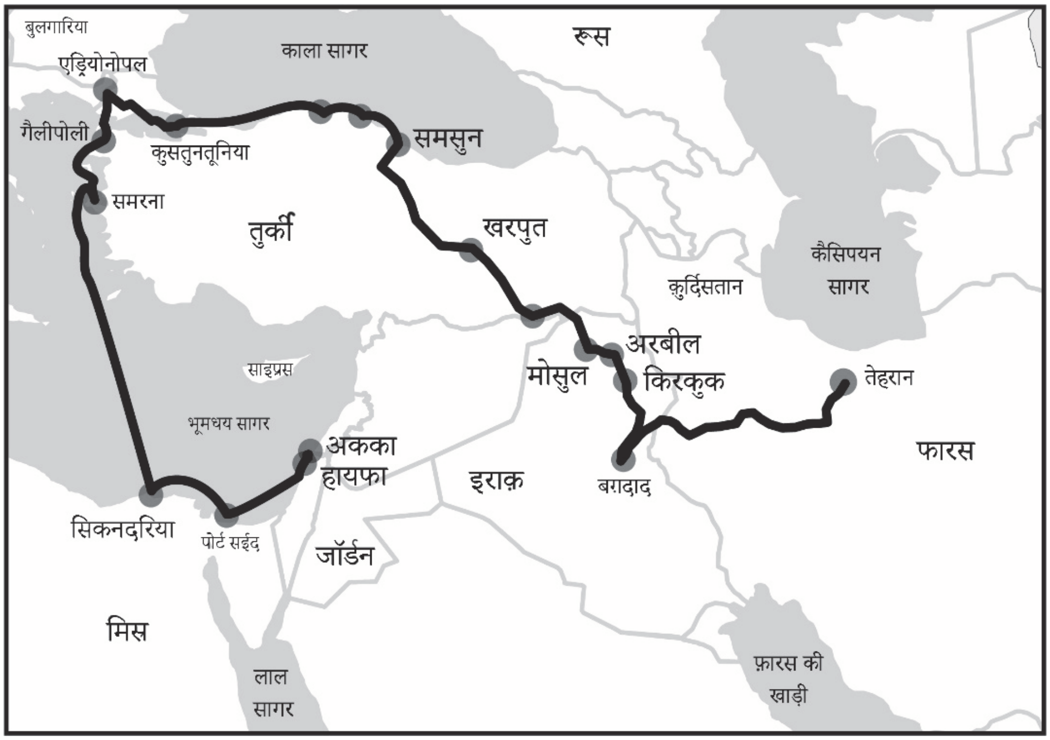

1. ऊपर दिए गए विवरण के आधार पर, बहाउल्लाह के जीवन से सम्बंधित मुख्य घटनाओं के क्रम को नीचे दिए गए स्थान पर लिखना आप उपयोगी पाएंगे :

2. बहाउल्लाह के जीवन के विषय में चर्चा से जुड़ी, घटनाओं के अनुक्रम के अलावा, कई अवधारणाएँ हैं जिन पर जोर दिया जाना आवश्यक है। विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं उस पीड़ा के बारे में चिंतन करना जो उन्होंने मानवजाति के प्रति अपने प्रेम के कारण सहीं, और इसके साथ–साथ विरोध के सम्मुख उनके धर्म द्वारा प्राप्त असाधारण विजय पर। हमें इन शब्दों को अपने दिलो–दिमाग पर बिठा देना चाहिए :

"प्राचीन सौन्दर्य ने बन्धनयुक्त होना स्वीकार किया ताकि मानवजाति अपनी दासता से बंधनमुक्त हो सके, उसने स्वयं इस परम महान कैद में बंदी बनना स्वीकार किया ताकि सम्पूर्ण विश्व सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त कर सके। उसने दुःख के प्याले की बूंद–बूंद पी ली ताकि विश्व के सभी जनों को शाश्वत आनन्द मिल सके। यह सर्वकृपालु, सर्वदयालु ईश्वर की दया ही है। हे ईश्वर की एकता में विश्वास करने वालों ! हमने स्वयं को अपमानित होने दिया ताकि तुम गौरव पा सको, हमने अनन्त यातनाएँ सहीं ताकि तुम सुखी और सम्पन्न बन सको। जो विश्व के नवनिर्माण के लिए आया है, देखो, जो ईश्वर के साथी बने हैं किस प्रकार उन्होंने उसे सर्वाधिक निर्जन शहर में निवास करने के लिए बाध्य कर दिया है।"[10]

3. जब हम बहाउल्लाह ने कष्ट के बारे में बात करते हैं, हमें इसका ध्यान रखना चाहिए कि उन्हें उनके शत्रुओं के सामने एक असहाय के रूप में न प्रस्तुत कर दें। मानवता को बंधनमुक्त करने के लिए उन्होंने जंजीरों में बंधना स्वेच्छा से स्वीकार किया। उनके जीवन की गाथा, यद्यपि घोर यातनाओं से भरी है, परन्तु यह अपने सार में विजय गाथा है। क्या आप उनके जीवन के बारे में अपने वर्तमान ज्ञान के आधार पर अपने समूह के सहशिक्षक की सहायता से

बहाउल्लाह की यातनाओं और विजयों पर एक छोटा वक्तव्य तैयार कर सकते हैं ? नीचे दिए गए प्रश्न आपके लिए सहायता के हो सकते हैं।

अ. बहाउल्लाह ने जंजीरों में बंधना क्यों स्वीकार किया ? ______________________

____

ब. बहाउल्लाह ने क़ैदी बनना क्यों स्वीकार किया ? ______________________

____

स. बहाउल्लाह ने दुःख का प्याला पीना क्यों स्वीकार किया ? ______________________

____

द. बहाउल्लाह ने अपमानित होना क्यों स्वीकार किया ? ______________________

____

च. बहाउल्लाह ने इतनी यातनायें क्यों सहीं ? ______________________

____

छ. क्या बहाउल्लाह ने कष्टों को इसलिए स्वीकार किया क्योंकि वे कुछ करने में असहाय थे ?

____

____

ज. यदि बहाउल्लाह असहाय नहीं थे तो उन्होंने इन कष्टों को स्वीकार क्यों किया ? ____

____

____

भाग 7

एलेहांड्रा का सांचेज परिवार के घर में दूसरा भ्रमण पहले की तरह ही आनंदमयी है। श्री और श्रीमती सांचेज पहले से ही बहाउल्लाह के जीवन की कहानी से कुछ परिचित हैं, लेकिन वे एलेहांड्रा की प्रस्तुति से अधिक सीखने के लिए खुश हैं और स्पष्ट रूप से उनके कष्टों के विवरण से वे प्रभावित हो गए हैं। ”ऐसा लगता है,” एक क्षण के लिए श्रीमती सांचेज विचार करती हैं, ”कि ईश्वर के प्रकटरूप हमेशा नेतृत्व और सांसारिक शक्ति के लिए प्यासे लोगों के हाथों पीड़ित होते है।” एलेहांड्रा निर्णय लेती है कि उनके साथ कुछ उद्धरण साझा करना उपयुक्त होगा जो उसने कंठस्थ किए हैं – जो आप भी, पिछले भाग के अपने अध्ययन से जानते हैं – जिसमें बहाउल्लाह उन कष्टों के बारे में बात करते है, जो उन्होंने मानवजाति की ख़ातिर सहन किए, जिससे हम उत्पीड़न से मुक्त हो सकें और स्थायी खुशी प्राप्त कर सकें। तीनों मित्र उस दिन की चर्चा से ऊर्जावान है।

अपने अगले भ्रमण पर विचार करते समय, एलेहांड्रा जल्दी ही इस निष्कर्ष पर पहुंच गई कि अब्दुल–बहा के पद के बारे में चर्चा एक स्वाभाविक विषय होगा। ये वे बिंदु हैं जिन्हें वह अवश्य ही शामिल करेगी :

बहाउल्लाह के सबसे बड़े पुत्र, अब्दुल–बहा मानव इतिहास में सबसे अद्‌भुत विभूति हैं, और हम किसी भी पिछले धर्म में उनके जैसा कोई व्यक्ति नहीं पा सकते हैं। जब वे एक बच्चे थे तभी उन्होंने अपने पिता के दिव्य स्थान को पहचाना और उनके निर्वासन और कष्टों में साथ रहे। बहाउल्लाह ने अपने स्वर्गारोहण के बाद अब्दुल–बहा की देखभाल और सुरक्षा के तहत बहाई समुदाय को छोड़ दिया। हम कभी भी पूरी तरह से इस बात की सराहना नहीं कर सकते हैं कि यह कितनी बढ़ी वदान्यता है कि बहाउल्लाह ने मानवजाति को न केवल उनका सबसे उदात्त प्रकटीकरण प्रदान किया बल्कि अपना बेटा भी दे दिया, जिनके ज्ञान और विवेक के माध्यम से, जैसा कि उन्होने कहा है, यह दुनिया मार्गदर्शित और प्रकाशित होगी।

जब हम अब्दुल–बहा के जीवन और शब्दों का अध्ययन करते हैं, तब हम यह अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं कि इस धर्मयुग में उनका अद्‌भुत स्थान क्या है। इस स्थान के तीन पहलू बहुत महत्वपूर्ण हैं जिन्हे हमें याद रखना चाहिए।

प्रथम, अब्दुल–बहा बहाउल्लाह की संविदा के केन्द्र हैं। बहाउल्लाह ने अपने अनुयायियों के साथ एक संविदा स्थापित की जिसके तहत उन्होंने आहवान किया कि वे अपने हृदय को उस केन्द्र की ओर उन्मुख कर लें और इसके प्रति पूरी तरह वफादार रहें। अपनी वसीयत और इच्छापत्र में, अब्दुल–बहा ने, धर्मसंरक्षक शोगी अफेन्दी को केन्द्र नामांकित किया जिनकी ओर सभी को मुड़ना चाहिए। आज, यह केन्द्र विश्व न्याय मन्दिर है, जिसकी स्थापना बहाउल्लाह के स्पष्ट आदेश एवं अब्दुल–बहा तथा धर्मसंरक्षक द्वारा दिये गये स्पष्ट निर्देशों के अनुसार की गई है। इस संविदा की शक्ति बहाई समुदाय को एकसूत्रता में पिरोए रखती है तथा विखंडन तथा विघटन से इसकी रक्षा करती है।

दूसरा, बहाउल्लाह की वाणी के अचूक व्याख्याता अब्दुल–बहा हैं। बहाउल्लाह का प्रकटीकरण इतना विशाल है, उनकी वाणी में निहित अर्थ इतना गहरा है कि उन्होंने अपने बाद एक व्याख्याता को नियुक्त करना आवश्यक समझा, एक ऐसा व्याख्याता जिसे वे स्वयं प्रेरित करेंगे। इस प्रकार, आने वाली कई पीढ़ियों के लिए, अब्दुल–बहा की असंख्य पातियों और उनके भाषणों की प्रमाणित प्रतिलिपियों में दिए गए व्याख्याओं के अध्ययन कर मानवजाति बहाउल्लाह की शिक्षाओं को समझने में समर्थ होगी। अब्दुल–बहा के बाद धर्मसंरक्षक बहाउल्लाह की शिक्षाओं के व्याख्याता थे; उनके साथ ही व्याख्या का कार्य पूरा हो गया, और अब बहाउल्लाह के युगधर्म के शेष बचे काल में किसी को भी उनके शब्दों की व्याख्या करने का अधिकार नहीं है।

अतीत में, सभी धर्म अपने पवित्र ग्रन्थों के अंशो की विविध व्याख्याओं के कारण मतभेद से ग्रसित हो गए। लेकिन इस युगधर्म में, जब कभी भी बहाउल्लाह के किसी भी वक्तव्य के अर्थ के बारे में अनिश्चितता होती है, तब सभी लोग अब्दुल–बहा व धर्मसंरक्षक की व्याख्याओं की ओर मुड़ते हैं। यदि फिर भी अनिश्चितता रहती है, तो व्यक्ति विश्व न्याय मन्दिर की ओर स्पष्टीकरण के लिए उन्मुख हो सकता है। अतः, शिक्षाओं के अर्थ को लेकर मतभेद की कोई जगह नहीं रह जाती है, और प्रभुधर्म की एकता संरक्षित रहती है।

तीसरा, अब्दुल–बहा अपने पिता की शिक्षाओं के परिपूर्ण अनुकरणीय आदर्श हैं। हालांकि हम कभी भी परिपूर्णता की उस सीमा तक नहीं पहुंच सकते, हमें हमेशा अपनी आँखों के आगे उन्हें रखना चाहिए और उनके उदाहरण का अनुसरण करने का प्रयास करना चाहिए। जब हम पवित्र लेखों में प्रेम के विषय में पढ़ते हैं, तब हम अब्दुल–बहा की ओर उन्मुख हों सकते हैं और हमें प्रेम और दयालुता का सारतत्व दिखेगा। जब हम पवित्रता, न्याय, सत्यपरायणता,

हर्ष व उदारता के बारे में पढ़ते हैं, तब हम उनकी ओर मुड़ सकते हैं और उनके जीवन के विषय में सोच सकते हैं, और तब हमें दिखेगा कि किस प्रकार उन्होंने इन गुणों को संभवतम पूर्णता के साथ प्रदर्शित किया है।

अब्दुल—बहा के जीवन की पहचान, वास्तव में, उनका सेवाभाव था। अब्दुल—बहा नाम का अर्थ है "बहा का सेवक", और उन्हें दिए गए सभी उपनामों में से उन्होंने इसे ही चुना। अब्दुल—बहा के निम्नलिखित शब्द उनकी सेवा करने की अभिलाषा की अभिव्यक्ति हैं :

"मेरा नाम 'अब्दुल बहा' है। मेरी योग्यता 'अब्दुल बहा' है। मेरी वास्तविकता 'अब्दुल बहा' है। मेरी प्रशंसा 'अब्दुल बहा' है। आशीर्वादित पूर्णता की दासता मेरा भव्य और दीप्तिमान मुकुट है और समस्त मानवजाति की सेवा मेरा चिर धर्म है। ... अब्दुल बहा के सिवा कोई नाम, कोई उपाधि, कोई सम्बोधन, कोई प्रशंसा न मैंने कभी स्वीकार की है और न कभी करूंगा। यही मेरी कामना है, यही मेरी चिर भव्यता है। यही मेरा अनन्त जीवन है। यही मेरी अनन्त प्रशंसा है।"[11]

स्पष्ट रूप से एलेहांड्रा ने अपने अगले भ्रमण में सांचेज परिवार के साथ जो साझा करने की योजना बनाई है वह एक अत्यंत अदभुत व्यक्तित्व के बारे में एक परिचय से ज्यादा नहीं है; इस युगधर्म में अब्दुल—बहा द्वारा प्राप्त इस पद की उनकी सराहना आने वाले वर्षों में बढ़ती रहेगी। अपने स्वयं के जीवन में, जैसे—जैसे आप सेवा के पथ पर चलते रहेंगे, आपके पास उनके उदाहरण को याद करने और उनके शब्दों पर चिंतन करने के कई अवसर होंगे। पहले से ही, पिछली इकाई में, आपने खुद को उनके कुछ शब्दों से परिचित किया, और आपको प्रोत्साहित किया गया था कि आप उनकी पातियों और सार्वजनिक वक्ताओं में दिए गए विचारों को उसी तरह व्यक्त करना सीखें जैसा कि उन्होने किया है। अभी के लिए, उनके स्थान की अपनी वर्तमान समझ को सुदृढ़ करने के लिए, आपको अपने समूह के अन्य सदस्यों के साथ ऊपर बताए गए मुख्य बिंदुओं पर परामर्श करना चाहिए और उन्हें अच्छी तरह से कहने का अभ्यास करना चाहिए। उद्धृत अंश पर चिंतन आपको सेवा के पथ पर आगे बढ़ने के अपने प्रयासों में प्रेरित करेगा।

भाग 8

एक सवाल जो श्री और श्रीमती सांचेज के यहां भ्रमण शुरू करने के समय से ही एलेहांड्रा के मन में रहा है वह है कि वे कौन से चर्चा के विषय हैं जो उन्हें अपने मोहल्ले में सामुदायिक—निर्माण प्रक्रिया के दृढ़ और सक्रिय नायक बनने में सबसे अधिक मदद करेंगे। एक ओर, प्रार्थना, आत्मा की अमरता, और ईश्वर के प्रेम में दृढ़ता, जैसे विषय हैं जिनकी वह उनके साथ चर्चा करने की उम्मीद करती है, क्योंकि उनके आध्यात्मिक जीवन की नींव को लगातार प्रबलित किया जाना चाहिए। दूसरी ओर, उनके लिए यह महत्वपूर्ण होगा कि जिस तरह का समुदाय धीरे—धीरे विकसित हो रहा है उसकी परिकल्पना वे प्राप्त करें और यह जानें कि वे इसकी प्राप्ति में अपना बहुमूल्य योगदान दे सकते हैं। श्री और श्रीमती सांचेज के साथ अब्दुल—बहा के स्थान के बारे में बातचीत के दौरान, एलेहांड्रा को धीरे—धीरे एहसास होता है कि उसके अगले भ्रमण का विषय क्या होना चाहिए। "लोगों को एकजुट करने के धर्म के उद्देश्य के बारे में उन्हे बहुत कुछ स्पष्ट हैं," वह सोचती हैं। "तो, शायद जिस विषय के बारे में हमें अब विचार करना चाहिए वह है कि एक एकीकृत समुदाय का निर्माण और रखरखाव कैसे करना है।"

एलेहांड्रा अपने चौथे भ्रमण की शुरुआत उन गतिविधियों का वर्णन करके करती है जो वर्तमान में मोहल्ले में मित्रों के एक अपेक्षाकृत छोटे समूह द्वारा की जा रही हैं। "जैसे–जैसे हमारी संख्या बढ़ती है," वह समझाती है, "हम सभी के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण दायित्व होगा कि हम अपने शब्दों में, अपने विचारों में और अपने कार्यों में अधिक से अधिक एकता प्रदर्शित करें। यदि आप इससे सहमत हैं, तो, आज हम एक साथ एकता के विषय के बारे में जान सकते हैं।"

"मैं देख सकती हूं कि हमारे समुदाय के विकास के लिए एकता कितनी महत्वपूर्ण है," श्रीमती सांचेज़ ने जवाब दिया।

श्री सांचेज़ कहते हैं, "और आखिरकार यह बहाउल्लाह का एकता का संदेश था जिसने सबसे :पहले हमारे ह्रदयों को उनकी शिक्षाओं के प्रति आकर्षित किया।"

"मैंने कई विचारों को चुना है और प्रत्येक के लिए एक उद्धरण पाया है," एलेहान्ड्रा कहती हैं। "यदि आपको कोई आपत्ति न हो, तो हम एक–एक करके उनके बारे में चर्चा कर सकते हैं।"

नीचे एलेहान्ड्रा के विचारों की सूची है :

- हमारे समुदाय को वास्तव में एकता में रहने के लिए, हम में से हर एक को कलह और विवाद से बचना चाहिए। बहाउल्लाह कहते हैं :

"इस दिवस में और कुछ भी प्रभुधर्म को उतनी हानि नहीं पहुँचा सकता जितना प्रभु के पात्रों के बीच विवाद और द्वेष, फूट, कलह और उदासीनता का भाव। प्रभु की शक्ति एवं सत्ता की सहायता से इन्हें दूर भगाओ और सर्वज्ञाता, सर्वप्रज्ञ प्रभु के नाम पर, उस एक करने वाले के नाम पर अपने ह्रदयों को परस्पर स्नेह और प्रेम के ताने–बाने से एक सूत्र में बांधने की कोशिश करो।"[12]

- हमें अपने समुदाय के हर एक से प्रेम करना चाहिए, एक प्रेम जो ईश्वर के निमित्त हमारे प्रेम का प्रतिबिम्ब है। अब्दुल बहा कहते हैं :

"पूर्ण एकता में रहो। कभी भी एक–दूसरे पर क्रोध न करो ... ईश्वर के लिए प्राणियों को प्रेम करो, स्वयं उनके लिए नहीं। यदि तुम उन्हें ईश्वर के निमित्त प्रेम करोगे तो तुम कभी क्रोधित या अधैर्यपूर्ण नहीं होगे। मानवता परिपूर्ण नहीं है। प्रत्येक मानव में अपूर्णताएँ हैं और यदि तुम लोगों की ओर देखोगे तो हमेशा अप्रसन्न रहोगे, लेकिन यदि तुम ईश्वर की ओर देखोगे तो तुम प्रेम करोगे और उनके प्रति दयालु रहोगे क्योंकि ईश्वर का लोक पूर्णता और पूर्ण दया का लोक है।"[13]

- यदि एक–दूसरे के प्रति प्रेम के बाद भी हमारे बीच तनाव उत्पन्न हो जाये तो हमें तत्काल अब्दुल बहा की इस सलाह को याद करना चाहिए :

"मैं आप सबको इस बात का दायित्व सौंपता हूँ कि आप में से प्रत्येक अपने ह्रदय के सारे विचार प्रेम और एकता पर केंद्रित करें। जब युद्ध का विचार आए तो उसका सामना शांति के अधिक शक्तिशाली विचार से करें। घृणा के विचार को निश्चय ही प्रेम के अधिक प्रबल विचार से ध्वस्त कर दिया जाये। युद्ध के विचार मैत्रीभाव, कल्याण, सुख–चौन और तृप्ति का नाश करते हैं। प्रेम के विचार भ्रातृभाव, शांति, मैत्री और प्रसन्नता का निर्माण करते हैं।"[14]

- और यदि उन्हें नियंत्रित करने के सभी प्रयासों के बाद भी हम देखते हैं कि हमारा आवेश हम पर हावी हो गया है और हम स्वयं को दूसरों के साथ विवाद में पाते हैं तब हमें बहाउल्लाह के इन शब्दों को याद करना चाहिए :

"यदि तुम लोगों में बीच कोई मतभेद हो जाये तो मुझे अपने समक्ष खड़ा देखो और एक–दूसरे की त्रुटियों को मेरे नाम के वास्ते और मेरे सुस्पष्ट तथा मेरे दीप्तिमान धर्म के प्रति प्रेम के कारण अनदेखा कर दो।"[15]

- दूसरों की गलतियों को अनदेखा करने की, उनके प्रशंसनीय गुणों पर ध्यान केंद्रित करने की, एवं पीठ पीछे निन्दा का पूर्ण त्याग करने का आध्यात्मिक अनुशासन अनेकता के विरूद्ध सर्वाधिक प्रभावशाली उपाय हैं। पीठ पीछे निन्दा करने की प्रवृत्ति पर विजय पाना तब आसान होता है जब हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि हम जिनसे प्रेम करते हैं उनकी गतियों पर ध्यान नहीं देते और उन्हें दोष छिपाने वाली दृष्टि से देखने में हमें कोई कठिनाई नहीं होती। अब्दुल–बहा कहते हैं :

"दोषपूर्ण आँखे ही दोष देखती हैं। दोष ढकने वाली आँखें आत्मा की रचना करने वाले की ओर देखती हैं। ईश्वर ने उनकी रचना की है, वही उन्हें प्रशिक्षित करता है और उनके लिए साधन जुटाता है, उन्हें जीवन व शक्ति प्रदान करता है और दृष्टि तथा श्रवण शक्ति देता है; इसलिए वे उसकी भव्यता के चिन्ह हैं। तुम्हें सभी से प्रेम करना चाहिए और सबके प्रति दयालु होना चाहिए। निर्धन का ध्यान रखना चाहिए, दुर्बल की रक्षा करनी चाहिए, बीमार को आरोग्य देना चाहिए, अज्ञानियों को ज्ञान और शिक्षा देनी चाहिए।"[16]

बहाउल्लाह हमसे आग्रह करते हैं :

"हे मेरे राजसिंहासन के साथी ! कोई बुराई न सुन और न कोई बुराई देख, अपने को पतित न बना, न ही दुःख के उच्छ्वास ले और न विलाप ही कर। अपशब्द न बोल ताकि स्वयं अपने लिए भी तुझे अपशब्द न सुनने पड़ें। दूसरे के दोषों को बढ़ा–चढ़ाकर न देख, कहीं तुम्हारी अपनी बुराई उजागर न हो जाये। अतः अपने जीवन के शेष बचे थोड़े से दिनों को जो एक उड़ते हुए निमेष से भी कम हैं, अपने संशुद्ध मन, अपने अकलुषित विचारों, अपने विराट ह्रदय और अपनी पवित्र प्रकृति से सराबोर कर लो, ताकि स्वतंत्र और संतृप्त, तुम इस नश्वर ढांचे को त्याग सको और रहस्यमय स्वर्ग में प्रवेश प्राप्त कर अनन्तकाल के लिये ईश्वर के शाश्वत लोक में बस जाओ।"[17]

और वह हमें बताते हैं :

"हे प्रवासियों ! यह जिह्वा मैंने उल्लेख के प्रयोजन से बनाई है, इसे निंदा से दूषित न कर। यदि तुझ पर स्वार्थ की अग्नि प्रबल हो, अपने ही दोषों को याद कर और न कि मेरे प्राणियों के दोषों को, क्योंकि तुममें से प्रत्येक एक दूसरे से अधिक स्वयं के बारे में अधिक जानकारी रखता है।"[18]

- एकता निश्चय ही कलह और मतभेद की अनुपस्थिति मात्र नहीं है, और प्रेम मात्र शब्दों से प्रकट नहीं किया जाना चाहिए। हम तभी यह दावा कर सकते हैं कि हमारे बीच सच्ची एकता है यदि एक–दूसरे के प्रति हमारा प्रेम समुदाय की सेवा में बदल जाए और हमारे कार्य सहयोग और पारस्परिक सहायता की भावना से नियंत्रित हो। अब्दुल–बहा आहवान करते हैं :

"पल भर के लिये भी विश्राम न करो, एक पल के लिये भी सुख–चैन की कामना न करो, इसकी अपेक्षा तन–मन से श्रम करो ताकि अपने मित्रों के बीच किसी एक की भी पूरी विनम्रता के साथ सेवा कर सको और कम–से–कम उस एक प्रकाशमान व्यक्ति को आनन्द और उल्लास दे सको। यही सच्ची उदारता है और इससे ही अब्दुल बहा का भाल ऊँचा होता है। तुम मेरे साथी बनो और उसमें सहभागी बनो।"[19]

और वह कहते हैं :

"मानव की सर्वोच्च आवश्यकता सहयोग और आदान–प्रदान है। मनुष्यों के बीच सहभागिता और एकता का बन्धन जितना ही शक्तिशाली होगा, सभी मानव क्रियाकलापों में रचनात्मकता और उपलब्धि उतनी ही अधिक होगी।"[20]

- सामुदायिक क्रिया की सफलता के लिये सबसे सर्वाधिक महत्वपूर्ण कुंजी है सभी विषयों पर स्पष्ट और प्रेमपूर्ण परामर्श। परामर्श के माध्यम से, किसी एक मुद्दे को हममें से प्रत्येक जिन विविध तरीके से देखते हैं वह मिलकर एक हो जाता है, और सामूहिक क्रिया में हमें जिस दिशा पर चलना चाहिए वह हम ढूंढ पाते हैं। परामर्श के माधम से, हम विचारों में एकता प्राप्त करते हैं, और अपने विचारों और दृष्टिकोणों में एक होकर, हम अपने समुदाय के विकास के लिए प्रभावकारी योजना का निर्माण करते हैं। जो परामर्श करते हैं, उनके विषय में अब्दुल–बहा कहते हैं :

"उन लोगों के लिये, जो मिलकर परामर्श करते हैं, मूल आवश्यकताएं हैं : उद्देश्य की पवित्रता, आत्मा की तेजस्विता, ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सभी से अनासक्ति, उसकी दिव्य महक के प्रति आकर्षण, उसके प्रियजनों के बीच विनम्रता और विनयशीलता, कठिनाईयों में धैर्य एवं सहनशीलता तथा उसकी उदात्त देहलीज़ के प्रति दासता। यदि उन्हें इन गुणों का विकास करने में कृपापूर्वक सहायता प्राप्त हो, तो उन्हें बहा के अदृश्य साम्राज्य से विजय प्रदान की जाएगी।"[21]

- विचारों की एकता निरर्थक है यदि यह कार्य की एकता में परिवर्तित न हो। एकता में कार्य करने का अर्थ यह नहीं कि हम सभी एक ही कार्य करें। इसके विपरीत, एकता में किए गए कार्य के दौरान एक समुदाय के सदस्यों की विभिन्न प्रतिभाओं का पूरी तरह उपयोग किया जाता है। हमारी शक्तियाँ कई गुना बढ़ जाती हैं, और तब भी जब हमारी संख्या बहुत छोटी है, हम वो प्राप्त कर पाते हैं जो विश्व के बड़े से बड़े और शक्तिशाली संगठन भी प्राप्त करने में असमर्थ होते हैं। अब्दुल–बहा कहते हैं :

"जब कभी भी पावन आत्माएं, स्वर्ग की शक्तियों से सहायता प्राप्त करके, आत्मा के ऐसे गुणों के साथ उठ खड़ी होंगी, और एकता में, पंक्ति दर पंक्ति कूच करेंगी, तो उन में से प्रत्येक आत्मा एक हज़ार के बराबर होगी, और उस महान सागर की उमड़ती लहरें स्वर्गदूतों की पल्टनों के समान होंगी।" [22]

अपने समूह के प्रतिभागियों के साथ उपरोक्त को ध्यानपूर्वक पढ़ने के और हर बिंदु की विषय वस्तु पर चर्चा करने के बाद, जैसा कि पिछले तीन भागों में किया था वैसे ही आप एक दूसरे को इस विषय को प्रस्तुत करने में मदद करना चाहेंगे। इस प्रयास में नीचे दिए गए अभ्यास कुछ मदद करेंगे :

1. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें :

क. इस दिवस में और कुछ भी प्रभुधर्म को उतनी हानि नहीं पहुँचा सकता जितना प्रभु के पात्रों के बीच ____________ और द्वेष, फूट, कलह और उदासीनता का भाव।

ख. इस दिवस में और कुछ भी प्रभुधर्म को उतनी हानि नहीं पहुँचा सकता जितना प्रभु के पात्रों के बीच विवाद और ____________ , फूट, कलह और उदासीनता का भाव।

ग. इस दिवस में ____________ प्रभुधर्म को उतनी हानि नहीं पहुँचा सकता जितना प्रभु के पात्रों के बीच विवाद और द्वेष, फूट, कलह और उदासीनता का भाव।

घ. इस दिवस में और कुछ भी प्रभुधर्म को उतनी हानि नहीं पहुँचा सकता जितना प्रभु के पात्रों के बीच विवाद और द्वेष, फूट, कलह और ____________ का भाव।

ङ इस दिवस में और कुछ भी प्रभुधर्म को उतनी हानि नहीं पहुँचा सकता जितना प्रभु के पात्रों के बीच विवाद और द्वेष, ____________ , कलह और उदासीनता का भाव।

च. इस दिवस में और कुछ भी प्रभुधर्म को उतनी हानि नहीं पहुँचा सकता जितना प्रभु के पात्रों के बीच विवाद और द्वेष, फूट, ____________ और उदासीनता का भाव।

छ. इस दिवस में और कुछ भी ____________ को उतनी हानि नहीं पहुँचा सकता जितना प्रभु के पात्रों के बीच विवाद और द्वेष, फूट, कलह और उदासीनता का भाव।

2. दूसरे उद्धरण में अब्दुल बहा हमसे कहते हैं :

क. हमें सदैव पूर्ण ____________ में रहना चाहिए।

ख. हमें कभी भी ____________ पर ____________ नहीं करना चाहिए।

ग. हमें ईश्वर के लिये ________________ प्रेम करना चाहिए, स्वयं उनके लिये नहीं।

घ. यदि हम उन्हें ______________ प्रेम करेंगे तो हम कभी ______________ ; ____________ नहीं होंगे।

ङ. मानवता ____________ नहीं है।

च. यदि हम ____________ की ओर देखेंगे तो हमेशा ____________ रहेंगे।

छ. लेकिन यदि हम ____________ देखेंगे तो ____________ करेंगे और उनके प्रति ____________ रहेंगे।

3. तीसरे उद्धरण में अब्दुल बहा हमसे कहते हैं :

क. हम सभी को अपने हृदय के सारे विचारों को ____________ और ____________ पर अवश्य ही केन्द्रित करना चाहिए।

ख. जब युद्ध का विचार आये तो हमें उसका सामना ______________________ करना चाहिए।

ग. घृणा के विचार को ______________________ से ध्वस्त कर देना चाहिए।

घ. युद्ध के विचार ______________________ का नाश कर देते हैं।

ङ. प्रेम के विचार ______________________ का निर्माण करते हैं।

4. जब आप देखते हैं कि आपके और समुदाय के मध्य मतभेद उत्पन्न हो रहा है तब आपको क्या करना चाहिए ? ______________________

____

____

____

5. आपके समुदाय में एकता बनाये रखने में योगदान करने में आपको सहायक आध्यात्मिक अनुशासन की व्याख्या करें ? ______________________

____

____

____

6. निम्नलिखित में से कौन सी बातें एकता में योगदान करती है ?

_______ दूसरों की कमियों को देखना

_______ दूसरों की गलतियों को अनदेखा करना

_______ एक मित्र से किसी दूसरे की गलतियों पर टिप्पणी करना

_______ किसी व्यक्ति को बुरा दिखाने के लिए बातों को बढ़ा–चढ़ा कर कहना या बदलकर बताना

_______ दूसरों की गलतियों के बारे में सोचना

7. जब कुछ लोग गलती करते हैं तो हम उनकी आलोचना करते हैं, लेकिन दूसरों की नहीं जब वे बिल्कुल वही गलती करते हैं ? ______________________

____

8. क्या ऐसी परिस्थिति में एकता होना सम्भव है जब लोग एक दूसरे की पीठ–पीछे निंदा करते हों ? क्यों नहीं ?

9. किसी के बारे में झूठ बोलना स्पष्ट रूप से गलत है, लेकिन क्या किसी के द्वारा किये गये वास्तविक कार्य पर आलोचनात्मक टिप्पणी करना उचित है ?

10. निरर्थक गप्प मारने, पीठ–पीछे निंदा करने और आलोचना करने में क्या अन्तर है ?

11. एक समुदाय पर निरर्थक गप्प मारने, पीठ–पीछे निंदा करने और आलोचना करने का क्या असर होता है ?

12. हम अपने जीवन से इन आदतों को कैसे दूर कर सकते हैं ?

13. क्या होगा यदि हम केवल दूसरों के बारे में ऐसे बातें करेंगे मानो वे हमारे सामने हों ?

14. यदि हम बच्चों के समक्ष किसी की पीठ–पीछे निंदा करें तो उन पर क्या असर होगा ?

____

____

15. गप्प मारने और पीठ–पीछे निंदा करने की प्रवृत्ति की जड़ क्या है ? ____________

____

____

16. बहाउल्लाह हमसे आग्रह करते है "यदि तुझ पर स्वार्थ की अग्नि प्रबल हो, ______________ और न कि ______________ क्योंकि तुममें से प्रत्येक ______________ अधिक जानकारी रखता है।"

17. प्रेम मात्र शब्दों में ही व्यक्त नहीं किया जाता। इसके लिए और क्या आवश्यक है ? ________

____

18. एकता और प्रेम के संबंध में, अब्दुल बहा कहते हैं: "पल भर के लिये भी ______________ , एक पल के लिये भी ______________ न करो, इसकी अपेक्षा ______________ अपने मित्रों के बीच ______________ और कम–से–कम उस एक प्रकाशमान व्यक्ति को ____________।

19. और वह आगे कहते हैं "मानव की सर्वोच्च आवश्यकता ____________ और ________ है। मनुष्यों के बीच ____________ और ____________ का बन्धन जितना ही शक्तिशाली होगा, सभी मानव क्रियाकलापों में ____________ और ____________ उतनी ही अधिक होगी।"

20. सफल सामुदायिक कार्यों की महत्वपूर्ण कुंजी क्या है ? ______________

____

21. अब्दुल बहा परामर्श करने वालों के लिए कहते हैः "उन लोगों के लिये, जो मिलकर परामर्श करते हैं, मूल आवश्यकताएं हैं ______________________ ______________________ और ____________ कठिनाईयों में ____________ एवं ____________ तथा उसकी उदात्त देहलीज़ के प्रति ____________यदि उन्हें इन गुणों का विकास करने में कृपापूर्वक सहायता प्राप्त हो, तो उन्हें ____________ प्रदान की जाएगी।"

22. एकता में काम करने की शक्ति के बारे में, अब्दुल बहा हमें बताते है : "जब कभी भी पावन आत्माएं, ______________________ प्राप्त करके, ____________ ______________________ के साथ उठ खड़ी होंगी, और

____________________________ पंक्ति दर पंक्ति कूच करेंगी, तो उन में से प्रत्येक आत्मा ______________________ और उस महान सागर की उमड़ती लहरें ______________________ होंगी।"

भाग 9

श्री और श्रीमती सांचेज के यहां अपने चौथे भ्रमण के दौरान, एलेहांड्रा को उनके एक पोती बीएट्रिस से मिलने का मौका मीला, जो पास के हाई स्कूल में पढ़ने के लिए उनके साथ रहने आई है। एकता के विषय के बारे में जानने के लिए बीएट्रिस बहुत उत्सुक है और उत्साह से इस चर्चा में भाग लेती है। जैसे–जैसे वार्तालाप अंत की ओर बढ़ता है, श्रीमती सांचेज सभी के लिए कुछ कॉफी और केक लाती हैं। इससे एलेहांड्रा को बीएट्रिस को थोड़ा बेहतर जानने का मौका मिलता है, और वह मोहल्ले में सामुदायिक–निर्माण के प्रयासों के बारे में बात करने के लिए अगले दिन उससे मिलने की योजना बनाती है। "वह शायद पाठ्यक्रमों की मुख्य श्रृंखला का अध्ययन करने में रुचि दिखा सकती है," एलेहांड्रा मन में सोचती है। "मैं उसे सुस्थिर गति में शुरुआत की कुछ पुस्तकों को करने में मदद कर सकती हूँ। उसके बाद शायद वह बच्चों की कक्षा शुरू करना चाह सकती है या मोहल्ले में निर्मित हो रहे किशोर समूह में मेरी सहायता कर सकती है। अगर ऐसा हुआ, तो जैसे–जैसे पुस्तक 5 तक आगे बढ़ेगी वह धीरे–धीरे समूह की अधिक जिम्मेदारी ले सकती है, क्योंकि वह उसे एक अनुप्रेरक के रूप में सेवा करने के लिए तैयार करेगी।" एलेहांड्रा ने युवाओं के लिए आयोजित किए जाने वाले कई सम्मेलनों में भाग लिया है, जो चर्चा के कुछ विषयों पर केंद्रित हैं, जिसके कारण कई लोग संस्थान प्रक्रिया में भाग ले पाए हैं। वह तय करती है कि अगले दिन बीएट्रिस के साथ बातचीत में विचारों के उसी क्रम का पालन करेगी। वार्तालाप इस तरह से शुरू होता है :

> हम सभी चाहते हैं कि दुनिया बेहतर जगह बने। हम ऐसे भविष्य की आशा करते हैं जब सार्वभौमिक शांति स्थापित हो चुकी होगी और मानव परिवार सामंजस्य में रहते हैं। इस तरह का भविष्य एक सपना नहीं है। जैसे–जैसे दुनिया की बेहतरी में योगदान देने के लिए हममें से अधिक से अधिक लोग प्रयास करेंगे, इसका निर्माण किया जा सकता है। हमारे ह्र्दय की गहराई में हममें से प्रत्येक को अपने समुदायों की सेवा करने की इच्छा है। हमें जिसकी आवश्यकता है, वह है, साझा हित के लिए सेवा के निस्वार्थ कार्य करने की अपनी क्षमता विकसित करने की।
>
> मानवजाति की हमारी सेवा के बारे में सोचने के लिए हम सेवा के एक पथ की कल्पना कर सकते हैं जिस पर हम सब एक साथ चलते हैं। यह पथ सभी के लिए खुला है। हममें से प्रत्येक इस पर चलने का निर्णय ले सकता है, और हम अपनी ही गति से इस पर आगे बढ़ते हैं। हम इस पथ पर अकेले नहीं चलते हैं; एक साथ सीखते हुए और एक दूसरे के साथ–साथ चलकर, हम अपने मित्रों के साथ सेवा करते हैं। हम जो भी कदम उठाते हैं वह आनंद और आश्वासन देता है, और हम जो भी प्रयास करते हैं वह ईश्वरीय संपुष्टि लाता है।

बीएट्रिस जो सुन रही है वह उसे पसंद आ रहा है, और इस छोटी सी प्रस्तुति के बाद एक जीवंत वार्तालाप होता है। और आगे जाने से पहले, आइए हम यहाँ थोड़ा रूक जाते हैं और इन दो नए मित्रों के बीच के वार्तालाप के स्वरूप पर चिंतन करते हैं। बीएट्रिस को संस्थान प्रक्रिया में भाग लेने के लिए आमंत्रित करने के लिए एलेहांड्रा ने अर्थपूर्ण वार्तालाप में संलग्न होने का निर्णय लिया है।

बीएट्रिस को केवल यही बताना क्यों पर्याप्त नहीं होता कि संस्थान द्वारा पाठ्यक्रमों की एक श्रृंखला प्रदान की जा रही है और फिर उसे इसमें शामिल होने के लिए आमंत्रित करती ?

भाग 10

एलेहांड्रा और बीएट्रिस के बीच बातचीत लगभग दो घंटे तक जारी रहती है। नीचे कई अतिरिक्त विचार दिए गए हैं जो एलेहांड्रा अपने नए मित्र के साथ साझा करती है। हम समझते हैं कि, निश्चित रूप से, वह लगातार एक लंबी प्रस्तुति नहीं करती है। दो घंटे में से अधिकांश समय इन अनुच्छेदों में उल्लिखित विचारों पर एक साथ विचार–विमर्श करने में व्यतीत होता है :

> हम नवयुवक हैं, हमारे पास ऊर्जा है, और हमारे पास बहुत उत्साह है। लोग सोचते हैं कि हम लापरवाह हैं। लेकिन इसके विपरीत; हम मानवता की दुर्दशा के लिए चिंतित हैं और समाज में वास्तविक बदलाव देखना चाहेंगे। और हमें अपने जीवन के बारे में भी सोचना चाहिए – शिक्षा, काम, मित्र, परिवार। हर वर्ष जैसे–जैसे हम बड़े होते जाते हैं, हम पाते हैं कि हम और अधिक जिम्मेदारियां उठा रहे हैं; हमारे माता–पिता हमसे बहुत उम्मीद करते हैं। कभी–कभी, जब मैं अपनी सभी जिम्मेदारियों के बारे में सोचती हूं, तो मैं घबराहट महसूस करती हूं। फिर मुझे कंठस्थ किये हुए बहाई लेखों के उद्धरणों में से एक याद आता है : "मनुष्य के जीवन का अपना वसंतकाल होता है और वह अद्‌भुत गौरव से सम्पन्न होता है। युवावस्था की विशेषता है उसकी शक्ति और ऊर्जा और यह मानव–जीवन का सर्वाधिक श्रेष्ठतम समय है।"
>
> जो मैं आपके साथ साझा करना चाहूंगी वह यह है कि दुनिया भर में हमारे जैसे समुदायों में कई युवा यह महसूस कर रहे हैं कि उनकी ऊर्जा को दोहरे उद्देश्य द्वारा निर्देशित किया जा सकता है : अपने स्वयं के बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास की जिम्मेदारी लेना और समाज के रूपान्तरण में योगदान देना। हमारे उद्देश्य के ये दो पहलू परस्पर संबंधित हैं। जैसे–जैसे हम अपने सामर्थ्यों को विकसित करते हैं, हम दूसरों की सेवा करने में और सक्षम होते हैं, और जब हम एक दूसरे की मदद करते हैं, हम व्यक्ति के रूप में विकास करते हैं और हमारे गुण भी मजबूत होते हैं।
>
> यहीं पर सेवा के पथ का विचार शामिल होता है, जिसके बारे में मैंने पहले उल्लेख किया था। इस पथ पर चलना कुछ ऐसा नहीं है जिसे हम सिर्फ अपने जीवन में शामिल कर लेते हैं; यह हमारे द्वारा की जाने वाली हर चीज को अर्थपूर्ण बना देता है। समुदाय की सेवा हमें अपनी शिक्षा के उद्देश्य को बेहतर ढंग से समझने में, भविष्य के बारे में अपने विचारों को स्पष्ट करने में, हमारे परिवारों के कल्याण में योगदान देने के लिए आवश्यक गुणों को विकसित करने में

मदद करती है। यह हमारी मित्रता को मजबूत करती है। यह हमें नगण्य कार्यों पर अपनी ऊर्जाओं को बर्बाद करने से रोकती है।

अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास के बारे में सोचते समय, हमें उन कई बलों के बारे में सजग रहना चाहिए जो हमें प्रभावित करते हैं। उनमें से कुछ, जैसे ज्ञान के, न्याय के, और प्रेम के बल, हमें सही दिशा में ले जाते हैं, और हमें उनके साथ खुद को संरेखित करना सीखना चाहिए। अन्य बल, जैसे कि भौतिकवाद और आत्म–केंद्रितता के बल, इसके विपरीत काम करते हैं, और हमें उनका प्रतिरोध करना चाहिए। हमें उत्कृष्टता प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए और यह आस्था रखनी चाहिए कि हमारे प्रयासों को दिव्य संपुष्टि प्रदान होगी।

और जब हम समाज के रूपान्तरण में अपने योगदान के बारे में सोचते हैं – हिंसा, गरीबी, और यातनाओं से भरे संसार को शांति, समृद्धि और सामन्जस्य के संसार में रूपांतरण करने के बारे में – तब हमें भौतिक और आध्यात्मिक दोनो ही प्रगति पर विचार करना चाहिए। यदि हम आध्यात्मिक प्रगति नही करेंगे तो सभी लोगों की भौतिक प्रगति भी नहीं होगी। जब यह दोनों एक साथ आगे बढेंगे तब ही विश्व का उत्थान होगा। एक और उद्धरण है जिसे मैंने कंठस्थ किया हुआ है : "भौतिक सभ्यता लैम्प के समान है, जबकि आध्यात्मिक सभ्यता उस लैम्प में प्रकाश है। अगर भौतिक और आध्यात्मिक सभ्यता मिलकर एक हो जाए, तब प्रकाश और लैम्प एक साथ होगा, और इसका परिणाम उत्तम होगा।"

जैसे–जैसे हम सेवा के पथ पर चलते हैं, हम व्यक्तियों के समूहों के साथ, विशेषकर बच्चों और किशोरों के साथ, काम करना सीखते हैं, और उनकी मदद ज्ञान, कौशल और आध्यात्मिक गुणों को अर्जित करने में करते हैं। हम अपने समुदायों की एकता पर ध्यान देना भी सीखते हैं। समुदाय की प्रगति में जो व्यक्ति, परिवार और संगठन योगदान देने के लिए इच्छुक हैं उन्हें अवश्य साथ मिलकर काम करना चाहिए। उन्हें एक साझा परिकल्पना और उद्देश्य का निर्माण करना चाहिए और विवाद के मार्गों का त्याग कर देना चाहिए।

इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि जब हम युवा हैं तब हम दूसरों के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध की आदतें विकसित करें। हमें मित्र बनने की जरूरत है: हम जो काम करते हैं उसमें एक–दूसरे का साथ–साथ चलते हुए, एक–दूसरे के योगदानों को स्वीकार करते हुए, एक–दूसरे को प्रोत्साहित करते हुए और एक–दूसरे की ताकतों को देखते हुए, एक–दूसरे से उपयोगी सलाह मांगते और देते हुए, और एक–दूसरे की उपलब्धियों में आनंद लेते हुए। सेवा के इस पथ पर चलने के लिए, हमें कार्य करना चाहिए, अपने कार्यों पर चिंतन करना चाहिए, परामर्श करना चाहिए और एक साथ अध्ययन करना चाहिए।

पिछले कुछ दशकों में, दुनिया के लगभग हर देश में सीख प्राप्त करने वाली एक बहुत ही विशेष प्रकार की संस्था को स्थापित करने में बहाई समुदाय सफल रहा है। यह, जिन्हें हम प्रशिक्षण संस्थान कहते हैं, उन पाठ्यक्रमों को प्रदान करते हैं जो समुदाय की सेवा करने के लिए हमारे सामर्थ्यों को सुदृढ़ करते हैं। इन पाठ्यक्रमों का अध्ययन करके, हम आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और सेवा के पथ पर एक साथ आगे बढ़ने के लिए आवश्यक व्यावहारिक कौशल प्राप्त करते हैं। जैसे–जैसे हम उन पाठ्यक्रमों में आगे बढ़ते हैं, सेवा की बढ़ती जटिल गतिविधियों को पूरा करने की हमारी क्षमता बढ़ती है। इस पूरे समय, हमारे साथ वे लोग साथ–साथ चलते हैं जो हम से अधिक अनुभवी हैं, और, समय के साथ, हम स्वाभाविक रूप से कम अनुभव वाले मित्रों के साथ चलने लगते हैं। प्रारंभ से ही, हम सभी व्यक्तिगत और

सामाजिक रूपान्तरण के नायक हैं, जो उत्सुकता से अपने स्वयं के सीखने की और समुदाय में सेवा देने की जिम्मेदारी उठा रहे हैं।

"एक नायक होने" का तात्पर्य है, विचारपूर्वक कार्य करने की इच्छाशक्ति होना, अपने प्रयासों में डटे रहना, और हर कदम पर ज्ञान प्राप्त करना और लागू करना। एक नायक केवल लाभों का एक निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं है, बल्कि प्रगति के लिए कार्य कर रहा एक सक्रिय सहयोगी है। एक नायक बनने के लिए हमें रचनात्मक और अनुशासित पहल करना सीखना चाहिए। समुदाय–निर्माण प्रक्रिया के नायक बनने के लिए हमारी क्षमता को बढ़ाने में संस्थान पाठ्यक्रम हमारी मदद करते हैं।

हमें उपरोक्त अनुच्छेदों में दिए गए विचारों पर चिंतन करने के लिए कुछ समय लेना चाहिए। जैसा कि इस भाग की शुरुआत में उल्लेख किया गया है, एलेहांड्रा केवल विचारों को एक के बाद एक प्रस्तुत नहीं करेगी, बल्कि यह सुनिश्चित करेगी कि बीएट्रिस के पास उनके बारे में सोचने और चर्चा में योगदान करने का पर्याप्त अवसर मिले। अपने समूह में हर एक अनुच्छेद पर चर्चा करने के और विचारों को खुद अच्छी तरह से व्यक्त करना सीख लेने के बाद, आप यह विचार कर सकते हैं कि क्या यह वार्तालाप उस बिंदु तक पहुंच गया है कि अब एलेहांड्रा रुही संस्थान के कुछ पाठ्यक्रमों के बारे में कुछ शब्दों को साझा करने में और बीएट्रिस को पुस्तक 1 के अध्ययन में शामिल होने के लिए आमंत्रित करने में आत्मविश्वास महसूस करेगी। क्या आप नीचे दिए गए स्थान पर लिख सकते हैं कि आप उसकी जगह पर होंगे तो क्या कहेंगे? आप पुस्तक 1 और 2 का और उससे जुड़े सेवा के कार्य का वर्णन कैसे करेंगे ? आगे की पुस्तकों में दिए गए सेवा के कार्यों का – विशेष रूप से बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा के लिए शिक्षण कक्षाओं का और एक किशोर समूह को इसके अनुप्रेरक के रूप में मार्गदर्शन करने का – एक संक्षिप्त संदर्भ निस्संदेह बीएट्रिस को भविष्य में वह किस रूप में सेवा प्रदान कर सकती है, इसकी परिकल्पना प्राप्त करने में मदद करेगा। बीएट्रिस को पुस्तक 1 का अध्ययन करने के लिए आमंत्रित करने के लिए एलेहांड्रा जो कह सकती है, सेवा के इन दो कार्यों पर वैसे ही कुछ वाक्य लिखने में आपके समूह का सहशिक्षक आपकी सहायता कर सकता है।

भाग 11

दो हफ्ते के बाद एलेहांड्रा की सांचेज परिवार के साथ अगली मुलाकात होती है। इस दौरान, बीएट्रिस एक सघन अभियान में भाग लेने और पुस्तक 1 की पहली दो इकाइयों को पूरा करने में सक्षम हो पाती है। वह अब पांच मित्रों के समूह के साथ मोहल्ले में सप्ताह में दो बार मिलकर तीसरी इकाई कर रही है। एलेहांड्रा सोचती है कि सांचेज परिवार के साथ प्रार्थना के विषय पर वार्तालाप करने का यह उचित समय है और वह बीएट्रिस से पूछती है कि क्या वह उसकी सहायता करना चाहेगी। आपने स्वयं पुस्तक 1 की दूसरी इकाई का अध्ययन किया है, इसलिए इस भ्रमण के दौरान एलेहांड्रा और बीएट्रिस ने जिन बातों को शामिल किया उसे संक्षेप में बताने की आवश्यकता नहीं है। उस इकाई का पुनरीक्षण करने के बाद, आप उन मुख्य्य बिंदुओं को चिन्हित करने में सक्षम हो पाएंगे जिन्हें आप इस विषय पर चर्चा में संबोधित करने का प्रयास करेंगे। नीचे अपने विचारों को लिखने के लिए आपको जगह दिया है।

भाग 12

सांचेज परिवार के यहां एलेहांड्रा आने वाले कुछ हफ्तों के लिए गृह भ्रमण जारी रखती हैं, और प्रार्थना के महत्व के बारे में उनकी चर्चाओं से स्वाभाविक रूप से कई विषय निकलकर आते हैं जिनके बारे में चर्चा करने का उन्हें अवसर मिलता है – आत्मा का जीवन, आध्यात्मिक गुणों का विकास, ईश्वर के नियम कानूनों के प्रति आज्ञाकारिता, और उनके प्रेम में दृढ़ता। एक अवसर पर, वे प्रशासनिक व्यवस्था की संस्थाओं, विशेष रूप से स्थानीय और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं के बारे में, थोड़ा बहुत वार्तालाप करते हैं। हमें इन प्रत्येक गृह भ्रमण के दौरान वार्तालापों में शामिल किए गए विषय वस्तु पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन, ऐसे दो प्रश्न हैं जो प्रतिभागियों के साथ हमारे द्वारा कल्पना किये जा रहे जैसे वार्तालापों की एक श्रृंखला में अक्सर उत्पन्न होते हैं। पहले प्रश्न का संबंध समुदाय द्वारा आयोजित बैठकों की प्रकृति से है और दूसरे का वित्तीय संसाधनों से। हम इस भाग में बैठकों के विषय को लेंगे, विशेष रूप से उन्नीस दिवसीय सहभोज को, और अगले भाग में वित्त के प्रश्न को देखेंगे।

तो फिर, निम्नलिखित बिंदु उन्नीस दिवसीय सहभोज के विषय पर बातचीत का आधार बन सकते हैं :

- बहाई समुदाय में, कई उद्देश्यों के लिए बैठकें होती हैं–प्रार्थना करने के लिये, अध्ययन करने के लिए, विशेष अवसरों को मनाने के लिए, सामुदायिक मामलों और समाज की सेवा पर परामर्श करने के लिये, कार्यों की योजना बनाने के लिए। बहाउल्लाह ने निम्नांकित वादा किया हैं :

  "मेरे जीवन और मेरे धर्म की सौगंध ! जिस किसी भी निवास में ईश्वर के मित्र प्रवेश करेंगे और स्वामी की स्तुति और महिमा की उनकी आवाज जहाँ से भी उठेगी उसके इर्द–गिर्द सच्चे अनुयायियों की आत्माएँ और सभी कृपा प्राप्त देवदूत विद्यमान रहेंगे।"[23]

- मित्रों के बीच बैठकों में ईश्वर के शब्द सुनने से हृदयों को आनन्द मिलता है और एकता के बंधन मजबूत होते हैं। बहाउल्लाह हमें आग्रह करते हैं :

  "चाहे किसी भी क्षेत्र में मित्र निवास करते हों, उनके लिये उचित है कि वे गोष्ठियों में सम्मिलित हों और उसमें प्रवाहपूर्ण ढंग से बुद्धिमत्तापूर्वक बोलें और ईश्वर के श्लोकों का पाठ करें क्योंकि यह ईश्वर के शब्द ही हैं जो प्रेम की अग्नि जलाते हैं और उसे प्रज्ज्वलित करते हैं।"[24]

अब्दुल–बहा लिखते हैं :

"सभाओं का आयोजन करो और दिव्य शिक्षाओं का पाठ और गान करो ताकि पावन चेतना की शक्ति से वह शहर वास्तविकता के प्रकाश से प्रकाशित हो सके और वह देश पवित्र चेतना की शक्ति द्वारा यथार्थ स्वर्ग बन सके क्योंकि यह युगचक्र महिमावंत स्वामी का युगचक्र है और मानवजाति की सहभागिता और एकता का स्वर–माधुर्य पूरब और पश्चिम तक पहुँचना चाहिए।"[25]

- सभी बहाई बैठकों में से उन्नीस दिवसीय सहभोज का विशेष उल्लेख करना उचित होगा। बहाई कैलेंडर में उन्नीस महीने होते हैं जिनमें प्रत्येक में उन्नीस दिन होते हैं, और प्रत्येक स्थानीय समुदाय में, स्वयं बहाउल्लाह के विधानों के अनुसार, बहाई लोग इस बैठक के लिए महीने में एक बार एक साथ मिलते हैं :

"वस्तुतः तुम्हारे ऊपर यह आदेशित है कि तुम हर महीने में एक सहभोज दो, भले ही पानी ही क्यों न दिया जाए, क्योंकि ईश्वर भौतिक और स्वर्गिक दोनों ही साधनों से हृदय को जोड़ना चाहता है।"[26]

- उन्नीस दिवसीय सहभोज के तीन भाग होते हैं। पहला होता है भक्तिपरक भाग, जिसके दौरान प्रार्थनाओं का पाठ होता है और पवित्र लेखों से लिए गए अंशों को पढ़ा जाता है। दूसरा है प्रशासनिक भाग, जिसके दौरान समुदाय के क्रियाकलापों पर परामर्श होता है। तीसरा होता है सामाजिक भाग।

- हमें उन्नीस दिवसीय सहभोज के भक्तिपरक भाग के महत्व की एक झलक अब्दुल–बहा के निम्नलिखित शब्दों से मिलती है :

"हे प्राचीन सौन्दर्य के निष्ठावान सेवकों ! प्रत्येक युगचक्र और युग–धर्म के विधान में सहभोज को पसंद व अनुमोदित किया गया है और प्रभु प्रेमियों का सत्कार करना एक प्रशंसनीय कृत्य माना गया है। आज के अतुलनीय युग–धर्म के विधान में, सभी युगों में सर्वाधिक उदार युग में इसका विशिष्ट महत्व है। इसकी उच्च्य प्रशंसा की गई है क्योंकि इसे ऐसे सम्मिलनों में माना जाता है जो ईश्वर की आराधना तथा महिमामंडन हेतु आयोजित किया जाता है। यहाँ पवित्र छंद, स्वर्गिक गीतों तथा स्तुतियों का गान होता है, हृदय जीवित हो उठते हैं तथा सम्मोहित हो उठते हैं।"[27]

- इस सहभोज के प्रशासनिक भाग के दौरान, जो मित्र एकत्र होते हैं वे पास के और दूर के समुदायों की गतिविधियों की रिपोर्ट सुनते हैं, अपने खुद के समुदाय में प्रभुधर्म के क्रियाकलापों की और समाज के कल्याण की ओर अपने योगदानों पर परामर्श करते हैं, विश्व न्याय मन्दिर से प्राप्त मार्गदर्शन से परिचित होते हैं, अपनी योजनाओं की प्रगति पर चिंतन करते हैं, और प्रभुधर्म की संस्थाओं को सुझाव देते हैं। उन्नीस दिवसीय सहभोज में परामर्श का सर्वाधिक महत्व है, क्योंकि, इसके माध्यम से, प्रत्येक व्यक्ति विश्वव्यापी बहाई समुदाय के क्रियाकलापों में भाग लेने में सक्षम होता है।

- जहां तक सहभोज के सामाजिक भाग का संबंध है, यह साहचर्य और आतिथ्य–सत्कार का समय है। इसके दौरान संगीत बजाया जा सकता है, उत्साहवर्धक वक्तव्य दिये जा सकते हैं, और बच्चों द्वारा प्रस्तुति की जा सकती हैं। संक्षिप्त में, सहभोज के इस भाग को धनी बनाने

के लिए सावधानीपूर्वक चुनी गई सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जा सकता है, जो गरिमापूर्ण भी हों और आनंदमय भी।

- उन्नीस दिवसीय सहभोज प्रभुधर्म की प्रशासनिक व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यह सामुदायिक जीवन के भक्तिपरक, प्रशासनिक एवं सामाजिक पहलू को एक साथ लाती है। इन सभी पहलूओं पर बराबर जोर दिया जाना चाहिए, क्योंकि सहभोज की सफलता इन तीनों भागों के सही संतुलन पर निर्भर करती है। अगस्त 1989 में लिखे गये एक प्रपत्र में, विश्व न्याय मंदिर कहते हैं :

"बहाउल्लाह की विश्व–व्यवस्था मानव समाज की सभी इकाईयों को आच्छादित करती है, यह जीवन की आध्यात्मिक, प्रशासनिक और सामाजिक प्रक्रियाओं को संघटित करती है और मानव अभिव्यक्ति के विविध रूपों को नई सभ्यता के निर्माण में योगदान के लिए माध्यम बनाती है। उन्नीस दिवसीय सहभोज इन सभी पक्षों को समाज के आधार स्तर पर ही एकीकृत करता है। गांव, कस्बे और शहर में क्रियाशील इस संस्था के सदस्य सभी बहाई होते हैं। यह एकता बढ़ाने है, प्रगति सुनिश्चित करने और आनन्द में वृद्धि करने के उद्देश्य से है।"[28]

- उन्नीस दिवसीय सहभोज जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम को जल्दबाज़ी में तैयार नहीं किया जा सकता। प्रार्थना और चिन्तन के माध्यम से, प्रत्येक व्यक्ति को अपने आप को आध्यात्मिक रूप से तैयार करना चाहिए, और इस कार्यक्रम के दौरान भी, हर किसी को पूरे मन लगाकर भाग लेना चाहिए, चाहे वे भक्तिपरक भाग में लेखों को पढ़ रहे हों या सिर्फ पाठ किये जा रहे अंशों को सुन रहे हों; चाहे वे रिपोर्ट दे रहे हों, मार्गदर्शन प्राप्त कर रहे हों, या सुझाव दे रहे हों; चाहे वे मेजबान के रूप में भाग ले रहे हों या केवल हर्ष एवं उल्लास के साथ उस मेजबान के आतिथ्य को स्वीकार कर रहे हों। उन्नीस दिवसीय सहभोज पर लिखे उसी प्रपत्र में, विश्व न्याय मन्दिर कहते है :

"उन्नीस दिवसीय सहभोज की तैयारी के मुख्य पक्ष हैं पवित्र लेखों से पाठों का उचित चुनाव कर उन्हें अच्छे पाठकों को देना और आध्यात्मिक कार्यक्रम की प्रस्तुति एवं ग्राह्यता, दोनों में शालीनता का भाव होना चाहिए। अन्दर या बाहर जहाँ भी उन्नीस दिवसीय सहभोज का आयोजन होना है उसके वातावरण पर ध्यान देने का भी काफी प्रभाव होता है। उन्नीस दिवसीय सहभोज सभा के आयोजन में स्वच्छता, स्थान की साज–सज्जा और व्यवहारिकता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समय की पाबंदी भी अच्छी तैयारी का एक माप है।

"सहभोज की सफलता काफी हद तक इसकी तैयारी और व्यक्तियों की प्रतिभागिता पर निर्भर करती है। प्रिय मास्टर निम्नलिखित सलाह देते हैं : 'तुम उन्नीस दिवसीय सहभोज के सम्मिलनों पर विशेष ध्यान दो ताकि इस अवसर पर ईश्वर के प्रिय और सर्वकृपालु की सेविकाएँ ईश्वर के लोक की ओर उन्मुख हो सकें, प्रार्थनाओं को गाएँ, ईश्वर की सहायता की याचना करें, एक दूसरे से आनन्द से मिलें और शुद्धता और पवित्रता से, आवेग और स्वार्थ से विरक्ति के साथ विकसित हों। इस प्रकार वे स्वयं को इस भौतिक संसार से अलग और चेतना के उत्साह में निमग्न रख सकेंगे।'"[29]

हमेशा की भाँति, आपको उपरोक्त विचारों को कई बार पढ़ना चाहिए और अपने समूह में उन पर चर्चा करनी चाहिए ताकि आप उन्हें अपने शब्दों में बताना सीख जायें। निम्नलिखित अभ्यास उन्नीस दिवसीय सहभोज के बारे में और अधिक अंर्तदृष्टि प्राप्त करने में आपकी सहायता करेंगे :

1. बहाउल्लाह हमें आश्वस्त करते हैं कि जिस किसी भी निवास–स्थान में हम ईश्वर की स्तुति और महिमा गाने के लिए एकत्र होते हैं उसमें क्या विशेषता होगी ? ____________________

____

2. ऊपर दिए गए दूसरे उद्धरण में, बहाउल्लाह हमें बताते हैं कि, जब हम बैठकों में एकसाथ सम्मिलित हों, तब हमें ____________________ बोलना चाहिए और ____________ का पाठ करना चाहिए; क्योंकि यह ईश्वर के शब्द ही हैं जो ____________ और ____________।"

3. ऊपर दिए गए तीसरे उद्धरण में, अब्दुल–बहा हमें सभाओं का आयोजन करने और दिव्य शिक्षाओं का पाठ और गान करने की सलाह देते हैं, ताकि

– वह देश जहां हम रहते हैं वह ______________________________

____

____।

– वह धरती जहां हम निवास करते हैं वह ______________________________

____

____।

4. बहाई कैलेन्डर में कितने महीने होते हैं ? ______________________________

5. प्रत्येक महीने में कितने दिन होते हैं ? ______________________________

6. बहाईयों के बीच महीने में एक बार कौन सी विशेष बैठक होती है ? ____________________

____

7. उन्नीस दिवसीय सहभोज के तीन भाग क्या–क्या हैं ? ______________________________

____

____

8. क्या उन्नीस दिवसीय सहभोज के विभिन्न भाग किसी भी क्रम में किए जा सकते हैं ? _____

9. सहभोज के भक्तिपरक भाग का क्या उद्देश्य है ? ______________________________

____

____

____

____

10. सहभोज के प्रशासनिक भाग का क्या उद्देश्य है ? ____________________

____

____

____

____

11. सहभोज के सामाजिक भाग का क्या उद्देश्य है ? ____________________

____

____

____

____

12. निम्नलिखित विषयों में से कौन–से विषयों पर सहभोज के प्रशासनिक भाग में चर्चा करना उचित होगा ?

_______ सामुदायिक पहलों की वित्तीय आवश्यकताएं

_______ राष्टींय फुटबाल टीम के स्कोर

_______ समुदाय के दो सदस्यों के बीच के मतभेद को कैसे दूर किया जाये

_______ समुदाय के बच्चों की बहाई कक्षाओं की प्रगति

_______ समुदाय के एक सदस्य द्वारा इस सप्ताह में पढ़े गये पवित्र लेखों से एक अनुच्छेद का अर्थ

_______ समुदाय में किशोर कार्यक्रम की जीवंतता

_______ नवयुवकों के लिए खुल रहे स्थानीय रोजगार के अवसर

_______ उन किशोर समूहों की जिनकी सेवा परियोजनाएं जटिल हो गई हैं, समुदाय क्या सहायता प्रदान कर सकता हैं

_______ प्रशिक्षण संस्थान द्वारा बढ़ावा दिए जाने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों में बच्चों और किशोरों के माता–पिता के यहां गृह भ्रमण

_______ समुदाय के भक्तिमय चरित्र को मजबूत करना

_______ टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की समयसारणी

_______ अध्ययनवृत्त कक्षाओं में आनंद और अनुशासन के माहौल को बढ़ावा देने के बारे में जो अंतर्दृष्टियां प्राप्त हुई हैं

_______आगामी पवित्र दिवस को मनाने के बारे में चर्चा

_______सामुदायिक–निर्माण प्रक्रिया से उत्पन्न सामाजिक क्रिया की पहल

13. अपने समूह में निम्नांकित प्रश्न पर चर्चा करेंः सहभोज के तीनों भागों में संतुलन होना क्यों इतना आवश्यक है ?

14. अब निम्नलिखित दों प्रश्नों पर चर्चा करें :

क. यदि आप सहभोज के मेज़बान होते तो इसकी तैयारी कैसे करते ?

ख. यदि आप सहभोज में सिर्फ भाग ले रहे होते तो आप इसकी तैयारी कैसे करते ?

भाग 13

दूसरा सवाल जो अक्सर प्रभुधर्म के बारे में वार्तालाप में उठता है वह यह है कि बहाई समुदाय अपनी वित्तीय जरूरतों को कैसे पूरा करता है। यहां कुछ बिंदु दिए गए हैं जो आपको इस तरह के प्रश्नों का जवाब देने में मदद कर सकते है :

- बहाई समुदाय अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जिस साधन का उपयोग करता है वह है बहाई कोष। यह विभिन्न स्तरों पर प्रभुधर्म की संस्थाओं द्वारा प्रशासित किया जाता हैः स्थानीय, राष्ट्रीय, महाद्वीपीय और अंतर्राष्ट्रीय। बहाईयों का मानना है कि अपने प्रभुधर्म को बढ़ावा देने के प्रयासों के खर्चों की जिम्मेदारी उन्हें खुद उठाना चाहिए, और इसलिए यह कोष सिर्फ समुदाय के सदस्यों से ही योगदान प्राप्त करता है।

- कोष में दान देना स्वैच्छिक कार्य है। यह इस अर्थ में गोपनीय होता है कि यह सिर्फ उस व्यक्ति और प्रभुधर्म की संस्थाओं के बीच का विषय है; दान देने वालो के नाम और दान की मात्रा की घोषणा नहीं की जाती। योगदान देने के लिए समुदाय के सदस्यों पर कोई दबाव नहीं डाला जाता है। संस्थाएं समुदाय से सामान्य निवेदन करती हैं, उन्हें कोष के महत्व के विषय में याद दिलाती हैं, और इसकी आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिलाती हैं। अकसर, एक समुदाय अपने लिए कोष में दान का लक्ष्य निर्धारित करता है लेकिन व्यक्तिगत अनुयायियों के लिए कभी भी यह राशि निश्चित नहीं की जाती, और न ही व्यक्तिगत रूप से उनसे पैसा मांगा जाता है। यह निर्णय प्रत्येक व्यक्तिय पर छोड़ दिया जाता है कि, संबंधित सिद्धांतों की उनकी अपनी समझ के अनुसार, वे कितना योगदान देंगे।

- हम जिस सभ्यता का निर्माण करने का प्रयास कर रहे हैं वह भौतिक और आध्यात्मिक दोनों रूपों से समृद्ध होगी। धन तब ही स्वीकार्य है जब कुछ शर्तें पूरी हों। हमें इसे ईमानदारी से किये गये काम द्वारा कमाना चाहिए। हमें इसे मानवजाति की भलाई के लिए खर्च करना चाहिए। और पूरे समुदाय का उत्थान होना चाहिए; यह स्वीकार्य नहीं है कि कुछ लोग तो अत्यधिक धनाढ्य हों जबकि अधिकांश लोग अपने जीवन की मूल आवश्यकताएं तक पूरी न कर पा रहे हों। बहाउल्लाह हमें बताते हैं :

"मनुष्यों में उत्तम वे हैं जो अपने व्यवसाय द्वारा जीविका अर्जित करते हैं और समस्त लोकों के स्वामी ईश्वर के प्रेम के निमित्त अपने और अपने परिजनों पर व्यय करते हैं।"[30]

"तुम मेरे उद्यान के वृक्ष हो। तुम्हारे लिए आवश्यक है कि उत्तम और अदभुत फल उत्पन्न करो, ताकि उनसे तुम स्वयं तथा अन्य लाभ पा सकें। इसलिए प्रत्येक के लिए यह आवश्यक है कि शिल्प तथा व्यवसायों में उद्यमशील रहे, क्योंकि इसी में धन–धान्यता का रहस्य है। हे समझ योग्य मनुष्य!"[31]

और अब्दुल–बहा स्पष्ट करते हैं :

"सम्पत्ति अत्यधिक प्रशंसनीय है, बशर्ते सभी जनों में उपलब्ध हो। फिर भी, यदि कुछ लोगों के पास अपार सम्पत्ति है और बाकी लोग निर्धन हैं, तो क्या वैसे धन से कोई सुफल या लाभ मिल सकता है, तब धन रखने वाले के लिये केवल एक दायित्व बन कर रह जाता है।"[32]

- अन्याय और आपदाओं से मुक्त समाज का निर्माण करने के लिए, हम सभी को उदार और दानी होना होगा। हमारे वित्तीय संसाधन भले ही कम हो, हमे फिर भी मानवजाति की प्रगति की ओर कुछ न कुछ योगदान करना चाहिए, क्योकि सच्ची समृद्धि कुछ देने के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है। उदारता मानव–आत्मा का एक गुण है; इसका हमारे भौतिक परिस्थितियों से कुछ लेना देना नहीं है। निगूढ़ वचन में बहाउल्लाह कहते हैं :

"दान देना तथा उदार रहना मेरे गुण है, कल्याण हो उसका जो स्वयं को मेरे गुणों से अलंकृत करता है।"[33]

- हमें याद रखना चाहिये कि जो भी संपदा हमारे पास है उसका वास्तविक स्रोत सर्वकृपालु ईश्वर है। वह हमें जीवन जीने के साधन प्रदान करता है; वह हमारी प्रगति संभव बनाता है। और जब हम कोष में दान देते हैं, तब हम उसने जो हमें दिया है उसका ही एक अंश खर्च कर रहे हैं। इसलिए, बहाईयों के लिए, कोष में दान देना सिर्फ उदारता का विषय नहीं है; यह एक आध्यात्मिक कृपा और एक महान व्यक्तिगत जिम्मेदारी भी है। धर्मसंरक्षक हमें सलाह देते हैं :

"हमें अवश्य ही उस फव्वारे या झरने के समान बनना चाहिए जो निरंतर अपने संपूर्ण स्वत्व को लुटाता रहता है और निरंतर किसी अदृश्य स्रोत से दुबारा भरा जाता है। अपने बंधुओं के लिए निरंतर देते रहना और गरीबी के भय से नहीं झिझकना उस समस्त संपत्ति और कल्याण के स्रोत पर निर्भर रहना–यही सच्चे ढंग से जीने का रहस्य है।"[34]

इस श्रृंखला में, भौतिक साधनों के विषय को संबोधित करता, बाद के पाठ्यक्रम में यहां दिए गए कुछ विचारों पर गहराई से विचार करने का आपको अवसर मिलेगा। अभी के लिए, हमेशा की तरह, आपको ऊपर की सामग्री में दिए गए प्रत्येक बिंदु पर एक–एक करके चर्चा करने और निम्नलिखित अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि आप स्वाभाविक रूप से और आसानी से विचारों को व्यक्त करना सीख सकें :

1. उद्धरणों के आधार पर, नीचे के वाक्यों में रिक्त स्थान भरें।

   क. बहाउल्लाह हमें बताते है कि हमें अपने व्यवसाय द्वारा ____________ करना चाहिए और ________________________ पर व्यय करते हैं।"

ख. हमें ____________ और ____________ फल उत्पन्न करना चाहिए, ताकि हम स्वयं तथा अन्य ____________।

ग. प्रत्येक के लिए यह आवश्यक है कि ______________ तथा ______________ में ____________ रहे, क्योंकि इसी में ____________ का ____________ है।

घ. "अब्दुल बहा हमें बताते हैं कि सम्पत्ति _____________ है, बशर्ते ____________ धनाढ्य हो।

ङ. यदि ____________ अपार सम्पत्ति है जबकि _________________________ हैं, और कोई ____________ या ____________ नहीं मिल सकता, तब ____________ के लिये केवल ____________ रह जाता है।

च. बहाउल्लाह कहते हैं, " _____________ तथा _____________ मेरे गुण है; कल्याण हो उसका जो स्वयं को मेरे ____________ से ____________ करता है।"

छ. और धर्मसंरक्षक हमें प्रोत्साहित करते है उस ____________ या ____________ के समान बनने के लिए जो निरंतर अपने ____________ को लुटाता रहता है और निरंतर ________________________।

ज. अपने _____________ के लिए निरंतर _____________ और _____________ से नहीं ____________ और उस ____________ और ____________ पर निर्भर रहना – यही सच्चे ढंग से जीने का रहस्य है।"

2. विचारों के उस क्रम को लिखें जिसका पालन उपरोक्त प्रस्तुति करती है :

भाग 14

बहुत सारे गतिविधियों भरे हुए एक गांव या मोहल्ले में जिस प्रकार का वार्तालाप हो सकता है उनके बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए, हमने विश्वविद्यालय की एक युवा छात्रा, एलेहांड्रा के प्रयासों को नजदीकी से देखा है। कई हफ्तों के दौरान किए गए भ्रमणों में, उसने श्री और श्रीमती सांचेज के साथ कई विषयों पर चर्चा की है, जो, वह उम्मीद करती है कि, प्रभुधर्म के बारे में उनके ज्ञान को गहन करने में मदद करेंगे और उनके द्वारा अपनाई गई शिक्षाओं के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को मजबूत करेंगे। अंत में, सांचेज की पोती, बीएट्रिस के आगमन ने हमें एक और प्रकार के वार्तालाप की जांच करने में सक्षम बनाया जो दो युवाओं के बीच है, और दोनों सीखने के लिए उत्सुक हैं कि वे अपने समुदायों की सेवा कैसे कर सकते हैं। इस विवरण में आगे बढ़ने और अभ्यासों को पूरा करते समय, हमने देखा है कि हम जिन वार्तालापों पर यहां विचार कर रहे हैं उनको बनाए रखने के लिए प्रासंगिक विषयों के बढ़ते ज्ञान के अलावा, कुछ आध्यात्मिक गुणों, अभिवृत्तियों और कौशलों का होना आवश्यक है।

इसमें और इस इकाई के अगले भाग में हम एक अलग प्रकार के विषयों का अन्वेषण करेंगे : अर्थात, वैसी चर्चाएं जो आम तौर पर संस्थान द्वारा बढावा दिए जा रहे शैक्षिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाले नवयुवाओं के परिवारों के भ्रमणों के दौरान की जाती हैं। जैसा कि पहले ही संकेत दिया गया है, बच्चों की कक्षाओं में पढाना और एक किशोर समूह को एक अनुप्रेरक के रूप में मार्गदर्शन करना ऐसी सेवा के कार्य हैं जो बाद के पाठ्यक्रमों में, क्रमशः पुस्तकों 3 और 5 में, संबोधित हैं। आप संबंधित दो कार्यक्रमों से परिचित हो सकते हैं या नहीं भी, जो इस बात पर निर्भर करता है कि आपने खुद छोटी उम्र में इनमें भाग लिया था या नहीं।

आइए, हम पहले उस सामग्री को देखें, जो अक्सर किशोरों के परिवारों के साथ चल रहे वार्तालाप का आधार बनती है। हम कल्पना करेंगे कि कुछ समय बीत चुका है जिस समय हमने अपनी कहानी को छोड़ा था और बीएट्रिस अब पुस्तक 2 का अध्ययन कर रही है। एलेहांड्रा अपने मित्र से पूछती है कि क्या वह उन कई किशोरों के परिवारों का गृह भ्रमण करने के लिए उसके साथ जाना चाहेगी, जिनके साथ वह एक समूह की स्थापना करने जा रहे हैं। वह उत्सुकता से स्वीकार करती है।

एलेहांड्रा बीएट्रिस से वर्णन करती है कि वह क्या कल्पना कर रही है। "हम प्रत्येक गृह भ्रमण," वह उसे सूचित करती है, "माता–पिता को उस कार्यक्रम के बारे में परिचय देकर शुरू करेंगे जिसमें उनके बेटे या बेटी ने जुड़ने में रुचि दिखाई है और यह भी उल्लेख करेंगे कि यह उनके मोहल्ले में आगे बढ़ रही सामुदायिक–निर्माण प्रक्रिया का हिस्सा है। हम फिर उनके साथ कार्यक्रम के मुख्य अवधारणाओं और विचारों में से कुछ पर आगे चर्चा करेंगे। यह गृह भ्रमणों की एक श्रृंखला में से पहली होगी, और हमारी आशा यह है कि, जैसे–जैसे वार्तालाप आगे बढ़ेगा, परिवार न केवल विभिन्न तरीकों से समूह का सक्रिय रूप से समर्थन करेगा बल्कि वे समुदाय में किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तीकरण के प्रवर्तक भी बनेंगे।"

एलेहांड्रा और बीएट्रिस कुछ बिंदुओं पर चर्चा करते हैं जिनको वे प्रत्येक परिवार के साथ चर्चा करने की योजना बनाते हैं। वे उन सभी विचारों को लिखने का निर्णय लेते हैं जिन्हें वे महत्वपूर्ण समझते हैं, यह जानते हुए कि वे पहले भ्रमण में केवल कुछ ही पर और बाद के वार्तालापों में बाकी को संबोधित करेंगे। यहां वे बिंदु हैं जो वे किशोरों की क्षमता के बारे में एक एक करके बताते हैं :

- एक व्यक्ति के जीवन में, 12 से 15 वर्ष की आयु के बीच के तीन वर्ष एक महत्वपूर्ण अवधि हैं – बचपन से परिपक्वता की ओर परिवर्तनकाल का एक चरण।

- हम अक्सर इस आयु के अंतर्गत आने वाले नवयुवकों को "किशोर" कहते हैं। वे अब बच्चे नहीं हैं, लेकिन अभी तक वे युवाओं की पूर्णता तक नहीं पहुंचे हैं।

- दुर्भाग्य से, किशोरों के बारे में, गलत लेकिन व्यापक रूप से प्रचारित छवि है कि वे आवेगपूर्ण, विद्रोही, आत्म–मगन और संकट की ओर प्रवृत्त होते हैं। लेकिन हम, उन्हें एक अलग दृष्टिकोण से देखते हैं। यह सच है कि, जीवन की इस छोटी अवधि के दौरान, हम सभी तेजी से शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक बदलाव का अनुभव करते हैं। और यह भी सच है कि, परिणामस्वरूप, हम कुछ विद्रोहपन दिखा सकते हैं। लेकिन, वास्तव में, यह अधिक क्षमता और विशेष संभावनाओं वाला उम्र है।

- हम भी कुछ समय पहले किशोर थे और हमें याद हैं कि हम इन परिवर्तनों से कैसे प्रभावित हुए थे। कभी हम साहसी होते थे तो कभी संकोचशील। कभी–कभी हम काफी मिलनसार थे और अन्य समय बहुत शर्मीले थे। हमने अक्सर अकेले छोड दिए जाने की इच्छा व्यक्त की, जबकि हम चाहते थे हमारी ओर ध्यान दिया जाए। हम यह जानना चहते थे कि हम किन चीजों में अच्छे थे और हमारे पास क्या प्रतिभा और योग्यताएँ हैं। और यह हमारे लिए बहुत मायने रखता था कि दूसरे लोग हमें किस तरह देखते थे और वे हमारे विचारों के बारे में क्या सोचते थे।

- यह समझना महत्वपूर्ण है कि इस तरह का व्यवहार केवल अस्थायी है। मनुष्य के जीवन में, इन वर्षों के दौरान मन–मस्तिस्क की कुछ शक्तियां तेजी से विकसित होती हैं। हम अस्तित्व के बुनियादी सवालों के जवाब तलाशने लगते हैं। हमारे आस–पास जो हो रहा है हम उसका विश्लेषण करते हैं और हमें जो कुछ भी सिखाया गया है उस पर सवाल उठाते हैं। और वयस्क हमें जो करने के लिए कहते हैं उसका आज्ञापालन करने के लिए जितने हम पहले स्वभाविक रूप से तैयार थे उतना अब नहीं थे, खासकर जब हम उनके शब्दों और कार्यों के बीच विरोधाभास देखते हैं।

- यदि नवयुवकों को उनकी उभरती शक्तियों को लाभदायक रूप से लागू करने में सहायता करनी है, तो उनके साथ ऐसा बरताव करने से बचना आवश्यक है जैसे की वे बच्चे हैं। अब्दुल–बहा इस अवधि का वर्णन इस तरह करते हैं :

  "कुछ समय पश्चात् वह युवावस्था में प्रवेश करता है जिसमें उसकी पुरानी अवस्थाओं एवं आवश्यकताओं का स्थान, नयी आवश्यकताएँ ग्रहण करने लगती हैं जो उसके विकसित स्तर के लिये उपयुक्त हैं। अवलोकन करने की उसकी क्षमताएं विस्तृत और गहन होने लगती हैं, उसकी बौद्धिक क्षमताएँ प्रशिक्षित एवं जागृत होती हैं, बचपन की सीमायें और वातावरण, उसकी ऊर्जा एवं उपलब्धियों पर अब अधिक प्रतिबन्ध नहीं लगा पाते।"[35]

- विश्व न्याय मंदिर, जो कि बहाई धर्म का प्रशासी निकाय है, ने किशोरों के साथ काम करने में हमारे द्वारा अपनाए गए तरीके के बारे में यह कहा है :

  "आज पूरी दुनिया में इस उम्र के बच्चों को आमतौर पर मुश्किलें और समस्या पैदा करने वाले, उग्र भौतिक एवं भावनात्मक परिवर्तन की वेदना में खोया हुआ, गैर जिम्मेदार और आत्मकेन्द्रित मानने का प्रचलन है, वहीं बहाई समुदाय किशोरों के लिये उपयोग की जा रही भाषा तथा उठाये जाने वाले कदमों से निश्चय ही विपरीत दिशा में जा रहा है। बहाई समुदाय किशोरों में सच्चाई, निष्ठा, न्यायप्रियता, ब्रहमाण्ड के विषय में बहुत कुछ सीखने की उत्सुकता ओर एक बेहतर दुनिया के निर्माण में सहयोग देने की उत्कट इच्छा पाता है।"[36]

इसके बाद एलेहांड्रा और बीएट्रिस अपना ध्यान आध्यात्मिक सशक्तीकरण कार्यक्रम की ओर केंद्रित करते हैं और इसकी कुछ विशेषताओं को पहचानने का प्रयास करते हैं :

- जो लोग 12 और 15 वर्ष की आयु के बीच के हैं वे उन मित्रों के समूह का भाग बनने के लिए तरसते हैं जिनके साथ वे अपने विचारों को साझा कर सकें, परियोजनाओं पर काम कर सकें, खेल खेल सकें, और इसी तरह अन्य कार्य कर सकें। इसी कारण से, इस कार्यक्रम का निर्माण एक "किशोर समूह" की अवधारणा के इर्दगिर्द किया गया है। प्रत्येक समूह को एक "अनुप्रेरक" द्वारा निर्देशित किया जाता है, जो अक्सर थोड़े बड़े आयु का एक युवा होता है, जो सदस्यों को एक सच्चे मित्र के रूप में उनकी क्षमता विकसित करने में सहायता करता है।

- समूह नियमित रूप से मिलते हैं। उनकी बैठकों में, किशोर बिना किसी निंदा अथवा उपहास के अवधारणाओं का अन्वेषण करना और विचारों को व्यक्त करना सीखते हैं। उन्हें सुनने, बोलने, चिंतन करने, विश्लेषण करने, निर्णय लेने और उन पर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

- हम एक ऐसे समय में जी रहे हैं जब बहुत सारी नकारात्मक शक्तियां किशोरों के सोचने और व्यवहार करने के तरीके को प्रभावित कर रही हैं। अनुप्रेरक इन शक्तियों का मुकाबला करने में उनकी मदद करते हैं – न केवल समाज के नैतिक पतन से खुद को बचाने के लिए, बल्कि दुनिया के उत्थान के लिए काम करने के लिए।

- यह कार्यक्रम मानव आत्मा में निहित शक्तियों को पोषित करने का प्रयास है। ऐसी शक्तियां जो प्रारंभिक किशोरावस्था के दौरान खुद को अधिक से अधिक मात्रा में प्रकट करना शुरू कर देती हैं। विचार और अभिव्यक्ति की शक्तियों का विशेष महत्व है। नवयुवकों को दुनिया के बारे में गहन विचारों को व्यक्त करने और वे जिस तरह का बदलाव देखना चाहते हैं उसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए आवश्यक भाषा को अवश्य ही विकसित करना चाहिए।

- किशोर ऐसे अवधारणाओं के अर्थ पर चिंतन करने के लिए उत्सुक होते हैं जो एक उद्देश्यपूर्ण जीवन के लिए आधारभूत हैं। खुशी, आशा, और उत्कृष्टता इसके कुछ उदाहरण हैं। अफसोस कि लोग इन विचारों के बारे में सतही रूप से बात करते हैं। ऐसी अवधारणाओं की गहरी समझ प्राप्त करना, यह पहचानते हुए कि वे रोजमर्रा के जीवन में कैसे अभिव्यक्त होते हैं, यह नवयुवकों के मन को एक मजबूत नैतिक ढाँचे के निर्माण करने और समाज की नकारात्मक शक्तियों का सामना करने में सहायता कर सकता है।

- बौद्धिक विकास के लिए अवधारणाओं को समझना आवश्यक है। किशोरों को कभी–कभी स्कूल में कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि अंतर्निहित अवधारणाओं को समझने के

लिए पर्याप्त सहायता प्राप्त किए बिना, विभिन्न विषयों पर बहुत सारी जानकारियों को सीखने की उनसे उम्मीद की जाती है। यह कार्यक्रम उन्हें नैतिक, गणितीय, वैज्ञानिक, और अन्य विचारों के बारे में गहराई से सोचने के लिए प्रेरित करता है और यह अवश्य ही स्कूल में उनके प्रदर्शन को बेहतर कर देता है।

- किशोरों में चीजों के बारे में समझने की बहुत अधिक इच्छा होती है। वे अपने आसपास जो हो रहा है उसके कारणों को समझना चाहते हैं। इसमें सफल होने के लिए, उन्हें न केवल अपनी शारीरिक आँखों से बल्कि आत्मा की नजर से भी देखनें में सक्षम होना होगा। इसलिए, इस कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है आध्यात्मिक बोध को बढ़ानाः आध्यात्मिक शक्तियों को पहचानने की और अलग अलग परिस्थितियों में आध्यात्मिक सिद्धांतों का पहचान करने की योग्यता।

- कार्यक्रम अपने विभिन्न उद्देश्यों को – नैतिकता के, आध्यात्मिक बोध के, और अभिव्यक्ति की शक्तियों के विकास को – पाठ्यपुस्तकों की एक श्रृंखला की सहायता से प्राप्त करता है। इन पाठ्यपुस्तकों में दुनिया के विभिन्न हिस्सों में नवयुवकों के जीवन के बारे में सरल कहानियां शामिल हैं। इन पाठ्यपुस्तकों के एक साथ अध्ययन करने, उनकी सामग्री पर चर्चा करने, और आवश्यक अभ्यास पूरा करने के अलावा, किशोर खेल में भी भाग लेते हैं और कला और शिल्प के बारे में भी सीखते हैं।

- अनुप्रेरकों की सहायता से, समूह कई सेवा परियोजनाओं का रूपरेखा भी बनाते हैं और उन्हें पूरा करते हैं, और यह इस कार्यक्रम का एक प्रमुख घटक है। इन परियोजनाओं के माध्यम से, किशोर समुदाय और उसकी जरूरतों के बारे में सोचना, परामर्श करना और आपस में एवं समुदाय में अन्य लोगों के साथ सहयोग करना सीखते हैं।

- पाठ्यपुस्तकों में विविध विषय दी गई हैंः प्रत्येक पाठ्यपुस्तक किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए आवश्यक विषय पर केंद्रित है। उदाहरण के लिए, पहली पाठ्यपुस्तक ”संपुष्टि” के विषय के बारे में है – कि महान लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमारे द्वारा किए प्रयासों कों ईश्वर संपुष्टि देता है। एक और पाठ्यपुस्तक ”आशा” के बारे में है – हमें कैसे कठिन से कठिन समय के दौरान भी भविष्य की ओर आशा के साथ देखना चाहिए। एक और ”उत्कृष्टता” की अवधारणा का विश्लेषण करती है। ”आनंद” एक कहानी का विषय है, जबकि ”शब्द की शक्ति” के बारे में चिंतन एक अन्य पाठ्पुस्तक का विषय है। गणितीय अवधारणाओं को संबोधित करने वाले पाठ्यपुस्तकों में, हम व्यवस्थित मन की आदतों की छानबीन करते हैं। विज्ञान के क्षेत्र में, एक पाठ्यपुस्तक है जो अपने शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य की देखभाल करने पर ध्यान केंद्रित करती है। और ऐसी एक दर्जन या उससे अधिक पाठ्यपुस्तकें हैं जिसका तीन साल के अंतराल में किशोर अध्ययन करते हैं।

एलेहांड्रा और बीएट्रिस अपने साथ कुछ पाठ्यपुस्तकों को ले जाने की योजना बनाते हैं, क्योंकि माता–पिता उनको देखना चाह सकते हैं। यदि आप पाठ्यपुस्तकों से अच्छी तरह परिचित नहीं हैं, तो आप जितना हो सके अधिक से अधिक कहानियों को पढ़ने के लिए कुछ समय लेना उपयोगी पायेंगे – इससे आप समुदाय में हो रहे विविध वार्तालापों को बेहतर ढंग से समझ पाने में सक्षम हो पाएंगे। इस बीच, आपको अपने अध्ययन समूह में अन्य प्रतिभागियों के साथ ऊपर दिए गए उन विचारों पर पूरी तरह से चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जिन्हे पुस्तक 5 में अधिक गहराई से दिया गया है। यदि उस पुस्तक का अध्ययन करने के बाद, आप एक किशोर समूह के अनुप्रेरक के रूप में कार्य करने का निर्णय लेते हैं, तो आप प्रणालीबद्ध तरीके से उसके सदस्यों के परिवारों के यहां

भ्रमण करेंगे और उनके साथ इन और इसी तरह के अनेक विचारों की छानबीन करेंगे। लेकिन इस समय भी, बीएट्रिस की तरह, आप अपने समुदाय के किशोरों के परिवारों के यहां कुछ भ्रमणों पर किसी अनुभवी व्यक्ति के साथ जाना चाह सकते हैं।

भाग 15

अगले दिन, एलेहांद्रा और बीएट्रिस उन तीन किशोरों के घर जाते हैं जो मोहल्ले में गठित होने वाले नए समूह में शामिल होंगे। जिस उत्साह के साथ माता–पिता आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम पर वार्तालाप में संलग्न होते हैं उसे देखकर बीएट्रिस खुश है। दोपहर के अंत तक, उसने दृढ निश्चय कर लिया है कि वह किशोर समूह के लिए एलेहांद्रा की मदद करना चाहती है और खुद भी एक नए समूह के अनुप्रेरक के रूप में सेवा करना सीखना चाहती है, शायद इस वर्ष के दौरान ही। निश्चय ही, उसे इस बात का एहसास है कि इस बीच उसे संस्थान की कुछ पुस्तकों का अध्ययन भी पूरा करना हैं। लेकिन वह अपने अध्ययन में उसी सतत गति से आगे बढ़ने का संकल्प लेती है जिसने उसे यहां तक पहुचने में मदद की है।

और ऐसा ही होता है, एलेहांद्रा से निरंतर सहायता और प्रोत्साहन प्राप्त कर, बीएट्रिस सेवा के पथ पर आगे बढ़ती है। आइए अब हम उसकी कहानी में और आगे बढते हैं, जब कुछ महीनों बाद, वह पुस्तक 3 को खत्म करने ही वाली है। ग्रेड 1 के लिए एक नवगठित कक्षा में बच्चों के माता–पिता से मिलने जाने के लिए, उसके अध्ययन समूह के सहशिक्षक ने बच्चों की कक्षा की एक शिक्षिका मारिबेल से कहा है कि वह बीएट्रिस और उसके साथी प्रतिभागियों को बारी बारी से अपने साथ चलने को आमंत्रित करे। बीएट्रिस को लगता है कि उसने पुस्तक 3 के अपने अध्ययन से बहुत कुछ सीखा है। और उसने एलेहांद्रा से सीखा है, जिसने कई बार इसका उल्लेख किया है, कि इस पुस्तक से उसने जो अंतर्दृष्टियां प्राप्त की हैं वह अनुप्रेरक के रूप में सेवा देने की उसकी क्षमता को बढ़ाएंगी।

जब वे एक साथ मिलते हैं, तब मारिबेल बीएट्रिस से कहती है कि वे एमा की माता से मिलने जाएंगे। "वह बहुत ही खुश मिजाज नन्ही लड़की है जिसे सीखना पसंद है," मारिबेल साझा करती है। "मैं पहले ही एक बार उसके माता–पिता से मिल चुका हूँ और उन्हें बच्चों की बहाई कक्षा की प्रकृति के बारे में बता चुका हूँ। उन्होंने एमा को कक्षा में भाग लेने की अनुमति भी दी। उसकी माँ ने कक्षा के बारे में और अधिक सुनने में रुचि व्यक्त की थी, और मैंने उनके घर पर फिर से आने का और जिन सामग्रियों को हम पढाते हैं उनके अन्तर्निहित शैक्षिक विचारों के बारे में थोड़ी बात करने का वादा किया था। मैंने वास्तव में अपने लिए कुछ बिंदु लिखे हैं। अगर तुम चाहो, तो हम उन्हें एक साथ देख सकते हैं और उनके बारे में बात कर सकते हैं।" बीएट्रिस सहमत होती है। यहां वे बिंदु हैं जिनकी वे चर्चा करते हैं :

- सबसे पहले, मैं श्रीमती मार्टिनेज को बताऊंगी कि कक्षा में एमा के आने से मैं कितनी खुश हूँ और उसके कुछ अद्भुत गुणों का उल्लेख करूँगी।

- बहाउल्लाह के पवित्र लेखों से इस उद्धरण को उनके साथ पढ़कर चर्चा शुरू करना सर्वोत्तम लगता है :

"मनुष्यों को बहुमूल्य रत्नों से भरी एक खान के समान समझो। केवल शिक्षा ही इसके कोषों को उजागर कर सकती है और मानवता को इसके लाभ उठाने के योग्य बना सकती है।"[37]

- फिर मैं इस बारे में कुछ विचार साझा कर सकती हूँ कि इस कथन ने एक शिक्षक के रूप में मुझे कितना प्रभावित किया है। मेरा हृदय आनंद से भर उठता है, मैं कहूंगी, जब भी मैं कक्षा में बच्चों को देखती हूं और उन्हें अनमोल रत्नों से भरी खानों के रूप में सोचती हूं। उनमें से हर एक में दैवीय गुणों को प्रदर्शित करने की क्षमता है। उनमें से हर एक में प्रतिभाएं हैं जिन्हें खोजा और विकसित किया जा सकता है। उनमें से हर एक समाज का एक मूल्यवान सदस्य बन सकता है और दुनिया की बेहतरी में योगदान दे सकता है।

- फिर, मुझे शायद उन रत्नों के कुछ उदाहरण देने चाहिए जिन्हें प्रत्येक बच्चे में प्रकट करने का प्रयास शिक्षा को करना चाहिए। मैं मन की कुछ शक्तियों का उल्लेख कर सकती हूं, उदाहरण के लिए, प्रकृति के नियमों की खोज करने की, कला की सुंदर कृति बनाने की, और कुलीन विचारों को व्यक्त करने की। मैं समझाऊंगी कि, बच्चे इन सभी शक्तियों को विकसित करना शुरू कर सकते हैं, जब उन्हें एक उचित शिक्षा प्राप्त होती है। लेकिन, ऐसा होने के लिए, उन्हें कम उम्र में ही कुछ गुणों को अर्जित करना होगा। उदाहरण के लिए, उन्हें ध्यान देना, आवश्यक होने पर कड़ी मेहनत करना, और जो वे कर रहे हैं उस पर ध्यान केंद्रित करना सीखना होगा। उन्हें ऐसे व्यक्तियों के जैसा बनना होगा जो दूसरों की भलाई के बारे में चिंतित हैं और जो समुदाय की सेवा करना चाहते हैं। यही कारण है कि कम उम्र में ही उनके चरित्र के विकास के बारे में ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

- तब, यह एक अच्छा समय होगा, कि हम श्रीमती मार्टिनेज से पूछें कि उनकी बेटी किस प्रकार की व्यक्ति बने, इसके बारे में उनके कुछ विचार क्या हैं। उनके विचार में वे कुछ चरित्र लक्षण क्या हैं जिन्हें एमा में होना महत्वपूर्ण हैं ?

- जिन गुणों का वह उल्लेख करती है, उनमें से कुछ, निश्चित रूप से, आध्यात्मिक गुणों की श्रेणी में आएंगे, जो कि अगला विषय है जिसे मैं प्रस्तुत करूंगी। कुछ गुण ऐसे हैं जो व्यक्ति के पास होने चाहिए, जिन्हें मैं कहूंगी, कि वे मानव अस्तित्व के लिए आधारभूत हैं। वे मनुष्य की आत्मा से संबंधित हैं। जैसे–जैसे हम अपने हृदय का दर्पण चमकाते हैं, हम उन्हें विकसित करते हैं ताकि यह ईश्वर के गुणों को प्रतिबिंबित कर सके। इनको हम आध्यात्मिक गुणों के रूप में संदर्भित करते हैं, और ग्रेड 1 के लिए हम अपनी कक्षाओं में जो पाठ पढ़ाते हैं, वे ज्यादातर इन गुणों पर केंद्रित होते हैं।

- मुझे लगता है कि मैं तुरंत बाद पुस्तक 3 के ग्रेड 1 के पाठों में संबोधित किए गए कुछ आध्यात्मिक गुणों के बारे में बताऊँगी और उनसे संबंधित उद्धरण उनके साथ साझा करूंगी। मैं समझाऊंगी कि एमा इन उद्धरणों को कंठस्थ करेगी और वह अपनी बेटी से उन उद्धरणों और प्रार्थनाओं को, जिन्हें वह सीखेगी, सुनाने को कह सकती हैं :

  – प्रेम :

    "हे मित्र ! अपनी हृदय–वाटिका में प्रेम के गुलाब के सिवा अन्य कुछ भी न उपजा ..."[38]

  – न्याय :

    "न्यायपथ का अनुसरण करो, क्योंकि यही सीधा मार्ग है।"[39]

– सत्यवादिता :

"सत्यवादिता सभी मानवीय गुणों का आधार है।"[40]

– आनंद :

"हे मनुष्य के पुत्र ! अपने हृदय की प्रफुल्लता पर आनंद मना, ताकि तुम मुझसे मिलन तथा मेरे सौन्दर्य को प्रतिबिम्बित करने के योग्य बन सको।"[41]

मारिबेल और बीएट्रिस निर्णय लेते हैं कि उपरोक्त विचार एक भ्रमण के लिए पर्याप्त हैं। आप जल्द ही स्वयं पुस्तक 3 के अध्ययन के लिए आगे बढ़ेंगे और बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा के लिए रूही संस्थान के छह साल के कार्यक्रम को आकार देने वाले कुछ सिद्धांतों पर चिंतन करने का अवसर मिलेगा। यदि, उससे पहले, आपको बच्चों की कक्षा के शिक्षक के साथ कुछ माता–पिताओं से मिलने का अवसर मिलता है, तो यहां दिए गए विचार मददगार साबित होंगे, और आपको अपने अध्ययन समूह में अब एक–एक कर प्रत्येक बिंदु पर चर्चा करनी चाहिए।

भाग 16

कुछ समय पहले हमने अब्दुल बहा के निम्नलिखित शब्दों को पढ़ा था : "मानव की सर्वोच्च आवश्यकता सहयोग और विचारों का परस्पर आदान–प्रदान है। मनुष्यों के मध्य सहभागिता और एकता का बंधन जितना शक्तिशाली होगा, सभी मानवीय क्रियाकलापों में रचनात्मकता और उपलब्धि उतनी ही अधिक होगी।" विश्व न्याय मंदिर हमें बताते हैं कि जब हम गृह भ्रमण करते हैं और जब दूसरों को अपने घर आमंत्रित करते हैं, हम "आध्यात्मिक सम्बन्ध के बंधनों को मजबूत करते हैं जो समुदाय के बोध को पोषित करता है।" तो फिर, हमें अपने बढ़ते समुदाय की संस्कृति पर इस चलन के प्रभाव को कम नहीं समझना चाहिए।

पिछले भागों में हमने कई अलग–अलग प्रकार के वार्तालापों को देखा है जो हम एक–दूसरे के घरों में भ्रमण के दौरान कर सकते हैं। हम सभी, जैसे–जैसे हम सेवा के पथ पर चलते हैं, अपने व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में बहाउल्लाह की शिक्षाओं के अनुप्रयोग के बारे में अपने गाँव, शहर या पड़ोस में एक विस्तृत वार्तालाप में भाग लेंगे। कभी–कभी यह इन शिक्षाओं के बारे में अपने ज्ञान को गहरा करने के लिए बढ़ती संख्या में लोगों को सक्षम करने के लिए आयोजित औपचारिक गृह भ्रमणों की एक श्रृंखला के रूप में आगे बढेगा। कई अन्य अवसरों पर, प्रशिक्षण संस्थान के शैक्षिक कार्यक्रम, उनके उद्देश्य और सामग्री, चर्चा कें विषय होंगे। सामुदायिक–निर्माण प्रक्रिया में संलग्न होने के लिए निमंत्रण को अधिक से अधिक पड़ोसियों और मित्रों तक बढ़ाया जाएगा। तो फिर, जब आप भविष्य और आपके आगे खुले सेवा के पथ की ओर देखते हैं, आपको इस इकाई में प्रस्तुत सामग्री को अच्छी तरह से सीखने का हर संभव प्रयास करना चाहिए, प्रत्येक विषय पर वार्तालाप का अनुभव प्राप्त करना चाहिए, और, निश्चित रूप से, बहाउल्लाह की शिक्षाओं के अपने ज्ञान को गहरा करना जारी रखना चाहिए। इस प्रकार ईश्वर के शब्द को दूसरों के साथ साझा करने का कभी न खत्म होने वाला आनंद आपका होगा।

REFERENCES

1. Bahá’u’lláh, *The Hidden Words* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 2003, 2012 printing), Arabic no. 4, p. 4.

2. Bahá’u’lláh, in *Bahá’í Prayers*: *A Selection of Prayers Revealed by Bahá’u’lláh, the Báb, and ‘Abdu’l-Bahá* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 2002, 2017 printing), p. 4.

3. *Gleanings from the Writings of Bahá’u’lláh* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 1983, 2017 printing), IV, par. 1, p. 5.

4. Ibid., V, par. 2, pp. 6–7.

5. ‘Abdu’l-Bahá, in *Bahá’í Prayers*, p. 81.

6. Ibid., p. 111.

7. Ibid.

8. From a talk given on 16 August 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace: Talks Delivered by ‘Abdu’l-Bahá during His Visit to the United States and Canada in 1912* (Wilmette: Bahá’í Publishing, 2012), par. 23, p. 364.

9. ‘Abdu’l-Bahá, in *Bahá’í Prayers*, p. 130.

10. *Gleanings from the Writings of Bahá’u’lláh*, XLV, par. 1, pp. 111–12.

11. ‘Abdu’l-Bahá, cited by Shoghi Effendi, *The World Order of Bahá’u’lláh: Selected Letters* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 1991, 2012 printing), p. 139.

12. *Gleanings from the Writings of Bahá’u’lláh*, V, par. 5, p. 8.

13. From a talk given by ‘Abdu’l-Bahá on 5 May 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace*, par. 4, p. 128.

14. From a talk given on 21 October 1911, published in *Paris Talks: Addresses Given by ‘Abdu’l-Bahá in 1911* (Wilmette: Bahá’í Publishing, 2006, 2016 printing), no. 6.7–8, p. 22.

15. *Gleanings from the Writings of Bahá’u’lláh*, CXLVI, par. 1, p. 357.

16. From a talk given by ‘Abdu’l-Bahá on 5 May 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace*, par. 4, p. 128.

17. *The Hidden Words*, Persian no. 44, p. 37.

18. Ibid., Persian no. 66, p. 45.

19. From a Tablet of ‘Abdu’l-Bahá. (authorized translation)

20. From a talk given by ‘Abdu’l-Bahá on 25 September 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace*, par. 2, pp. 478–79.

21. *Selections from the Writings of ‘Abdu’l-Bahá* (Wilmette: Bahá’í Publishing, 2010, 2015 printing), no. 43.1, p. 125.

22. Ibid., no. 207.3, p. 360.

23. Bahá’u’lláh, in *Bahá’í Meetings: Extracts from the Writings of Bahá’u’lláh, ‘Abdu’l-Bahá, and Shoghi Effendi*, compiled by the Research Department of the Universal House of Justice (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 1976, 1980 printing), p. 3.

24. Ibid.

25. *Tablets of Abdul-Baha Abbas* (New York: Bahá’í Publishing Committee, 1916, 1930 printing), vol. 3, p. 631. (authorized translation)

26. Bahá’u’lláh, in *The Kitáb-i-Aqdas: The Most Holy Book* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 1993, 2013 printing), par. 57, p. 41.

27. *Selections from the Writings of ‘Abdu’l-Bahá*, no. 48.1, p. 130.

28. From a letter dated 27 August 1989, published in *Messages from the Universal House of Justice, 1986–2001: The Fourth Epoch of the Formative Age* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 2010), no. 69.2, pp. 132–33.

29. Ibid., no. 69.9–10, p. 135.

30. *The Hidden Words*, Persian no. 82, p. 51.

31. Ibid., Persian no. 80, p. 51.

32. ‘Abdu’l-Bahá, *The Secret of Divine Civilization* (Wilmette: Bahá’í Publishing, 2007, 2016 printing), par. 46, p. 33.

33. *The Hidden Words*, Persian no. 49, p. 39.

34. Shoghi Effendi, cited in *Bahá’í News*, no. 13 (September 1926), p. 1.

35. From a talk given by ‘Abdu’l-Bahá on 17 November 1912, published in *The Promulgation of Universal Peace*, par. 3, p. 617.

36. From a message dated 21 April 2010, published in *Framework for Action: Selected Messages of the Universal House of Justice and Supplementary Material, 2006–2016* (West Palm Beach: Palabra Publications, 2017), no. 14.16, p. 82.

37. *Gleanings from the Writings of Bahá’u’lláh*, CXXII, par. 1, p. 294.

38. *The Hidden Words*, Persian no. 3, p. 23.

39. *Gleanings from the Writings of Bahá’u’lláh*, CXVIII, par. 1, p. 283.

40. ‘Abdu’l-Bahá, cited by Shoghi Effendi, *The Advent of Divine Justice* (Wilmette: Bahá’í Publishing Trust, 2006, 2018 printing), par. 40, p. 39.

41. *The Hidden Words*, Arabic no. 36, p. 12.